इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

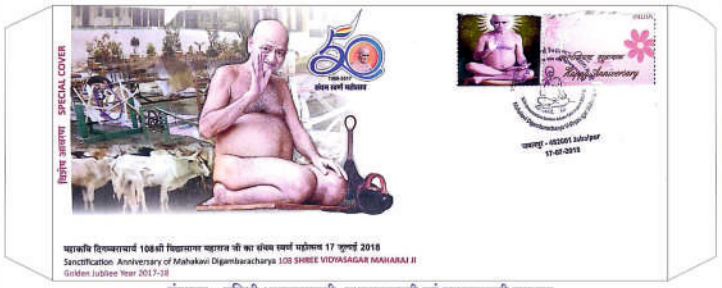

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अप्रैल 2023	
16	रविवार	एकादशी	शतभिषा
17	सोमवार	द्वादशी	पूर्वाभाद्रपद
18	मंगलवार	त्रयोदशी	उत्तराभाद्रपद
19	बुधवार	चतुर्दशी	रेवती
20	गुरुवार	अमावस	अश्विनी
21	शुक्रवार	प्रतिपदा/द्वितीया	भरणी
22	शनिवार	तृतीया	कृत्तिका
23	रविवार	चतुर्थी	रोहिणी
24	सोमवार	पंचमी	मृगशिरा
25	मंगलवार	पंचमी	आर्द्रा
26	बुधवार	षष्ठी	पुनर्वसु दि./रा.
27	गुरुवार	सप्तमी	पुनर्वसु
28	शुक्रवार	अष्टमी	पुष्य
29	शनिवार	नवमी	आश्लेषा
30	रविवार	दशमी	मघा
		मई 2023	
1	सोमवार	एकादशी	पूर्वाफाल्गुनी
2	मंगलवार	द्वादशी	उत्तराफाल्गुनी
3	बुधवार	त्रयोदशी	हस्त
4	गुरुवार	चतुर्दशी	चित्रा
5	शुक्रवार	पूर्णिमा	स्वाती
6	शनिवार	प्रतिपदा	विशाखा
7	रविवार	द्वितीया	अनुराधा
8	सोमवार	तृतीया	ज्येष्ठा
9	मंगलवार	चतुर्थी	मूल
10	बुधवार	पंचमी	पूर्वाषाढ़
11	गुरुवार	षष्ठी	उत्तराषाढ़
12	शुक्रवार	सप्तमी-अष्टमी	श्रवण
13	शनिवार	नवमी	धनिष्ठा
14	रविवार	दशमी	शतभिषा
15	सोमवार	एकादशी	पूर्वाभाद्रपद

तीर्थंकर कल्याणक

18 अप्रैल: भगवान धर्मनाथ जी गर्भ कल्याणक
19 अप्रैल: भगवान नमिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
21 अप्रैल: भगवान कुंथुनाथ जन्म-तप-मोक्ष कल्याणक
26 अप्रैल: भगवान अभिनंदन जी गर्भ-मोक्ष कल्याणक
29 अप्रैल: भगवान सुमतिनाथ जी तप कल्याणक
30 अप्रैल: भगवान महावीरस्वामी जी ज्ञान कल्याणक
11 मई: भगवान श्रेयान्नाथ जी गर्भ कल्याणक
14 मई: भगवान विमलनाथ जी गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

22 अप्रैल: अक्षय तृतीया (दान दिवस)
23 अप्रैल: रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

18 अप्रैल: 06/04 बजे से 25/01 बजे तक ।
20 अप्रैल: 06/03 बजे से 21/11 बजे तक ।
22 अप्रैल: 23/24 बजे से 30/00 बजे तक ।
24 अप्रैल: 05/59 बजे से 23/07 बजे तक ।
27 अप्रैल: 05/57 बजे से 29/57 बजे तक ।
03 मई: 05/53 बजे से 20/56 बजे तक ।
12 मई: 05/48 बजे से 13/03 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: अप्रैल-26,27 मई-3,8
मशीनरी प्रारंभ : अप्रैल-26,27 मई-3,8
वाहन खरीदने: अप्रैल-26,27,28 मई-3,5,12
संपत्ति क्रय: अप्रैल-28
नवीन वस्त्राभूषण: अप्रैल-20,26,27 मई-3,5,11
मुण्डन:अप्रैल-15,16,19,24,26 मई-3,7,8,12,13,14

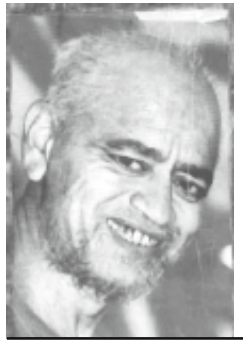

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 288 • अप्रैल 2023

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- ज्वलंत समस्याओं में कारागर-महावी की (Key) 08
- मैं अकेला 11
- आठा शंकाओं का समाधान 14
- जैन संस्कृति की सप्त तत्व और षट्द्रव्य व्यवस्था पर प्रकाश 19
- एक युग थे परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी 29
- सुदेश विचार 33
- भगवान को जानने का प्रयास सर्वश्रेष्ठ है 50
- पत्र और पत्रकार समाज को उज्जवल बनाते हैं आचार्य श्री प्रज्ञासागर 51
- सत्यं ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात् 53
- विस्मृत इतिहास का उद्घाटन 54
- **वरिष्ठ नागरिक:** हमेशा खुश कैसे रहे 57
- अपने लिवर (यकृत) को जाने व बीमारियों से बचने के उपाय 59

बाल कहानी

- माक्स या लिपिस्टिक 62

कविता

- सदा मोह हारा 12
- नयन तरसते हैं 18
- स्वाबलम्बन के प्रशंसक 52
- हाईकू 55
- कुंथुनाथ स्तुती भुजंगप्रयास छन्द 56
- अपनी ही हो ये विश्व धरा 58

कहानी

- दिगम्बरत्व का वैभव 43

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
चलो देखें यात्रा : 32 • आगम दर्शन :33• माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35
• कैरियर गाइड : 36 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये: 41 •दिशा बोध : 42
हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✻ आंतरिक सज्जा ✻
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, बीते कुछ दिनों में कुछ ऐसी घटनायें हुई जिन्होंने हमारे विश्वास की नींव को हिला दिया जहाँ तक विश्वास की बात है तो अदाणी पर सरकारों ने भरोसा किया परन्तु हम विश्वास नहीं करते जिस गौतम अदाणी पर विपक्ष ने अविश्वास किया परन्तु हम अविश्वास नहीं करते हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और एल आई सी का कर्जा अदाणी पर वेइंतहा चढ़ा। उनका रिस्ता चंद शेयरों के सिवाय अन्य किसी से नहीं है। यह सब सत्ता का खेल है। चाहे कुर्सी पर कोई भी बैठा हो खेल तो ऐसा ही चलता रहेगा। मात्र शकलें बदलती हैं कार्य प्रणाली नहीं। कार्य पद्धति तो सबकी एक सी ही रहती है। जब तक मतदाता में समझदारी नहीं आयेगी तब तक सांसद और विधायकों में जिम्मेदारी का बोझ नहीं आने वाला है। और वे मत और मतदाता का मूल्य नहीं समझेंगे।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संसार की समस्त न्याय प्रक्रियाओं से सिद्ध हो रहा है कि सामाजिक बुराईयों को कानून से समाप्त नहीं किया जा सकता है। सामाजिक बुराईयों के कारण अलग अलग होते हैं। जैसे कि हम पाते हैं कि एक राज्य ने शराब वंदी लागू तो की पर उस दिशा में सामाजिक चेतना जागरण का समुचित प्रयास नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप जहरीली शराब पी कर कई मौतें हुई। असम प्रदेश में 2700 लोगों को बाल विवाह के आरोप में गिरफ्तार किया गया। बाल विवाह, शराब व्यसन को कानून कुछ हद तक ही हतोत्साहित कर सकता है लेकिन जब तक हजारों सालों की सामूहिक सोच को नहीं बदला जायेगा तब तक नई समझ पैदा नहीं होगी अतः सोच और समझ को बदले बिना कुरीतियों को बदलने कानून और दंड प्रक्रिया पर्याप्त नहीं होगी।

श्रीमती करूणा जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, सचमुच में युवा पीढ़ी को सम्हालना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। मोबाईल गेम इस पीढ़ी को भटकाने में अहं भूमिका निभा रहा है। हुक्का लाउंज पब संस्कृति ने युवा समूह को भटकाने के लिये कमर कस ली है। हुक्का पीना हर प्रकार से स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। कैंसर टीवी जैसी घातक बीमारियाँ युवा वर्ग को घेर लेती हैं। विद्वान लेखक विजय कुमार पत्रकार राघौगढ़ ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से हुक्का लाउंज पब संस्कृति भटकती युवा पीढ़ी शीर्षक से लेख लिखकर समाज को सही दिशा देने का प्रयास किया है संस्कार सागर एक स्थापित पत्रिका है जिसने प्रस्तुत लेख को प्रकाशित करके अपना महत्व पूर्ण कर्तव्य समाज सुधार की दिशा में निभाया है एतदर्थ सभी साधुवाद के पात्र हैं।

कमलेश जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, वरिष्ठ विश्व ख्याति पत्रकार वेद प्रताप वैदिक के आलेख जैजाक भुक्ति के अधिपति यशोवर्मन का वैशिष्ट्य संस्कार सागर मार्च के अंक में प्रकाशित लेख को पढ़कर हृदय गर्व से भर गया यशोवर्मन की यशोगाथा पढ़कर जैन संस्कृति के गौरवमयी पृष्ठ पलटने का अवसर संस्कार सागर ने दिया। संस्कार सागर ने 24 वर्ष में कीर्तिमान स्थापित किया है। आज तक संस्कार सागर ने अनेक गौरवमयी तथ्यों को अपने पाठकों के समक्ष परोसा है अविरल बहने वाली संस्कार सागर की धारा ने समग्र संस्कार की दिशाओं का आत्मसात किया है। हर वर्ग को मार्गदर्शन देने का सफल प्रयास कर समाज के लिये पत्रिका की उपयोगिता एवं पठनीयता सिद्ध कर दी।

रजनी जैन, दिल्ली

भक्ति तरंग

निजातम अनुभव उजास

जिनवर-आनन-भान निहारत, भ्रमतमघनहि नसाया है ।।टेक।।
वचन-किरन-प्रसरनतै भविजन, मनसरोज सरसाया है ।
भवदुखकारन सुखविसतारन, कुपथ सुपथ दरसाया है ।।1।।
विनसाई कज जलसरसाई, निशिचर समर दुराया है ।
तस्कर प्रबल कषाय प्रलाये, जिन धनबोध चुराया है ।।2।।
लखियत उदु न कुभाव कहूं अब, मोह उलूक लजाया है ।
हंस कोक को शोक नश्यो निज, परनतिचकवी पाया है ।।3।।
कर्मबंध-कजकोप बंधे चिर, भवि-अलि मुंचन पाया है ।
दौल उजास निजातम अनुभव, उर जग अन्तर छाया है ।।4।।

श्री जिनेन्द्र के मुखरूपी सूर्य के दर्शन से भ्रमरूपी अंधकार के बादल विघट जाते हैं , बिखर जाते हैं अर्थात अज्ञान दूर हो जाता है।

उनका दिव्यध्वनिरूपी किरण के प्रसार से भव्यजनों के मनरूपी कमल खिल उठते हैं । उस दिव्यध्वनि में कुपथ जो भव-दुःख का कारण है और सुपथ-जो सुख का विस्तार करने वाला है, दोनों का अन्तर स्पष्ट दिखाई देने लगता है अर्थात दोनों का अन्तर स्पष्ट दर्षाया /बताया है।

अज्ञानरूपी काई ज्ञानरूपी जल से नष्ट हो जाती है, वातावरण में सर्वत्र सरसाई-नमी-ठंडक आ जाती है। जैसे रात्री को जागृत रहने वाले उल्लू उजाला होने पर प्रतिरोध छोड़कर भाग जाते हैं वैसे ही जिनेन्द्ररूपी सूर्य के दर्शन से वे कषायरूपी तस्कर-लुटेरे भाग जाते हैं जिन्होंने ज्ञानरूपी धन को चुराया है।

ज्ञानरूपी सूर्योदय होने पर न तारेरूपी क्षुद्र भाव दिखाई देते हैं, न खोटे भाव जागृत होते हैं और मोहरूपी उल्लू लज्जित हो जाता है। सूर्य का प्रकाश होने पर जैसे चकवे का विरहरूपी शोक नष्ट हो जाता है और चकवी से उसकी भेंट हो जाती है उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश होते ही आत्मारूपी हंस का शोक-विरह नष्ट हो जाता है और वह अपनी स्वभाव-परिणतिरूप चकवी को प्राप्त कर लेता है।

सूर्य का उजास होने पर कमल पुष्प के खिल जाने से जैसे कमल-पुष्प बंद हुआ भ्रमर मुक्त हो जाता है उसी प्रकार जिनेन्द्र रूपी सूर्य के दर्शन के उजास से भव्यात्मा कर्मबंध से मुक्त हो जाता है। दौलतराम कहते हैं कि आत्मानुभव के उजास से अपना व जगत का, निज और पर का अंतर अनुभव में आता हैं।

संस्कार प्रवाह

कंधोरा कचौठा और जैन मूर्ति

जैन धर्म अपरिग्रह के आधार पर साधना पथ सुनिश्चित करता है । अहिंसापथ के अनुगामी श्रमण और श्रावक अपनी समग्र साधना को दयामयी बनाने का प्रयास करता है। आचार में अहिंसा विचार में अनेकांत और जीवन शैली में अपरिग्रह वृत्ति को साकार करने वाला सच्चा श्रमण होता है।

श्रमण परम्परा में नग्नत्व का जितना महत्व है उससे अधिक वैदिक परम्परा में भी नग्नत्व का स्वरूप प्राप्त होता है।

पूर्व काल में जैन मूर्तियाँ नग्न ही बनती थी क्योंकि वस्त्र पास रखना हिंसा और लज्जा को समनवीत करना है।

दिगम्बरत्व श्रेष्ठ संयम साधना का मार्ग है। उस क्रांति के काल में मूर्तियों में वस्त्र के निशान बनाना अपने श्वेताम्बरों के पोषण के सिवा और कुछ भी नहीं है जिस तरह फोड़े और सूजन को शरीर का अंग नहीं माना जा सकता है उसी तरह भगवान के स्वरूप में कंधोरा कचौठा सहित पूजा करना कुल गुरुओं के दुराग्रह का ही परिणाम है।

वस्त्र रहित साधना करने से अपरिग्रह का पोषण होता है। आदिनाथ एवं महावीर को सवस्त्र रूप में सिद्ध करने वाले श्वेतांबर विद्वान कहते हैं कि 22 तीर्थंकर निर्वस्त्र साधना करते थे।

इस मान्यता के विरूद्ध यह आता है कि जब 22 तीर्थंकर निर्वस्त्र होकर साधना करते थे तो 2 तीर्थंकर सवस्त्र कैसे हो सकते हैं।

आगम से अंजान कुछ साधु मूर्ति में कंधोरा कचौठा को ही सब कुछ सिद्ध करने में ही अपनी ताकत लगाते हैं। जब कि मूर्ति में कंधोरा कचौठा बनाने की प्रथा बाद की है। कंधोरा काचौठा का पूज्य मानना अपरिग्रहवाद से मुकरने के सिवा और कुछ नहीं है।

वीतराग प्रभू की भावना करने वाले लोग कंधोरे कचौठे में कैसे लिपट गये। यह समझ नहीं आता है। श्वेतांबर मूर्ति पूजक विद्वान पं. बैचरदास जी ने जैन साहित्य में विकार नामक पुस्तक लिखकर जैन मूर्ति में आई हुई विकारता को नकारा है। वे लिखते हैं कि -देशकाल अनुसार परिवर्तन जितना जरूरी होता है विपरीत परिर्वतन उतना ही भयंकर होता है।

परिर्वतन दो प्रकार का होता है इष्ठ परिवर्तन और अनिष्ठ परिवर्तन अतः काल अनुसार कंधोरा कचौठा बनाने की प्रथा को सम्यक मानना आगम से विपरित चलना ही है।

ज्वलंत समस्याओं में कारगर- महावीर की (Key)

✻ डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इंदौर ✻

तेरस का शुभ आगमन, लाया है उल्लास,
नर नारी स्वागत करें, रखें भव्य उपवास।
मना रहे हैं चाव से, वीर प्रभु का जन्म,
जग जीवन का सार है, करें सदा सत्कर्म।

तीर्थंकर महावीर आज नहीं होते हुये भी सर्वव्याप्त हैं। उनकी तेजस रश्मियां सर्वदा जयवंत हैं। तीर्थंकर महावीर के कालजयी सिद्धांत, उनकी अहिंसामयी चर्या, उनका वीतरागी दर्शन आज भी वर्तमान जीवन शैली की, सोच समझ को झकझोरते हुये यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम क्या थे ? और क्या होते जा रहे हैं ?

मानवीय संवेदनाओं को भूलकर दानवीय प्रवृत्तियों का ही प्रश्रय लेने के लिये हम विवश हैं, मशगूल हैं। जबकि दानवता का फलन फूलन संहार का सूचक है और मानवता का प्रतिष्ठापन जीवन का श्रृंगार है। दानवता मरने मारने का दामन थामती है जबकि मानवता जिओ और जीने दो का पाठ पढ़ती है।

हाहा कार मचा विश्व में शांति नहीं है नाम की।
फिर आवश्यकता वर्तमान को वर्द्धमान के ज्ञान की।
जिओ और जीने दो का अर्थ सभी हम भूल गये।
स्वार्थांध होकर प्राणी, प्राणी को हैं काट रहे।

और ''परस्परोग्रहो जीवानाम्'' का जयघोष करती हुई सहअस्तित्व, समन्वय, सहिष्णुता, समर्पणीय वृत्ति अनेकान्तिक दृष्टि जीवन को रसवंत बनाती है, जहाँ नफरत द्वन्द एवं द्वेष नहीं- प्रेम, मैत्री एवं समता, सौहार्दता बढ़ती है, स्व-पर कल्याण करयित्री अहिंसा की नींव मजबूत होती है। फिर दिल टूटते नहीं, जिंदगी जीवंत होती जाती है, अद्भुत अनुभूति पूरक आनंद आच्छादित रहता है- जिसकी आज यत्र-तत्र-सर्वत्र आवश्यकता है।

तुम न हुये होते तो स्वामी, मानव दानव बन जाता।
तुम न हुये होते तो स्वामी, विश्व नरक बन जाता।
मानवता लौटेगी फिर से महावीर स्वामी आओ।
वसुधा को कुटुंब कर डालो, अपनी करूणा बरसाओ।।

वास्तव में जो तीर्थंकर महावीर की गहराई को समझ लेता है, उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में उतार लेता है, उनके दर्शन को आत्मसात कर लेता है, वह अपनी आत्मा को परखते-परखते अंततः आत्मशोधन की ओर स्वतः अग्रसर होता जाता है। भगवान महावीर अपने आत्म गुणों के विकास के द्वारा सुख-दुःख, पुण्य-पाप, अनुकूलता-प्रतिकूलता तथा राग-द्वेष से पार हो-सबसे ऊपर उठ गये। अर्थात भगवान हो गये।

महावीर की जीवन धारा बड़ी अद्भुत थी। उस धारा ने देश, समाज और व्यक्ति की, समष्टि की प्यास बुझाई। जिसकी स्मृति मात्र में ही अद्भुत आनंद है। उनका ज्योतिर्मय जीवन कैसा रहा होगा ? उनकी दिव्य वाणी कैसी होगी ? उनके विचार कैसे होंगे ?

वास्तव में उन्हीं महापुरुषों की वाणी का अचूक प्रभाव पड़ता है, जिनकी न केवल जिह्वा बोलती है, प्रत्युत जीवन का कण-कण मुखरित है। श्रमण भगवान महावीर भी उन्हीं वीर पुरुषों में से एक होते हुये भी अद्वितीय हैं, जिनकी जन्म-जयंती आज भी हम उतने ही आनंद से, हर्षोल्लास से भाव विभोर होकर श्रद्धा निष्ठा के साथ भक्ति गीतों और नृत्य की झंकार करते हुये मनाते हैं।

भगवान महावीर आज हमारे बीच नहीं है पर भगवान महावीर की वाणी हमारे पास सुरक्षित है। आज उनकी मुक्ति हो गई पर उनके विचारों की कभी मुक्ति नहीं हो सकती।

भगवान महावीर की पीयूषवर्षी वाणी का एक-एक शब्द जीवनोपयोगी है। उनके उदात्त चिंतन को पूर्णरूपेण जान कर जीवन जिया होता और जन-जन तक महावीर की उदात्त और दिव्य दृष्टि को पहुंचाया होता तो शायद मानव का व्यक्तिगत जीवन-परिवार, समाज और राष्ट्र की स्थिति इतनी तनावपूर्ण संघर्षमय नहीं होती।

अद्भुत है भगवान महावीर की दिव्य वाणी-जिसमें अन्तनिर्हित है, छुपा हुआ है-जीवन का अनमोल सिद्धांत तर्कपूर्ण रहस्य तथा मानव के आध्यात्मिक और भौतिक जीवन की समस्याओं के उत्पन्न होने के कारण तथा उनका सम्यक समाधान। सहज भाव से कह सकते हैं कि मानव जीवन यापन करने का सहज, सरल व उत्तम मार्ग हैं- प्रेम, दया, करूणा, मैत्री और उदारता का क्षीर सागर जिसकी कोई परिधि, सीमा नहीं है वह असीम है।

भगवान महावीर मौलिक थे शास्त्रीय नहीं-वैज्ञानिक थे। वे सिद्धांतवादी नहीं-व्यावहारिक थे, वे स्वप्नवादी नहीं-यथार्थवादी थे। वे एकांतवादी नहीं-अनेकांतवादी थे, वे मानवतावादी नहीं- प्राणीवादी थे। साथ-साथ भगवान महावीर अपने युग के अपूर्व अध्यात्मवादी साधक थे। शुद्ध सत्य (आत्मा से परमात्मा) की खोज में उन्होंने प्राप्त भोग विलास को ठुकराकर साधना का वह अमरपथ अपनाया जो साधकों के लिये एक दिव्य ज्योति बन गया।

आतम बने परमात्मा, हो शांति सारे देश में
है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।

स्व की उपलब्धि और स्वनिष्ठ आनंद की खोज ही महावीर के चिंतन का उद्देश्य था। यही एक प्रेरणा थी जो उन्हें अपना जीवन पथ बदलने के लिये विवश कर रही थी। यह प्रेरणा उनके स्वयं के अंदर की गई गहराई से उदभूत थी। महावीर की यह सहज अन्तः प्रेरणा ही भविष्य की उनकी समस्त उपलब्धियाँ का मूलाधार है।

भगवान महावीर के सिद्धांत समग्र मानव जाति के लिये अनुकरणीय हैं। कारण-उन सिद्धांतों के पीछे छिपी हुई मनोवैज्ञानिकता, जिसे वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है। आज से

हजारों वर्ष पूर्व महावीर ने वनस्पति जगत में भी जीव के अस्तित्व की बात कही थी जिसे वैज्ञानिक जगदीशचंद्र वसु ने अपने आधुनिक उपकरणों से सिद्ध कर दिखाया। आज सभी मानते हैं कि पेड़ को काटना, फूल को बेवजह तोड़ना एक हिंसापूर्ण कृत्य है। इसी तरह पानी छान कर पीना, रात्रि भोजन त्याग, पर्यावरण संरक्षण, आहार विवेक के साथ भाषा विवेक (जो विवाद से बचाता है) आदि में वैज्ञानिक सत्य है।

महावीर का मार्ग वैज्ञानिक मार्ग है। आज के युग में यदि यह कहें कि विज्ञान हमें निर्माण के बदले विनाश की ओर ले जाता है तो लोगों का उससे लगाव खत्म हो जायेगा। इसलिये विज्ञान में से हिंसा और प्रति हिंसा दूर करनी होगी, तभी सब संतुलित रह सकेंगे। आज भगवान महावीर की अहिंसा एक नये मोड़ पर खड़ी है और संकेत कर रही कि विज्ञान और अध्यात्म को जोड़ो।

महावीर स्वामी ने अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। भयावह विश्व को अहिंसा ही बचा सकती है। विश्व का भविष्य अहिंसा है और अहिंसा (अहिंसा परमोधर्मः) जैन धर्म की पहचान है। आदर्श विश्व के निर्माण में महावीर की अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह जैसे सिद्धांत आज भी उपयोगी हैं। आदमी आज बारूद के ढेर पर बैठा है और अपनी तबाही देख रहा है। हिंसा और आतंक से घिरी दुनिया में अमन चैन लाने के लिये महावीर का रास्ता ही एक उपाय है। महावीर स्वामी के उपदेश आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि सभी दृष्टि से उपयोगी हैं।

जन्म जयंती और प्रदर्शन सफल मनाना तब होगा
जब दीन दुखी जीवों के दुःख से द्रवित हृदय तेरा होगा।
अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत में औषधि है शांति की
फिर आवश्यकता है वर्तमान को वर्द्धमान के ज्ञान की।

आज आवश्यक है कि भगवान महावीर को हम अपने मन मंदिर में बैठाकर उन्हें अपने आचार, विचार, व्यापार एवं आचरण में ले आयें ये सदाचार, सहिष्णुता का पथ हमें भगवान महावीर तक ले जायेगा। अर्थात आज हमें भगवान महावीर को मानना ही नहीं है, जानना भी है। दूसरे शब्दों मे हम सिर्फ महावीर को न माने बल्कि महावीर की भी माने। यह की ही वह चाबी है जो आज हर ज्वलंत समस्याओं का ताला खोलती है।

अतः इस वर्ष की महावीर जयंती हम की (महावीर के सिद्धांतों की) मान कर मनाएं और महावीरमय हो जायें। साथ साथ इस महावीर जयंती में हम उनके चरण छूने के साथ ही आचरण भी छूने का प्रयास करें तभी महावीर जयंती मनाने की सार्थकता है।

महावीर जयंती में नया हर्ष हो, जीवन का उत्कर्ष हो।
मैत्री भावना फैले जग में, सदाचार आदर्श हो।
न्याय मार्ग पर चलूँ निरंतर, कितना भी संघर्ष हो।
हमको राह दिखाने वाले, गुरुवर तेरा दर्श हो।

मैं अकेला

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

हर मानव के लिये जीवन जीने का एक तर्जुबा अलग होता है। परन्तु जिन्दगी जीना पड़ती है। सबका अकेले साथी सब बहुत खोज लेते हैं । परन्तु साथी भी नदी नाव के संयोग की तरह कभी अपने होते हैं। तो कभी पराये हो जाते हैं। कभी आप छोड़कर चले जाते हैं। कभी साथ में रह जाते हैं। लेकिन यह बात है कि सबको एक दिन अकेला ही रहना है। कस्मे वादे प्यार वफा सब बातें हैं। बातों का क्या- कोई किसी का यहाँ नही है। नाते हैं नातों का क्या इस तत्व को हजारों वर्ष पहले स्वामी कार्तिकेय जी ने अपने द्वादश अनुप्रेक्षा ग्रंथ में उल्लेखित कर दिया है। वे अपने इस पवित्र ग्रंथ में लिखते हैं।

एक ही जीव जन्म लेता है। और एक ही जीव देह में गर्भ को ग्रहण करता है। एक ही जीव बालक होता है। एक ही जीव युवा होता है। एक जीव वृद्धपने से ग्रसित हो जाता है। जरा को प्राप्त हो जाता है। एक ही जीव रोगी होता है। एक ही जीव शोक को प्राप्त करता है अकेला ही जीव तप करता है। अकेला ही जीव नरकादि दुख भोगता है। अकेला ही जीव रोगाक्रान्त हो जाता है। अकेला जीव ही सारे के सारे दुख को भोगता है। एक ही जीव अपने पुण्य का संचय करता है। और एक ही अकेला जीव स्वर्ग के सुख को प्राप्त करके महासुख प्राप्त करता है। एक ही जीव अपने कर्मों का क्षय अकेले ही करता है। और अकेले ही मोक्ष को प्राप्त करता है। इसलिये कोई भी स्वजन या परजन अपने देखते हुये हम यह समझते हैं। कि हमारा साथ देगा। लेकिन

''कमला चलत न पेड जाय मरघट तक परिवारा
अपने-अपने सुख को रोये पिता पुत्र दारा''

लक्ष्मी एक कदम भी साथ नही चलती है। लेकिन परिजन सिर्फ मरघट तक ही जाते हैं। मरघट के आगे कोई भी नहीं जा सकता है। मंगत राय के इस कथन के लिये भी हम दृष्टिपात करें तो पता लगेगा कि सचमुच में हमारा क्या है। अब हम यह कह सकते हैं कि एक ही जीव अकेला सारे के सारे सुख-दुख, जन्म जरा, मृत्यु सब को प्राप्त करता है। ''आप अकेला अव तरे मरे अकेला होय या कबहुँ इस जीव का साथी सगा न कोय।''

निश्चय से यही जीव दशलक्षण धर्म को प्राप्त करता है। और दशलक्षण धर्म के साथ अब उसके स्वजन साथ नहीं देते हैं। वह उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य इन दस धर्मों को अपनाता है। और इन दस धर्मों को अपनाकर वह सारे दुखों का क्षय करके देवलोक को प्राप्त करके और वहाँ से च्युत होकर के दुखों का क्षय करता है।

''दुक्खखओ-कम्मखओ बोहिलाहो सुगई गमणं समहि मरणं जिन गुण संपत्ति होउ मज्झम'' की पवित्र भावना करके वह एक अकेला जीव ही चारों गतियों के दुख का विनाश कर देता है।

सारे के सारे दुखों का कारण अगर कोई प्राप्त करता है। तो वह स्वयं जीव अकेला ही प्राप्त

करता है। पुरे प्रयत्न करके, यह जीव एक अकेला ही होता है। जीवन जीने में भी अकेला होता है। मरने में भी अकेला होता है। शरीर, मित्र, स्त्री, धन, धान्य वगैरह सारी की सारी वस्तुएँ हेय हैं त्यागने योग्य हैं। जो जिंदा में अकेला निकल जाता है। घर छोड़कर के वह अपनी मौत को हथेली में रखकर के कहता है। मेरा कोई भी नही है। मैं अकेला ही चला था। साथ मिलता गया कारवाँ बढ़ता गया और एक ध्यान रखना ''साथी चल अकेला चल अकेला तेरा मेला पीछे छूटा साथी चल अकेला'' चल साथी तुझे अकेला ही चलना है। और अकेले चलने वाला व्यक्ति अकेले ही सारी मुश्किलों को झेलने वाला भगवान राम भी अकेले ही वन में जाने के लिये तैयार थे। सीता और लक्ष्मण ने साथ दिया लेकिन जो कष्ट सीता हरण का हुआ वह कष्ट अकेला राम को भोगना पड़ा और लक्ष्मण ने उनका साथ देने की कोशिश की लेकिन इन के दुख को कम नहीं कर पाये सीता ने दुख अकेले भोगा कोई उसका साथी नहीं बन पाया साथी कितने भी बन जायें लेकिन सुख-दुख तो स्वयं को ही भोगना पड़ता है।

अतः हमें यह कोशिश करना चाहिये कि स्वामी कार्तिकेय जी की इस ग्रंथ के माध्यम से एकत्व भावना का जो वर्णन किया है वह हमारे चिंतन में आ जानी चाहिये। और एकत्व का चिंतन करके हमें स्वयं ही अपने ऐसे काम करना चाहिये। जिससे हम बुरे कार्यों से दूर रहें। अच्छे कार्यों से जुड़ें ताकि हम अंतिम समय में भी ऐसा नाम अमर कर जाये जिससे लोग कहे।

एक अकेला अव तरे मरे अकेला होय।

कविता

सदा मोह हारा

संस्कार फीचर्स

दुनिया में कोई न मेरा सहारा,
गुरुदेव केवल तुम्हारा सहारा
तुम ज्ञान मूर्ती तुम ध्यान धारी,
तुम्हारी शरण में भव का किनारा

विषयों की आशा तृष्णा बढ़ाये,
आरंभ संग ममता जगाये
निजात्मा का परम पंथ पाया,
तव शिष्य कोई नहीं हारा

संस्कार शिक्षा की प्रेरणा तुम,
श्रम से श्रमण की परम भावना तुम
गुरु के चरण में अब लागी लगन है,
प्रकृति रूप सुंदर दिगम्बर तुम्हारा

विद्या समय योग सम साधना है,
निर्मल निजात्म की शुभ धारणा है
अध्यात्म चिंतन गहन वीतरागी,
विद्या गुरु से सदा मोह हारा

संयम स्वास्थ्य योग

अपान मुद्रा

मध्यमा व अनामिका के आग्रभाग को अंगूठे से मिलाने पर अपान मुद्रा बनती है। अन्य अंगुलिया सीधी व सहज रहती है।

लाभः 1. इस क्रिया को करने से शरीर की उत्सर्जन क्रिया व्यवस्थित रहती है।
2. इसे करने से प्राण व अपान वायु की स्थिति सम रहती है।
3. स्वेदन लाती है।
4. पेट की वायु को कम करती है।
5. कब्ज व पाईल्स में लाभप्रद है।

अपान वायु मुद्रा (हृदय-रोग मुद्रा):

तर्जनी अंगुली (अंगूठे के पास) को अंगूठे की जड़ में लगाएँ व अंगूठे के सिरे को मध्यमा व अनामिका (बीच की दोनों अंगुलियों) से स्पर्श करें। यह अपान वायु मुद्रा है। इसमें छोटी अंगुली अलग रहती है।

लाभः 1. हृदय रोग में चमत्कारी लाभ देती है।
2. गैस में तुरन्त लाभ होता है।
3. यह सिरदर्द में तुरन्त लाभ पहुँचती है।

लिंग मुद्रा

दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में फंसाकर अंगूठे को सीधा रखें, कोई एक अंगूठा सीधा रखें, लिंग मुद्रा बन जाती है।

लाभः 1. इस मुद्रा से शरीर की गर्मी बढ़ती है।
2. सर्दी-खाँसी में लाभ होता है।
3. मोटापा दूर करने में सहायक है।

शंख मुद्राः

दायें हाथ के अंगूठे को दाएँ हाथ की मठ्ठी में बंद करें। बायें हाथ की तर्जनी अंगुली को दायें हाथ के अंगूठे से मिलाने से शंख मुद्रा बनती है।

लाभः 1. स्नायु संस्थान सशक्त होता है।
2. आंतों व पेट के समस्त विकार दूर होते हैं।

आठ शंकाओं का समाधान

✻ श्री 105 क्षुल्लक सिद्धसागर जी ✻

समयसार की 15वीं गाथा और श्री कानजी स्वामी नामक लेख में जो अनेकान्त की गत किरण 6 में प्रकाशित हुआ है मुख्तार श्री जुगलकिशोर जी की आठ शंकाएँ प्रकाश में आई हैं जिनका समाधान मेरी दृष्टि से निम्न प्रकार है-

आठ शंका-

1. आत्मा को अबद्धस्पृष्ट अनन्य और अविशेषरूप से देखने पर सारे जिनशासन को कैसे देखा जाता है ?

2. उस जिनशासन का क्या रूप है जिसे उस दृष्टा के द्वारा पूर्णतः देखा जाता है ?

3. वह जिनशासन श्री कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वाति और अकलंक जैसे महान् आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित अथवा संसूचित जिनशासन से क्या कुछ भिन्न है ?

4. यदि भिन्न नहीं है तो इन सबके द्वारा प्रतिपादित एवं संसूचित जिनशासन के साथ उसकी संगति कैसे बैठती है ?

5. इस गाथा में अपदेसमसंतमज्झं नामक जो पद पाया जाता है और जिसे कुछ विद्वान अपदेससुत्तमज्झं रूप से भी उल्लेखित करते हैं , उसे जिणशासन पद का विशेषण बतलाया जाता है और उससे द्रव्य श्रुत तथा भाव श्रुत का भी अर्थ लगाया जाता है, यह सब कहाँ तक संगत है अथवा पद का ठीक रूप, अर्थ और सम्बन्ध क्या होना चाहिये ?

6. श्री अमृतचन्द्राचार्य इस पद के अर्थ विषय में मौन हैं और जयसेनाचार्य ने जो अर्थ किया है वह पद में प्रयुक्त हुये शब्दों को देखते हुये कुछ खटकता हुआ जान पड़ता है, यह क्या ठीक है अथवा उस अर्थ में खटकने जैसी कोई बात नहीं है ?

7. एक सुझाव यह भी है कि यह पद अपवेससंतमज्झं (अप्रवेशसान्तमध्यं) है, जिसका अर्थ अनादि मध्यान्त होता है और यह अप्पाणं (आत्मानं) पद का विशेषण है, न कि जिनशासन पद का शुद्धात्मा के लिये स्वामी समन्तभद्र ने रत्करण्ड (6) में और सिद्धसेनाचार्य ने स्वयम्भूस्तुति (प्रथमद्वात्रिंशिका 1) में अनादिमध्यान्त पद का प्रयोग किया है। समयसार के एक कलश में अमृतचन्द्राचार्य भी मध्यान्तविभागयुक्त जैसे शब्दों द्वारा इसी बात का उल्लेख किया है। इन सब बातों को भी ध्यान में लेना चाहिये और तब यह निर्णय करना चाहिये कि क्या उक्त सुझाव ठीक है ? यदि ठीक नहीं है तो क्या ?

8. 14वीं गाथा में शुद्धनय के विषयभूत आत्मा के लिये पांच विशेषण का प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुल तीन विशेषणों का ही प्रयोग 15वीं गाथा में हुआ है, जिसका अर्थ करते हुये शेष दो विशेषणों नियत और असंयुक्त को भी उपलक्षण के रूप में ग्रहण किया जाता है। तब यह प्रश्न पैदा होता है कि यदि मूलकार का ऐसा ही आशय था तो फिर इस 15वीं गाथा में उन

विशेषणों को क्रमभंग करके रखने की क्या जरूरत थी ? 14वीं गाथा के पूर्वार्ध को ज्यों का त्यों रख देने पर भी शेष दो विशेषणों को उपलक्षण के द्वारा ग्रहण किया जा सकता था। परन्तु ऐसी नहीं किया गया, तब क्या इसमें कोई रहस्य है, जिसके स्पष्ट होने की जरूरत है ? अथवा इस गाथा के अर्थ में उन दो विशेषणों को ग्रहण करना युक्त नहीं है ?

1. समाधान- समयसार ग्रंथ की 15वीं गाथा में जो अबद्धस्पृष्ट है- इसमें बद्ध के साथ स्पृष्ट का निषेध किया गया है। जब बद्धस्पृष्ट के कारण आस्रव तथा उसके विरोध को संवर, बद्धस्पृष्ट के एक देश क्षय के कारण निर्जरा और बद्धस्पृष्ट के निरवशेष रूप से आत्मा से दूर होने या क्षय होने को जाने तब आत्मा के अबद्धस्पृष्ट स्वरूप का ठीक बोध हो बंध प्रकृत में अजीव के साथ जीव का है अतः अजीव का ज्ञान होना भी अत्यावश्यक है- उनके लक्षणों को विशेष प्रकार से जानने पर ही आत्मा का अनन्य रूप से बोध होता है। जब यह अविशेष की निष्ठा को जान लेता है तब वह अविशेष रूप आत्मा को जानता है- चूंकि सामान्य विशेष-निष्ठा आश्रय में रहता है- इस प्रकार प्रयोजन भूत सात तत्व जो कि जिनशासन रूप हैं या जिन शासन में बतलाये गये हैं- इनको गुणस्थान मार्गणास्थान आदि के विवेचन से दया, दम त्याग समाधिरूप जो जानता है वह तत्त्वार्थ श्रद्धान करने वाला होने पर वास्तव में आत्मा को जानने वाला सारे जिनशासन को जानता है- जो भी द्रव्य श्रुतरूप स्याद्वाद शासन में या भावश्रुत में जो भी प्रकाशित होता है वह सात तत्व रूप से बतलाया जाता है या जाना जाता है- जो प्रयोजन भूत आत्मा को जानता है, वह प्रयोजनभूत सात तत्व को बतलाने वाले जिन शासन को भी प्रयोजनभूत रूप से अवश्य पूर्ण रूप से जानता है। जो प्रयोजनभूत जिनशासन को पूर्णतया नहीं जानता वह आत्मा को भी नहीं जानता है या यथार्थ रूप से नहीं जानता है- **''अपदेशसुत्तमज्झं जिनशासणं''** द्रव्यश्रुत में बतलाये गये जिनशासन को, आत्मा को यथार्थरूप से जानने वाला या अनुभव करने वाला या देखने वाला अवश्य पूर्णरूप से जानता है जो कि प्रयोजन भूत है- आत्मा को पूर्णरूप से सब गुणपर्यायों सहित जो जान लेता है वह सर्वज्ञ है चूंकि किसी भी पदार्थ का पूर्णज्ञान सर्वज्ञ को होता है- उसने तो अवश्य ही सारे जिनशासन को जाना ही है-

किन्तु श्रुतज्ञान से युक्त छद्मस्थ भी सारे जिनशासन को कुछ गुणपर्याय सहित प्रयोजनभूत रूप से अवश्य जानता है यदि वह सम्यक्त्वी है, जो सम्यक्त्वी है वही सात तत्व को जानने वाले अपने आत्मा का छद्मस्थ अवस्था में अनुभव करता है इसलिये आत्मा को जानने वाला सारे जिनशासन को पूर्णरूप से अवश्य जानता है जो कि प्रयोजन भूत है। प्रयोजनभूत जिनशासन का जो प्रयोभूत रूप से श्रुतज्ञान होता है वह प्रयोजनभूत श्रुतज्ञान भी छद्मस्थ का पर्याय है अतः जो आत्मा को प्रयोजनभूत रूप से उक्त तीन विशेषणों से अबद्धस्पष्ट अनन्य-विशेष अविशेष-सामान्य रूप से जानता है- वह प्रयोजनभूत जिनशासन को पूर्ण रूप से जानता है अर्थात् जो समय सार के सम्पूर्ण प्रयोजनभूत अधिकारों को तत्त्वतः जानता है और जो समयसार को कुछ गुणपर्यायों सहित जानता है चाहे वहे द्रव्यश्रुत में कहा गया हो या स्याद्वाद रूप से बतलाया गया

हो या भावश्रुत से जाना गया हो।

भाव श्रुतज्ञान आत्मा का पर्याय है अतः आत्मा को जानने वाला सम्यग्दृष्टि छद्मस्थ अवश्य उस (श्रुतज्ञान) के द्वारा जाने गये प्रयोजनभूत पूर्ण जिनशासन को जानता है- प्रकृत में आत्मा को जानने वाला ज्ञान परोक्ष है - वह न्यायशास्त्र की अपेक्षा छद्मस्थ का आत्मानुभव या ज्ञान सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष हो सकता है।

2. समाधान- स्याद्वाद जिनशासन में छह द्रव्य, पंचास्तिकाय, सात तत्व और नौ पदार्थ बतलाए गये हैं- ये सब जीव अजीव के विशेष हैं। जीव और अजीव के विशेष आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष हैं। सात तत्त्वों का विवेचन करने वाला तत्त्वार्थ सूत्र इनमें आ गया है और उस सूत्र द्वारा निर्दिष्ट सम्पूर्ण प्रमेय भी सात तत्व का अति वर्तन नहीं करते हैं। वे सब सामान्य विशेषात्मक जात्यन्तर हैं- इन सातों में से प्रयोतन भूत एक तत्त्व का पूरा ज्ञान तब होता है जब सातों का ज्ञान हो, अतः आत्मा का सम्यग्बोध उसी को होता है जो प्रयोजन भूत रूप से इन सातों को जान कर श्रद्धान करता है। छह द्रव्य, पंचास्तिकाय और नौ पदार्थ इन्हीं सात तत्त्वों में अंतरभूत हैं- स्याद्वाद श्रुतज्ञान इनको जानता है और स्याद्वाद द्रव्यश्रुत इनका विवेचन करता है। स्याद्वाद और उसका अन्यतम प्रमेय सामान्य विशेषात्मक है अतः सम्पूर्ण जिनशासन सामान्य विशेषात्मक है- कहा भी है **अभेद भेदात्मकमयतत्त्वं, तब स्वन्त्रमंत्रान्यन्तरत्ख-पुष्पम्** इस विषय में प्रमेयकमलमार्तण्ड देखें। उक्त दो चरण युक्त्यनुशासन के हैं जो कि संस्कृत में उद्घृत हैं।

3. समाधान- वह जिनशासन श्रीकुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वाति-गृद्धपिच्छाचार्य, और अकलङ्क जैसे महान् आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अथवा संसूचित जिनशासन से कोई भिन्न नहीं है।

4. समाधान - इन सबके द्वारा प्रतिपादित एवं संसूचित जिनशासन के साथ उसकी संगति बैठ जाती है चूंकि कहीं पर किसी ने संक्षिप्त रूप से वर्णन किया है तो किसी ने विस्तार से, किसी ने किसी विषय को गौण और किसी को प्रधान रूप से वर्णन किया है- जैसे कि समयसार में आत्मा की मुख्यता से वर्णन है यद्यपि शेष तत्वों का भी प्रासंगिक रूप से गौणतया वर्णन है- जीव द्रव्य का विशद विवेचन जीवकाण्ड में मिलेगा। बन्ध का अत्यन्त विस्तार पूर्वक वर्णन महाबन्ध में मिलेगा। किसी ने किसी भङ्ग का छन्द के कारण पहले वर्णन किया तो किसी ने बाद में , तो भी भंग तो सात ही माने हैं किसी ने एव कार लिखा है तो किसी ने कहा कि उसे आशय से जान लेना चाहिये या प्रतिज्ञा से जान लेना चाहिये स्याद पद के प्रयोग के विषय में भी उक्त मन्तव्य चरितार्थ होता है संग्रह, व्यवहार, और ऋजुसूत्र इन तीन नयों के प्रयोग से सामान्य विशेष और अवाच्य की या विधि, निषेध और अवाच्य की या नित्य, अनित्य और अवाच्य की या व्यापक, व्याप्य और अवाच्य की योजना करना चाहिये न कि सर्वथा-आग्रह से। उभय नाम का भंग, नैगमन से योजित करना चाहिये। संग्रह, व्यवहार और उभय के साथ में ऋजूसूत्र की योजना करके शेष तीन संग्रह-अवाच्य व्यवहार-अवाच्य और उभय-अवाच्य भङ्ग नययोग से लगाना चाहिये न कि सर्वथा-

बिना सामान्य की निष्ठा को समझे सामान्य का सच्चा ज्ञान नहीं होता है। चूंकि निर्विशेष सामान्य गधे के सींग के समान है। जब सामान्य है तो वह विशेष रूप आधार में निष्ठा में रहता है अतः संक्षिप्त से वह सारा शासन सामान्य और विशेषात्मक है उसी को प्रामाणिक आचार्यों ने बतलाया है। अतः समयसार पढ़कर निरस्ताग्रह होना चाहिये न कि दुराग्रही-उन्मत्त। इसी प्रकार अन्य किसी भी न्याय या सिद्धान्त को पढ़ कर या किसी भी अनुयोग को पढ़कर बुद्धि में आचरण में अपने योग्य समत्व और सौम्यता के दर्शन होना चाहिये। यदि दुरभिनिवेशका या सर्वथा आग्रहरूपभाव का अन्त न हुआ तो ये सब समीचीन शास्त्र जन्मान्ध के नेत्रों पर चश्मा लगाने के समान हैं -जो निरस्ताग्रह नहीं होता है वह प्रकृत में जन्मान्ध तुल्य हैं चूंकि स्याद्वाद रूप सफेद चश्मा उसको यथार्थ वस्तुस्थिति देखने में निमित्त कारण नहीं हो रहा है। यदि वह निमित्त कारण उसके देखने में हैं तो वह जन्मान्ध नहीं है। सम्पूर्ण द्वादशांग या उसके अवयव आदि रूप समतासारादिकं स्याद्वाद रूप हैं अतः वे सब महान आचार्यों द्वारा कहे गये ग्रन्थ सत्य के आधार पर ही हैं।

5-6 समाधान- अपदेससुत्तमज्झं सव्वं जिणशासणं द्रव्यु श्रुत में रहने वाले सम्पूर्ण जिनशासन को यह उक्त पाठ का अर्थ होने से पाठ शुद्ध है। अथवा द्रव्यश्रुत में विवेचना रूप से पाये जाने वाले सम्पूर्ण जिनशासन को यह अर्थ ले लेवें। अथवा सप्तमी अर्थ में द्वितीय का प्रयोग मान कर उसकी-जिणसासणं का विशेषण न रखकर प्रकृत तीन विशेषणों से युक्त आत्मा को बतलाने वाले इस गाथा रूप द्रव्यश्रुत में या इसके निमित्त होने वाले भावश्रुत में सम्पूर्ण जिनशासन को देखता है जो कि उक्त तीन विशेषणों से विशिष्ट आत्मा को सम्यक् प्रकार से जानता देखता या अनुभव करता है अतः अपदेससुत्तमज्झं पाठ अपवेससन्तमज्झं वाले पाठ की संगति किसी ने तात्पर्यभाव से रक्खी हो। किन्तु प्राचीनतम प्रति में जो अपदेससुत्तमज्झं पाठ है जो अन्य पाठ की संगति से क्या ?

7. समाधान- इस विषय में मूल प्राचीनतम प्रतियों को देखना चाहिये और इस समयसार पर आचार्य प्रभाचन्द्र का समयसार प्रकाश नामक व्याख्यान देखना चाहिये- जो कि सेनगण मन्दिर कारंजा में है- जयसेनाचार्य के सामने अपदेससुत्तमज्झं -यह पाठ था आचार्य अमृतचन्द्र के सामने यह पाठ नहीं या यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। अपवक सन्तमज्झं इस पाठ को आत्मा का भी विशेषण बनाया जा सकता है और जिनशासन का भी चूंकि जिनशासन भी प्रवाह की अपेक्षा से अनादिमध्यान्त है। संभव है कि- सुत्त में से 'उ' के नहीं लिखे जाने से 'अपदेससंतमज्झं' पाठ हो गया हो। और किसी ने उसकी शुद्धि के लिये 'द' को 'व' पढ़ा हो तब वह 'अपवेससंतमज्झं' हो गया हो। दोनों पाठ शुद्ध हैं। चाहे दोनों में से कोई हो किन्तु 'अपदेशसुत्तमज्झं' ही उसका मूल पाठ होना चाहिये चूंकि जयसेनाचार्य ने पाठ को सुरिक्षत रखा है।

8. समाधान- जो अर्थ अनन्य विशेषण का है वह विशेष है और सामान्य अर्थ का सूचक पद अविशेष है। वैसा अर्थ न तो नियत पद में है जो कि क्षोभ रहित अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और न असंयुक्त-शब्द में चूंकि 14वीं गाथा में उसका प्रयोग अमिश्रित अर्थ में हुआ है- इसीलिये अविशेष शब्द का प्रयोग हुआ है। स्पष्ट अर्थ में आचार्यवर्य को यह बताना था कि आत्मा को

अबद्ध तथा विशेष और सामान्य दोनों प्रकार से देखना चाहिये चूंकि आत्मा को बिना पूर्वोक्तरीत्या देखे वह जिनशासन का पूर्ण ज्ञाता नहीं कहा जा सकता था जो कि प्रकृत अपदेशसूत्र के मध्य में निर्दिष्ट है- समयसार के सम्पूर्ण अधिकारों का विवेचन इसी मूल गाथा की भित्ति पर है यदि उसके अतः परीक्षण से काम लिया जावे। समयसार कलश का मंगलाचरण भी इस गाथा की ओर इशरा करके बतला रहा है कि 'सर्वभावान्तरच्छिदे' ऐसे समयसार के लिये ही हमारा अंतः कारण नमस्कार है - न कि दुराग्रह के दलदल के प्रति। असंयुक्त और नियतपद 15वीं गाथा में आवश्यक न थे- चूंकि सारा जिनशासन जो सात तत्व को बतलाने वाला है वह सामान्य विशेष आत्मक है अतः प्रकृत में अविशेष पद रक्खा गया है। यहाँ उपलक्षण वाले झमेले से क्या जबकि वह नियत पद प्रकृत अविशेष अर्थ का घातक नहीं हो सकता है चूंकि वह पूर्व गाथा में अत्युच अर्थ में प्रयुक्त हुआ है- उसका अर्थ मोह और राग द्वेष रहित अवस्था विशेष है उससे मुक्त आत्मा को बतलाना इष्ट था। किन्तु प्रकृत में ऐसा अर्थ आचार्यवर्य को इष्ट नहीं था इसीलिये वह नियत पद अविशेष के स्थान पर रक्खा गया, न कि उपलक्षण रूप यह बनाया गया। 14वीं गाथा में शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को पांच विशेषणों से युक्त बतलाया है- उसका अर्थ यह है कि शुद्ध नय कभी अबद्ध देखता है। कभी दूसरे रूप नहीं है- अनन्य है इस प्रकार देखता है, कभी मोह क्षोभ रहित नियत देखता है, कभी वह ज्ञान, दर्शन, सुख इत्यादिक भेद न करते हुये ज्ञाता रूप से देखता कि ज्ञान भी आत्मा है सुख भी आत्मा है इत्यादि और कभी वह शुद्धनय से आत्मा को दूसरे द्रव्यादिक के मिश्रण से रहित असंयुक्त देखता है- किन्तु 15वीं गाथा में तो सारे जिनशासन को देखने का कहा है। अतः 15वीं गाथा का विवेचन अपने विशिष्ट विवेचन से अत्यन्त गंभीर और विस्तृत हो गया है जो शुद्ध अशुद्ध आदि को जानने वाला ज्ञाता-सप्ततत्त्व दृष्टा है उसको केवल सामान्य ही नहीं विशेष भी जानने को कहा है दोनों को प्रधान रूप से जानने वाला ज्ञान प्रमाण है प्रकृत में वही यहाँ इष्ट है जो आत्मरूप है। आगे इस पर और भी अधिक विस्तार से अन्य लेखों में विचार किया गया है।

कविता

नयन तरसते हैं

लहर सागर की जल में समा जाती है
ज्ञान तरंग विद्यासागर में समा जाती है
हर लहर की गति अद्भुत होती है
योग से शांति अनंतधारा मिल जाती है

गुरु दर्श को मम नयन तरसते हैं
तुम बिन गुरुवर सदा बरसते हैं
ज्ञानीध्यान चर्या प्रधानी
मिलन को हो देरी तो पल अखरते हैं।

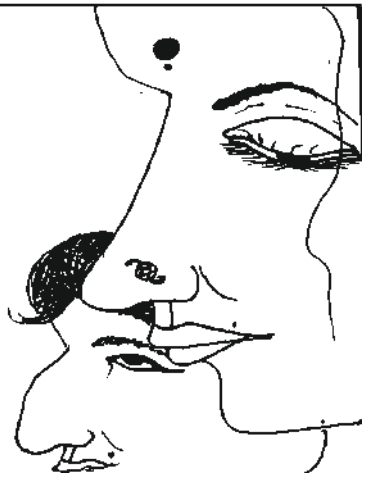

जैन संस्कृति की सप्त तत्व और षट् द्रव्य व्यवस्था पर प्रकाश

✻ जैनदर्शन शास्त्री पं. बंशीधरजी जैन, व्याकरणाचार्य ✻

अखण्ड मानव-समष्टि को अनेक वर्गों में विभक्त कर देने वाले जितने पंथभेद लोक में पाये जाते हैं उन सबको यद्यपि 'धर्म' नाम से पुकारा जाता है, परन्तु उन्हें 'धर्म' नाम देना अनुचित मालूम देता है क्योंकि धर्म एक हो सकता है, दो नहीं, दो से अधिक भी नहीं, धर्म धर्म में यदि भेद दिखाई देता है तो उन्हें धर्म समझना ही भूल है।

अपने अन्तकरण में क्रोध, दुष्टविचार, अहंकार छल-कपटपूर्ण भावना, दीनता और लोभवृत्ति को स्थान न देना एवं सरलता, नम्रता और आत्मगौरव के साथ-साथ प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, दया तथा सहानुभूति आदि सद्भावनाओं को जाग्रत करना ही धर्म का अंतरंग स्वरूप माना जा सकता है और मानवता के धरातल पर स्वकीय वाचनिक एवं वायिक प्रवृत्तियों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह वृत्ति का यथायोग्य संवर्धन करते हुये समता और परोपकार की और अग्रसर होना धर्म का बाह्य स्वरूप मानना चाहिये।

पन्थ भेद पर अवलंबित मानव समष्टि के सभी वर्गों को धर्म की यह परिभाषा मान्य होगी इसलिये सभी वर्गों की परस्पर भिन्न सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मान्यताओं-जिन्हें लोक में 'धर्म' नाम से पुकारा जाता है- के बीच दिखाई देने वाले भेद को महत्व देना अनुचित जान पड़ता है।

मेरी मान्यता यह है कि मानव समष्टि के हिन्दू जैन, बौद्ध, पारसी, सिख, मुसलमान और ईसाई आदि वर्गों में एक दूसरे वर्ग से विलक्षण जो सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मान्यतायें पाई जाती हैं उन मान्यताओं को 'धर्म' न मानकर धर्म प्राप्ति की साधन स्वरूप 'संस्कृति' मानना ही उचित है। प्रत्येक मानव, यदि उसका लक्ष्य धर्म प्राप्ति की ओर है तो लोक में पाई जाने वाली उक्त सभी संस्कृतियों में से किसी भी संस्कृति को अपनाकर उल्लिखित अविवादी धर्म को प्राप्त कर सकता है। संस्कृति को ही धर्म मान लेने की भ्रानितपूर्ण प्रचलित परिपाटी से हिन्दू जैन आदि सभी वर्गों का उक्त वास्तविक धर्म की ओर झुकाव ही नही रह गया है इसीलिये इन वर्गों में विविध प्रकार के अनर्थकर विकारों, पाखण्डों एवं रूढ़ियों को अधिक प्रश्रय मिला हुआ है और इस सबका परिणाम यह हुआ है कि जहाँ उक्त वास्तविक धर्म मनुष्य के जीवन से सर्वथा अलग होकर एक लोकोत्तर वस्तुमात्र रह गया है वहाँ मानवता से विहीन तथा अन्याय और अत्याचार से परिपूर्ण उच्छश्रृंखल जीवन प्रवृत्तियों के सद्भाव में भी संस्कृति का छद्मवेप धारण करने मात्र से प्रत्येक मानव अपने को और अपने वर्ग को कट्टर धर्मात्मा समझ रहा है इतना ही नहीं, अपनी संस्कृति से भिन्न दूसरी सभी संस्कृतियों को अधर्म मान कर उनमें से किसी भी संस्कृति के मानने वाले व्यक्ति तथा वर्ग को धर्म के उल्लिखित चिन्ह मौजूद रहने पर भी वह अधर्मात्मा ही मानना चाहता है और मानता है और एक ही संस्कृति का उपासक वह व्यक्ति भी उसकी दृष्टि में अधर्मात्मा ही है जो उस संस्कृति के नियमों की ढोंगपूर्वक ही सही, आवृत्ति करना जरूरी नहीं समझता है, भले ही वह अपने जीवन को धर्ममय बनाने का सच्चा प्रयत्न कर रहा हो। इस तरह भाव प्रत्येक वर्ग और वर्ग के प्रत्येक मानव में मानवता को कलंकित करने वाले परस्पर विद्वेप,

घृणा, ईर्षा और कलह के दर्दनाक चित्र दिखाई दे रहे हैं।

यदि प्रत्येक मानव और प्रत्येक वर्ग धर्म की उल्लिखित परिभाषा को ध्यान में रखते हुये उसे संस्कृति का साक्ष्य और संस्कृति को उसका साधन मान लें तो उन्हें यह बात सरलता के साथ समझ में आ जायेगी कि वही संस्कृति सच्ची और उपादेय हो सकती है तथा उस संस्कृति को ही लोक में जीवित रहने का अधिकार प्राप्त हो सकता है जो मानव जगत को धर्म की ओर अग्रसर करा सके और ऐसा होने पर प्रत्येक मानव तथा प्रत्येक वर्ग अपने जीवन को धर्ममय बनाने का लिये अपनी संस्कृति को विकारों और रढ़ियों से परिष्कृत बनाते हुये अधिक से अधिक धर्म के अनुकूल बनाने के प्रयत्न में लग जायेंगे तथा उनमें से अहंकार, पक्षपात और हठ के साथ साथ परम्पर के विद्वेप, घृणा, ईर्षा और कलह का खात्मा होकर सम्पूर्ण मानव समाष्टि में विविध संस्कृतियों के सद्भाव में भी एकता और प्रेम का रस प्रवाहित होने लगेगा।

मेरा इतना लिखने का प्रयोजन यह है कि जिसे लोक में 'जैनधर्म' नाम से पुकारा जाता है उसमें दूसरी दूसरी जगह पाये जाने वाले विशुद्ध धार्मिक अंश को छोड़कर सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मान्यताओं के रूप में जितना जैनत्व का अंश पाया जाता है उसे 'जैनसंस्कृति' नाम देना ही उचित है, इसलिये लेख के शीर्षक में मैंने 'जैनधर्म' के स्थान पर 'जैन संस्कृति' शब्द का प्रयोग उचित समझा है और लेखक के अन्दर भी यथास्थान धर्म के स्थान पर संस्कृति शब्द का ही प्रयोग किया जायेगा।

2. विषयप्रवेश: किसी भी संस्कृति के हमें दो पहलू देखने को मिलते हैं- एक संस्कृति का आचार-सबन्धी पहलू और दूसरा उसका सिद्धांत सबन्धी पहलू।

जिसमें निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्राणियों के कर्त्तव्यमार्ग का विधान पाया जाता है वह संस्कृति का आचार संबन्धी पहलू है जैन संस्कृति में इसका व्यवस्थापक चरणानुयोग माना गया है और आधुनिक भाषा की प्रयोग की शैली में इसे हम 'कर्त्तव्यवाद' कह सकते हैं।

संस्कृति के सिद्धांत-संबन्धी पहलू में उसके (संस्कृति के) तत्वज्ञान (पदार्थ व्यवस्था) का समावेश होता है। जैन संस्कृति में इसके दो विभाग कर दिये हैं - एक सप्ततत्व मान्यता और दूसरा षटद्रव्यमान्यता। सप्ततत्वमान्यता में जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात पदार्थों का और षटद्रव्यमान्यता में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन छह पदार्थों का समावेश किया गया है। जैन संस्कृति में पहली मान्यता का व्यवस्थापक करणानुयोग और दूसरी मान्यता का व्यवस्थापक द्रव्यानुयोग को माना गया है। आधुनिक भाषाप्रयोग की शैली में करणानुयोग को उपयोगितावाद और द्रव्यानुयोग को अस्तित्ववाद (वास्तविकतावाद) कहना उचित जान पड़ता है। यद्यपि जैन संस्कृति के शास्त्रीय व्यवहार में करणानुयोग को आध्यात्मिक पद्धति और द्रव्यानुयोग को दार्शनिक पद्धति इस प्रकार दोनों को अलग-अलग पद्धति के रूप में विभक्त किया गया है परन्तु मैं उपयोगितावाद और अस्तित्ववाद दोनों को दार्शनिक पद्धति से बाह्य नहीं करना चाहता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि भारतवर्ष के सांख्य, वेदान्त, मीमांसा, योग न्याय और वैशेषिक आदि सभी वैदिक तथा जैन, बौद्ध और चार्वाक आदि सभी अवैदिक दर्शनों का मूलतः विकास उपयोगितावाद के आधार पर ही हुआ हैं इसलिये

मेरी मान्यता के अनुसार करणानुयोग को भी दार्शनिक पद्धति से बाह्य नहीं किया जा सकता है।

जगत क्या और कैसा है। जगत् में कितने पदार्थों का अस्तित्व है ? उन पदार्थों के कैसे -कैसे विपरिणाम होते हैं ? इत्यादि प्रश्नों के आधार पर प्रमाणों द्वारा पदार्थों के अस्तित्व और नास्तित्व के विषय में विचार करना अथवा पदार्थों के अस्तित्व या नास्तित्व को स्वीकार करना अस्तित्ववाद (वास्तविकतावाद) और जगत् के प्राणी दुःखी क्यों है ? वे सुखी कैसे हो सकते हैं ? इत्यादि प्रश्नों के आधार पर प्रमाण सिद्ध अथवा प्रमाणों द्वारा असिद्ध भी पदार्थों को पदार्थ व्यवस्था में स्थान देना उपयोगितावाद समझना चाहिये। संक्षेप में पदार्थों के अस्तित्व के बारे में विचार करना अस्तित्ववाद और पदार्थों की उपयोगिता के बारे में विचार करना उपयोगितावाद कहा जा सकता है। अस्तित्ववाद के आधार पर वे सब पदार्थ मान्यता की कोटि में पहुंचते हैं जिनका अस्तित्व मात्र प्रमाणों द्वारा सिद्ध होता हो, भले ही वे पदार्थ लोककल्याण के लिये उपयोगी सिद्ध नहीं अथवा उनका लोककल्याणपयोगिता से थोड़ा भी संबन्ध न हो और उपयोगितावाद के आधार पर वे सब पदार्थ मान्यता की कोटि में ध्यान पाते हैं जो लोक कल्याण के लिये उपयोगी सिद्ध होते हों भले ही उन का अस्तित्व प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो सकता हो अथवा उनके अस्तित्व की सिद्धि के लिये कोई प्रमाण उपलब्ध न भी हो।

दर्शनों में आध्यात्मिकता और आधिभौतिकता भेद दिखलाने के लिये उक्त उपयोगितावाद को ही आध्यात्मिकवाद और उक्त अस्तित्वाद को ही अधिभौतिकवाद कहना चाहिये क्योंकि आत्मकल्याण को ध्यान में रखकर पदार्थ प्रतिपादन करने का नाम आध्यात्मिकवाद और आत्मकल्याण की ओर लक्ष्य न देते हुये भूत अर्थात् पदार्थों के अस्तित्वमात्र को स्वीकार करने का नाम आधिभौतिकवाद मान लेना मुझे अधिक संगत प्रतीत होता है। जिन विद्वानों का यह मत है कि समस्त चेतन अचेतन जगत की सृष्टि अथवा विकास आत्मा से मानना आध्यात्मिकवाद और उपर्युक्त जगत की सृष्टि अथवा विकास अचेतन अर्थात् जड़ पदार्थ से मानना आधिभौतिकवाद और आधिभौतिकवाद के उनको मान्य अर्थ के अनुसार उन्होंने जो वेदान्तदर्शन को आध्यात्मिक दर्शन और चार्वाकदर्शन को आधिभौतिक दर्शन मान लिया है वह ठीक नही है। मेरा यह स्पष्ट मत है और जिसे मैं पहले लिख चुका हूँ कि सांख्य, वेदान्त, मीमांसा, योग , न्याय और वैशेषिक ये सभी वैदिक दर्शन तथा जैन, बौद्ध और चार्वाक ये सभी अवैदिक दर्शन पूर्वोक्त उपयोगिता वाद के आधार पर ही प्रादुर्भूत हुये हैं इसलिये ये सभी दर्शन आध्यात्मिकवाद के ही अन्तर्गत माने जाने चाहिये। उक्त दर्शनों में से किसी भी दर्शन का अनुयायी अपने दर्शन के बारे में यह आक्षेप सहन करने को तैयार नहीं हो सकता है कि उसके दर्शन का विकास लोककल्याण के लिये नहीं हुआ है और इसका भी समय यह है कि भारतवर्ष सर्वदा धर्मप्रधान देश रहा है इसलिये समस्त भारतीय दर्शनों का मूल आधार उपयोगितावाद मानना ही संगत है। इसका विशेष स्पष्टीकरण नीचे किया जा रहा है-

'लोककल्याण' शब्द में पठित लोक शब्द जगत् का प्राणिसमूह अर्थ में व्यवहृत होता हुआ देखा जाता है इसलिये यहां पर लोककल्याण शब्द से जगत के 'प्राणिसमूह का कल्याण' अर्थ ग्रहण करना चाहिये। कोई-कोई दर्शन प्राणियों के दृश्य और अदृश्य दो भेद स्वीकार करते हैं और

किन्हीं-किन्हीं दर्शनों में सिर्फ दृश्य प्राणियों के अस्तित्व को ही स्वीकार किया गया है। दृश्य प्राणी भी दो तरह के पाये जाते हैं - एक प्रकार के दृश्य प्राणी वे हैं जिनका जीवन प्रायः समष्टि प्रधान रहता है मनुष्य इन्हीं समष्टि प्रधान जीवन वाले प्राणियों में गिना गया है क्योंकि मनुष्यों के सभी जीवन व्यवहार प्रायः एक दूसरे मनुष्य की सद्भावना, सहानुभूति और सहायता पर ही निर्भर है मनुष्यों के अतिरिक्त शेष सभी दृश्य प्राणी पशु - पक्षी सर्प, विच्छू, कीट-पतंग वगैरह व्यष्टि प्रधान जीवन वाले प्राणी कहे जा सकते हैं क्योंकि इनके जीवन व्यवहारों में मनुष्यो जैसी परस्पर की सद्भावना, सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता प्रायः देखने में नहीं आती है। इस व्यष्टिप्रधान जीवन की समानता के कार ण ही इन पशु-पक्षी आदि प्राणियों को जैनदर्शन में तिर्यग् नाम से पुकारा जाता हैं कारण कि 'तियग्' शब्द का समानता अर्थ में भी प्रयोग देखा जाता है। सभी भारतीय दर्शनकारों ने अपने-अपने दर्शन के विकास में अपनी मान्यता के अनुसार यथायोग्य जगत् के इन दृश्य और अदृश्य प्राणियों के कल्याण का ध्यान अवश्य रक्खा है। चार्वाकदर्शन को छोड़कर उल्लिखित सभी भारतीय दर्शनों में प्राणियों के जन्मान्तररूप परलोक का समर्थन किया गया है इसलिये इन दर्शनों के आविष्कर्ताओं की लोककल्याण भावना के प्रति तो संदेह करने की गुंजाइश ही नहीं है लेकिन उपलब्ध साहित्य से जो थोड़ा बहुत चार्वाकदर्शन का हमें दिग्दर्शन होता है उससे उसके (चार्वाकदर्शन के) आविष्कर्ता की भी लोककल्याण भावना का पता हमें सहज ही में लग जाता है।

''श्रुतयो विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना,
नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य सत्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः ।।''

इस पद्य में हमें चार्वाकदर्शन की आत्मा का स्पष्ट आभास मिल जाता है। इस पद्य का आशय यह है कि धर्म मनुष्य के कर्त्तव्यमार्ग का नाम है और वह जय लोककल्याण के लिये है तो उसे अखण्ड एक रूप होना चाहिये, नाना रूप नहीं लेकिन धर्म तत्व की प्रतिपादक श्रुतियां और स्मृतियां नाना और परस्पर विरोधी अर्थ को कहने वाली देखी जाती हैं। हमारे धर्मप्रवर्तक महात्माओं ने भी धर्मतत्व का प्रतिपादन एक रूप से न करके भिन्न भिन्न रूप से किया है इसलिये इनके (धर्मप्रवर्तक महात्माओं के) वचनों को भी सर्वसम्मतप्रमाण मानना असंभव है ऐसी हालत में धर्मतत्व साधारण मनुष्यों के लिये गूढ़ पहेली बन गया है अर्थात् धर्मतत्व को समझने में हमारे लिये श्रुति, स्मृति या कोई भी धर्म-प्रवर्तक सहायक नहीं हो सकता है इसलिये धर्मतत्व की पहेली में न उलझ करके हमें अपने कर्त्तव्यमार्ग का निर्णय महापुरुषों के कर्तव्यमार्ग के आधार पर ही करते रहना चाहिये तात्पर्य यह है कि महापुरुषों का प्रत्येक कर्तव्य स्व पर कल्याण के लिये ही होता है इसलिये हमारा जो कर्तव्य स्व पर कल्याण विरोधी न हो उसे ही अविवाद रूप से हमको धर्म समझ लेना चाहिये।''

मालूम पड़ता है कि चार्वाक दर्शन के आविष्कर्ता का अन्तः करण अवश्य ही धर्म के बारे में पैदा हुये लोककल्याण के लिये खतरनाक मतभेदों से उठ चुका था इसलिये उसने लोक के समक्ष

इस बात को रखने का प्रयत्न किया था कि जन्मान्तर रूप परलोक, स्वर्ग और नरक तथा मुक्ति की चर्चा- जो कि विवाद के कारण जनहित की घातक हो रही है- को छोड़कर हमें केवल ऐसा मार्ग चुन लेना चाहिये जो जनहित का साधक हो सकता है और ऐसे कर्त्तव्य मार्ग में किसी को भी विवाद करने की कम गुंजाइश रह सकती है।

''यावज्जीवं सुखी जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुरागमनं कुतः ।।''

यह जो चार्वाक दर्शन की मान्यता बतलाई जाती है वह भ्रममूलक जान पड़ती है अर्थात् यह उन लोगों का चार्वाक दर्शन के बारे में आक्षेप है जो सांप्रदायिक विद्वेप के कारण चार्वाकदर्शन को सहन नहीं कर सकते थे।

समस्त दर्शनों में बीजरूप से इस उपयोगितावाद को स्वीकार लेने पर ये सभी दर्शन जो एक दूसरे के अत्यन्त विरोधी मालूम पड़ रहे हैं ऐसा न होकर अत्यन्त निकटतम मित्रों के समान दिखने लगेंगे अर्थात् उक्त प्रकार से चार्वाक दर्शन में छिपे हुये उपयोगितावाद को रहस्य को समझ लेने पर कौन कह सकता है कि उसका (चार्वाकदर्शन का) परलोकादि के बारे में दूसरे दर्शनों के साथ जो मतभेद है वह खतरनाक है क्योंकि जहाँ दूसरे दर्शन परलोकादिको आधार मानकर हमें मनुष्योंचित कर्त्तव्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा करते हैं वहाँ चार्वाक दर्शन सिर्फ वर्तमान जीवन को सुखी बनाने के उद्देश्य से ही हमें मानयोचित कर्तव्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा करता है। चार्वाकदर्शन की इस मान्यता का दूसरे दर्शनों की मान्यता के साथ समानता में हेतु यह है कि परलोकादि अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद भी सभी दर्शनकारों को इस वैज्ञानिक सिद्धांत पर आना पड़ता है कि ''मनुष्य अपने वर्तमान जीवन में अच्छे कृत्य करके ही परलोक में सुखी हो सकता है या स्वर्ग पा सकता है।'' इसलिये चार्वाक मत का अनुयायी यदि अपने वर्तमान जीवन में अच्छे कृत्य करता है तो परलोक या स्वर्ग के अस्तित्व को न मानने मात्र से उसे परलोक में सुख या स्वर्ग पाने से कौन रोक सकता है ? अन्यथा इसी तरह नरक का अस्तित्व न मानने के समय पाप करने पर भी उसका नरक में जाना कैसे संभव हो सकेगा ? तात्पर्य यह है कि एक प्राणी नरक के अस्तित्व को न मानते हुये भी बुरे कृत्य करके यदि नरक जा सकता है तो दूसरा प्राणी स्वर्ग के अस्तित्व को न मानते हुये अच्छे कृत्य करके स्वर्ग भी आ सकता है। परलोक तथा स्वर्गादि के अस्तित्व को न मानने वाला व्यक्ति अच्छे कृत्य कर ही नहीं सकता है यह बात कोई भी विवेकी व्यक्ति मानने को तैयार न होगा कारण कि हम पहले बतला आये हैं कि मनुष्य जीवन परस्पर की सद्भावना, सहानुभूति और सहायता के आधार पर ही सुखी हो सकता है। यदि एक मनुष्य को अपना जीवन सुखी बनाने के लिये संपूर्ण साधन उपलब्ध हैं और दूसरा उसका पड़ौसी मनुष्य चार दिन से भूखा पड़ा हुआ है तो ऐसी हालत में या हो पहले व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के बारे में सहायता के रूप में अपना कोई न कोई कर्त्तव्य निश्चित करना होगा अन्यथा नियम से दूसरा व्यक्ति पहिले व्यक्ति के सुखी जीवन को ठेस पहुंचाने का निमित्त बन जायेगा। तात्पर्य यह है कि हमें परलोक की मान्यता से अच्छे कृत्य करने की जितनी प्रेरणा मिल सकती है उसमें भी कहीं अधिक प्रेरणा वर्तमान जीवन को सुखी बनाने की आकांक्षा से मिलती है, चार्वाकदर्शन का अभिप्राय इतना ही है।

बौद्धों के क्षणिकवाद और ईश्वकर्तृत्ववादियों के ईश्वर कर्तृत्ववाद में भी यही उपयोगितावाद का रहस्य छिपा हुआ है। बौद्ध दर्शन में एक वाक्य पाया जाता है। **'' वस्तुनि क्षणिकत्वपरिकल्पना आत्मबुद्धिनिरासार्थम्''** अर्थात पदार्थों में जगत् के प्राणियों के अनुराग, द्वेष और मोह को रोकने के लिये ही बौद्धों ने पदार्थों की अस्थिरता का सिद्धांत स्वीकार किया है। इसी प्रकार जगत का कर्ता अनादि निधन एक ईश्वर को मान लेने से संसार के बहुजन समाज को अपने जीवन के सुधार में काफी प्रेरणा मिल सकती है। तात्पर्य यह है कि एक व्यक्ति पदार्थों की क्षणभंगुरता स्वीकार करके उनसे विरक्त होकर यदि आत्म कल्याण की खोज कर सकता है और दूसरा व्यक्ति ईश्वर को कर्त्ता धर्ता मान करके उसके भय से यदि अनर्थों से बच सकता है। तो इस तरह उन दोनों व्यक्तियों के लिये क्षणिकत्ववाद और ईश्वकर्तृत्ववाद दोनों की उपयोगिता स्वयं सिद्ध हो जाती है। इसलिये इन दोनों मान्यताओं औचित्य के बारे ''पदार्थ क्षणिक हो सकता है या नहीं ? जगत का कर्ता ईश्वर है या नहीं ?'' इत्यादि प्रश्नों के आधार पर विचार न करके '' क्षणिकत्ववाद अथवा ईश्वरकर्तृत्व लोककल्याण के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं या नहीं ?'' इत्यादि प्रश्नों के आधार पर ही विचार करना चाहिये।

सौख्य और वेदान्तदर्शनों की पदार्थ मान्यता में उपयोगितावाद की स्पष्ट झलक दिखाई देती है- इसका स्पष्टीकरण षट्द्रव्यमान्यता के प्रकरण में किया जायेगा।

मीमांसादर्शन का भी आधार मनुष्यों को स्वर्ग प्राप्ति के उद्देश्य से योगादि कार्यों में प्रवृत्त कराने रूप उपयोगितावाद ही है, तथा जैनदर्शन में तो उपयोगितावाद के आधार सप्ततत्वमान्यता और अस्तित्वाद के आधार पर षड्द्रव्यमान्यता इस प्रकार पदार्थव्यवस्था को ही अलग-अलग दो भागों में विभक्त कर दिया गया है।

इस तरह समस्त भारतीय दर्शनों में मूल रूप से उपयोगितावाद के विद्यमान रहते हुये भी अफसोस है कि धीरे धीरे सभी दर्शन उपयोगितावाद के मूलभूत आधार से निकलकर अस्तित्ववाद के उदर में समा गये अर्थात् प्रत्येक दर्शन में अपनी व दूसरे दर्शन की प्रत्येक मान्यता के विषय में अमुक मान्यता लोककल्याण के लिये उपयोगी है या नहीं ? इस दृष्टि से विचार न होकर अमुक मान्यता संभव हो सकती है या नहीं ? इस दृष्टि से विचार होने लग गया और इसका यह परिणाम हुआ कि सभी दर्शनकारों ने अपने-अपने दर्शनों के भीतर उपयोगिता और अनुपयोगिता की ओर ध्यान न देते हुये अपनी मान्यता को संभव और सत्य तथा दूसरे दर्शनकारों की मान्यता को असंभव और असत्य सिद्ध करने का दुराग्रहपूर्ण एवं परस्पर कलह पैदा करने वाला ही प्रयास किया है।

3. सप्ततत्त्व- ऊपर बतलाये गये दर्शनों में परलोक, स्वर्ग, नरक और मुक्ति की मान्यता के विषय में जो मतभेद पाया जाता है उसके आधार पर उन दर्शनों में लोक-कल्याण की सीमा भी यथासंभव भिन्न-भिन्न प्रकार से निश्चित की गयी है। चार्वाकदर्शन में प्राणियों का जन्मान्तर रूप परलोक, पुण्य का फल परलोक में सुख प्राप्ति स्थान स्वर्ग, पाप का फल परलोक में दुःखप्राप्ति स्थान नरक और प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुःख की परंपरारूप संसार का सर्वथा विच्छेद स्वरूप निःश्रेयस का स्थान मुक्ति इन तत्त्वों की मान्यता नहीं है इसलिये यहाँ पर

लोककल्याण की सीमा प्राणियों के और विशेषकर मानव समाज के वर्तमान जीवन की सुख-शान्ति को लक्ष्य करके ही निर्धारित की गयी है और इसी लोककल्याण को ध्यान में रखकर के ही वहाँ पदार्थों की व्यवस्था को स्थान दिया गया है। मीमांसादर्शन में यद्यपि प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुःख की परंपरारूप संसार का सर्वथा विच्छेद स्वरूप निःश्रेयस और उसका स्थान मुक्ति इन तत्वों की मान्यता नहीं हैं वहाँ पर स्वर्ग सुख को ही निःश्रेयस पद का और स्वर्ग को ही मुक्ति पद का वाच्य स्वीकार किया गया है फिर भी प्राणियों का जन्मानतर रूप परलोक, पुण्य का फल परलोक में सुख प्राप्ति का स्थान स्वर्ग और पाप का फल परलोक में दुःखप्राप्ति स्थान नरक इन तत्वों को वहाँ अवश्य स्वीकार किया गया है इसलिये वहाँ पर लोक कल्याण की सीमा प्राणियों के वर्तमान (ऐहिक) जीवन के साथ-साथ परलोक की सुख-शान्ति को ध्यान में रखकर निर्धारित की गई है और इसी लोक कल्याण को रखकर के ही वहाँ पदार्थ व्यवस्था को स्थान दिया गया है। चार्वाक और मीमांसा दर्शनों के अतिरिक्त शेष उल्लिखित वैदिक और अवैदिक सभी दर्शनों में उक्त प्रकार के परलोक, स्वर्ग और नरक की मान्यता के साथ-साथ प्राणियों के जन्म मरण अथवा सुख-दुःख की परंपरा रूप संसार का सर्वथा विच्छेद स्वरूप निःश्रेयस और निःश्रेयस का स्थान मुक्ति की मान्यता को भी स्थान प्राप्त है इसलिये इन दर्शनों में लोक कल्याण की सीमा प्राणियों के ऐहिक और पारलौकिक सुख शान्ति के साथ साथ उक्त निःश्रेयस और मुक्ति को भी ध्यान में रखते हुये निर्धारित की गयी है और इसी लोक कलयाण के आधार पर ही इन दर्शनों में पदार्थ व्यवस्था को स्वीकार किया गया है।

तात्पर्य यह है कि चार्वाक दर्शन को छोड़कर परलोक को मानने वाले मीमांसा दर्शन में और परलोक के साथ-साथ मुक्ति को भी मानने वाले सांख्य, वेदान्त, योग, न्याय, वैशेषिक जैन और बौद्ध दर्शनों में जगत् के प्रत्येक प्राणी के शरीर में स्वतंत्र और शरीर के साथ घुल-मिल करके रहने वाला एक चित्शक्ति विशिष्ट तत्वों की स्वतंत्र अनादि सत्ता स्वीकार करते हैं अर्थात कोई दर्शन उनकी नित्य और व्यापक ईश्वर या परब्रह्म में उत्पत्ति स्वीकार करके एक-एक चित् शक्ति विशिष्ट तत्व को उक्त ईश्वर या पर ब्रह्म का एक एक अंश मानते हैं उन्हें मूलतः पृथक-पृथक नहीं मानते हैं। सांख्य मीमांसा आदि कुछ दर्शनों के साथ साथ जैन दर्शन भी संपूर्ण चित् शक्ति विशिष्ट तत्वों की स्वतंत्र अनादि स्वीकार करके उन्हें परम्पर भी पृथक पृथक ही मानता है।

उक्त प्रकारर से चित् शक्ति विशिष्ट तत्व की सत्ता को स्वीकार करने वाले सांख्य, वेदान्त, मीमांसा, योग, न्याय, वैशेषिक, जैन और बौद्ध ये सभी दर्शन प्राणियों को समय समय पर होने वाले सुख तथा दुख का भोक्ता उन प्राणियों के अपने-अपने शरीर में रहने वाले चित् शक्ति विशिष्ट तत्व को ही स्वीकार करते हें सभी दर्शनों की इस समान मूलमान्यता के आधार पर उनमें (सभी दर्शनों में) समान रूप से निम्नलिखित चार सिद्धांत स्थिर हो जाते हैं-

1. प्रत्येक प्राणी के अपने अपने शरीर में मौजूद तथा भिन्न भिन्न दर्शनों में पुरुष, आत्मा, जीव, जीवात्मा, ईश्वरांश या परब्रह्मांश आदि यथायोग्य भिन्न भिन्न नामों से पुकारे जाने वाले प्रत्येक चित् शक्ति विशिष्ट तत्व का अपने अपने शरीर के साथ आबद्ध होने का कोई न कोई कारण अवश्य है।

2. जब कि प्राणियों के उल्लिखित विशिष्ट व्यापारों के प्रादुर्भाव और सर्वथा विच्छेद के आधार पर प्रत्येक चित् शक्ति विशिष्ट तत्व की अपने-अपने वर्तमान शरीर के साथ प्राप्त हुई बद्धता का जन्म और मरण के रूप में आदि तथा अन्त देखा जाता है तो मानना पड़ता है कि ये सभी चित् शक्ति विशिष्ट तत्व सीमित काल तक ही अपने-अपने वर्तमान शरीर में आबद्ध रहते हैं ऐसी हालत में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि अपने-अपने वर्तमान शरीर के साथ आबद्ध होने से पहिले ये चित् शक्ति विशिष्ट तत्व किस रूप में विद्यमान रहे होंगे ? यदि कहा जाये कि अपने अपने वर्तमान शरीर के आबद्ध होने से पहिले वे सभी चित शक्ति विशिष्ट शरीर के बन्धन से रहित बिल्कुल स्वतंत्र थे तो उठता है कि इन्हें अपने-अपने वर्तमान शरीर के आबद्ध होने का कारण अकस्मात् कैसे प्राप्त हो ? इस प्रश्न का उचित समाधान न मिल सकने के कारण चित् शक्ति विशिष्ट तत्व की सत्ता को स्वीकार करने को उक्त सभी दर्शनो में यह बात स्वीकार की गयी अपने अपने वर्तमान शरीर के साथ आबद्ध से पूर्व भी ये सभी चित्शक्ति विशिष्टतत्व किसी अपने अपने शरीर के साथ आबद्ध हो रहे होंगे और उसे भी पूर्व किसी दूसरे-दूसरे अपने-अपने शरीर के साथ अबद्ध रहे होंगे इस प्रकार सभी चित्शक्तिविशिष्ट की शरीर बद्धता की यह पूर्व परंपरा इनकी स्वतंत्र अनादि सत्ता स्वीकार करने वाले दर्शनों की अपेक्षा अनादिकाल तक और ईश्वर या परमब्रह्म से इनकी उत्पत्ति स्वीकार करने वाले दर्शनों की अपेक्षा ईश्वर परमब्रह्म से जय से इनकी उत्पत्ति स्वीकार की गयी तब तक माननी पड़ती है।

3. चित्शक्ति विशिष्टतत्वों की शरीर बद्धता का कारण उनका स्वभाव है- यह मानना असंगत है कारण कि एक तो एकभाव परतंत्रता का कारण ही नहीं हो सकता है। दूसरे स्वभाव से प्राप्त हुई परतंत्रता की हालत में उन्हें दुःखानुभवन नहीं होना चाहिये। लेकिन दुःखानुभवन होता है इसलिये सभी चित्शक्ति विशिष्ट की शरीर बद्धता का करण स्वभाव से भिन्न किसी दूसरी चीज को ही मानना युक्तियुक्त जान पड़ता है और इसीलिये सांख्य दर्शन में त्रिगुणात्मक (सत्वरजस्तमोगुणात्मक) उचित प्रकृति को, वेदान्त दर्शन में असत् कही जाने वाली अविद्या को, मीमांसा दर्शन में चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों में विद्यमान अशुद्धि (दोष) को, ईश्वरकर्तृत्वादी योग, न्याय और वैशेषिक दर्शनों में इच्छा, ज्ञान और कृति शक्तित्रय विशिष्ट ईश्वर को, जैनदर्शन में अचित् कर्म (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि द्रव्यों का सजातीय पौद्गलिक वस्तुविशेष) को और बौद्धदर्शन में विपरीताभिनिवेश स्वरूप अविद्या को उसका कारण स्वीकार किया गया है। इनमें से योग न्याय और वैशेषिक दर्शनों में माना गया ईश्वर उनकी मान्यता के अनुसार चित्शक्ति विशिष्टतत्वों के साथ असंबद्ध रहते हुये भी उनके मन, वचन और शरीर संबन्धी पुण्य एवं पापरूप कृत्यों के आधार पर सुख तथा दुःख के भोग में सहायक शरीर के साथ उन्हें आबद्ध करता रहता है। शेष सांख्य आदि दर्शनों में चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की शरीरबद्धता में माने गये प्रकृति आदि कारण उन चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों के साथ किसी न किसी रूप में संबद्ध रहते हुये ही उनके मन, वचन और शरीर संबन्धी पुण्य एवं पाप रूप कृत्यों के आधार पर सुख तथा दुःख के भोग में सहायक शरीर के साथ उन्हें आबद्ध करते रहते हैं। इसी प्रकार चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की शरीरबद्धता की जिस पूर्व परंपरा का उल्लेख पहले किया जा चुका है उसकी संगति के लिये योग,

न्याय और वैशेषिक दर्शनों में ईश्वर को शाश्वत (अनादि और अनिधन) मान लिया गया है तथा एक जैनदर्शन को छोड़कर शेष सांख्य आदि सभी दर्शनों में चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों के साथ प्रकृति आदि के संबन्ध को यथायोग्य अनादि अथवा ईश्वर या परमब्रह्म से उनकी (चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की) उत्पत्ति होने के समय से स्वीकार किया गया है। जैनदर्शन में चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की शरीरबद्धता में कारणभूत कर्म के संबन्ध को तो सादि स्वीकार किया गया है परंतु उनकी उस शरीरबद्धता की पूर्वोक्त अविच्छिन्न परम्परा की संगति के लिये वहां पर (जैन दर्शन में) शरीर सम्बंध की अविच्छिन्न अनादि परम्परा की तरह उसमें कारणभूत कर्मसम्बंध की भी अविच्छिन्न अनादि परंपरा को स्वीकार किया गया है और इसका आशय यह है कि यदि चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की शरीरबद्धता में कारणभूत उक्त कर्मसंबन्ध को अनादि माना जायेगा तो उस कर्मसम्बंध को कारण रहित स्वाभाविक ही मानना होगा, लेकिन ऐसा मानना इसलिये असंगत है कि इस तरह से प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुःख की परंपरास्वरूप संसार का सर्वथा विच्छेद के अभाव का प्रसंग प्राप्त होगा जो कि सांख्य, वेदान्त, योग न्याय, वैशेषिक जैन और बौद्ध इन दर्शनों में किसी भी दर्शन को अभीष्ट नहीं है। मीमांसा दर्शन में जो प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुख की परंपरा रूप संसार का सर्वथा विच्छेद नहीं स्वीकार किया गया है उसका सबब यही है कि वह चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों में विद्यमान अशुद्धि के संबन्ध को अनादि होने के समय कारण रहित स्वाभाविक स्वीकार करता है। परन्तु जो दर्शन प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुःख की परंपरा स्वरूप संसार का सर्वथा विच्छेद स्वीकार करते हैं उन्हें चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की शरीरबद्धता में कारणरूप से स्वीकृत पदार्थ के सम्बंध को कारण सहित अस्वाभाविक ही मानना होगा और ऐसा तभी माना जा सकता है जय कि उस सम्बंध को सादि माना जायेगा। यही सच है कि जैनदर्शन में मान्य प्राणियों के जन्म-मरण अथवा सुख-दुःख की परम्परा स्वरूप संसार के सर्वथा विच्छेद की संगति के लिये वहां पर (जैनदर्शन में) शरीर संबन्ध में कारणभूत कर्म के सम्बंध को तो सादि माना गया है और शरीर सम्बंध की पूर्वोक्त अनादि परम्परा की संगति के लिये उस कर्म सम्बंध की भी अविच्छिन्न परंपरा को अनादि स्वीकार किया गया है। इसकी व्यवस्था जैनदर्शन में निम्न प्रकार बतलायी गयी है-

जैनदर्शन में कार्माण वर्गणा नाम का चित्शक्ति से रहित तथा रूप, रस गंध और स्पर्श गुणों से युक्त होने के कारण पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु तत्वों का सजातीय एक पौद्गलिक तत्व स्वीकार किया गया है। यह तत्व बहुत ही सूक्ष्म है और पृथ्वी आदि तत्वों की ही तरह नाना परमाणुपुंजों में विभक्त होकर समस्त लोकाकांश में सर्वदा अविस्थत रहता है। प्राणियों की मन, वचन और शरीर के जरिये पुण्य एवं पापरूप कार्यों में जो प्रवृत्ति देखी जाती है उस प्रवृत्ति से उस कार्माणवर्गणा के यथायोग्य बहुत से परमाणुओं के पुंज के पुंज उन प्राणियों के शरीर में रहने वाले चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों के साथ चिपट जाते हैं अर्थात् अग्नि से तपा हुआ लोहे का गोला पानी के बीच में पड़ जाने से जिस प्रकार चारों ओर से पानी को खींचता है। उसी प्रकार अपने मन, वचन और शरीर सम्बंध पुण्य एवं पापरूप कृत्यों द्वारा गरम हुआ (प्रमादिक) उक्त चित्शक्ति विशिष्टतत्व समस्त लोक में कार्माण वर्गणा के बीच में पड़ जाने के कारण चारों ओर से उस

कार्माण वर्गणा के यथायोग्य परमाणु पुंजों को खींच लेता है और इस तरह से अर्थात वर्गणा के जितने परमाणुपुंज जब तक चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों के साथ चिपटे रहते हैं तब तक उनको जैनदर्शन में 'कर्म' नाम से पुकारा जाता है तथा इन कर्म से प्रभावित होकर के ही प्रत्येक प्राणी अपने मन वचन और शरीर द्वारा पुण्य एवं पापरूप कृत्य नित्य करता है अर्थात् प्राणियों की उक्त पुण्य एवं पाप का कार्यों में प्रवृत्ति कराने वाले ये कर्म ही हैं। प्राणियों की पुण्य एवं पापरूप कार्यों में प्रवृत्ति करा देने के लिये इन कर्मों का प्रभाव नष्ट हो जाता है और ये हालत में चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों से पृथक होकर अपने वही पुराना कार्माणवर्गणा का रूप अथवा पृथ्वी आदि स्वरूप दूसरा और कोई पौद्गलिक रूप धारण कर लेते हैं।

यहां पर यह खासतौर से ध्यान में रखने लायक बात है कि इन कर्मों के प्रभाव से प्राणियों की जो उक्त पुण्य एवं पाप रूप कार्यों में प्रवृत्ति हुआ करती है उन प्रवृत्ति से उन प्राणियों के अपने-अपने शरीर में रहने वाले चित्शक्तिविशिष्टतत्व कार्माण वर्गणा के दूसरे यथा योग्य परमाणु जो के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं और इस तरह से चित्शक्तिविशिष्टतत्वों की पूर्वोक्त शरीरसम्बंधपरंपरा की तरह उसमें कारणभूत कर्म सम्बंध की परंपरा भी अनादिकाल से अविच्छिन्नरूप चली आ रही है। अर्थात् जिस प्रकार वृक्ष से बीज और बीज से वृक्ष की उत्पत्ति होते हुये भी उनकी परंपरा अनादिकाल से अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है उसी प्रकार कर्मसम्बंध से चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों का शरीर के साथ सम्बंध होता है इस संबद्धशरीर की सहायता से प्राणी पुण्य एवं पाप रूप कार्य किया करते हैं उन कार्यों से उनके साथ पुनः कर्मों का बन्ध हो जाता है और कर्मों का यह परंपरा अनादिकाल में अविच्छिन्न रूप में चली जा रही है।

इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शरीर कि साथ चित्शक्ति विशिष्ट तत्वों के आबद्ध होने का कारण सांख्य, वेदान्त, मीमांसा, योग, न्याय वैशेषिक जैन और बौद्ध इन सभी दर्शनों में स्वरूप तथा कारणता के प्रकार की अपेक्षा यद्यपि यथायोग्य सत्चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों के आबद्ध होने के कारण अतिरिक्त पदार्थ है।

उल्लिखित तीन सिद्धांतों के साथ-साथ एक चौथा जो सिद्धांत इन दर्शनों में स्थिर होता है वह यह है कि जब चित्शक्तिविशिष्ट तत्वों का शरीर के साथ संबद्ध होना उनसे अतिरिक्त कारण के अधीन है तो इस शरीरसंबंधपरंपरा का उक्त कारण के साथ-साथ मूलतः विच्छेद भी किया जा सकता है। परन्तु इस चौथे सिद्धांत को मीमांसादर्शन में नहीं स्वीकार किया गया है क्योंकि पहिले बतलाया जा चुका है कि मीमांसा दर्शन में शरीरसंबंध में कारणभूत अशुद्धि के संबंध को अनादि होने के समय अकारण स्वीकार किया गया है इसलिये उसकी मान्यता के अनुसार इस संबंध का सर्वथा विच्छेद होना असंभव है।

इन सिद्धांतों के फलित अर्थ के रूप में निम्नलिखित पाँच तत्व कायम किये जा सकते हैं- 1. नाना चित्शक्तिविशिष्ट तत्व, 2. इनका शरीर संबंध परंपरा अथवा सुख-दुःख परंपरारूप संसार, 3. संसार का कारण, 4. संसार का सर्वथा विच्छेद स्वरूपमुक्ति और 5. मुक्ति का कारण।

क्रमशः अगले अंक में

क्या लिखें क्या छोड़ें

एक युग थे- परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी

✻ राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद ✻

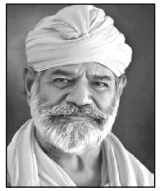

जैन जगत में दिगम्बर-श्वेताम्बर, बीस पंथ-तेरहपंथ, तारणपंथ, पंथ, मुमुक्षु कहान पंथ, प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज परम्परा अंकलीकर आचार्य श्री आदिसागर जी परम्परा, आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज की परम्परा उत्तर भारत, दक्षिण भारत अन्तर्राष्ट्रीय जैन जगत में यदि एक शब्द में कहे कि अनेकांत-स्याद्वादवादी जैन यदि कोई थे तो वे परमपूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी भट्टारक महास्वामी श्रवणबेलगोला कर्नाटक ही थे। अपनी चर्या के प्रति दृढ़ निश्चयी, गोम्टेश भगवान बाहुबली के प्रति अपूर्व स्नेही, प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशील, शिक्षा स्वास्थ्य, समुन्नति के प्रतीक, प्रत्येक पार्टी, दल के पूज्यनीय, जन जन में आदर भाव के प्रतीक, श्रवणबेलगोला तीर्थ को अन्तर्राष्ट्रीय सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण करने वाले शून्य से शिखर तक की यात्रा में अपने तन-मन को लगाकर देश के समस्त आचार्य संघ मुनि संघ के साथ विद्वान पत्रकार, सम्पादक, श्रेष्ठी आर्थिक सम्पन्न, आर्थिक विपन्न सभी के लिये अपनत्व भाव रखने वाले युग श्रेष्ठ व्यक्तित्व जिनके बारे में क्या लिखे-क्या नहीं लिखे मन में अश्रुपूरित भाव के साथ इतने विचार आ रहे है कि कैसे कह दूं, कैसे मान लूं कि परमपूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी भट्टारक महास्वामी जी ने 23 मार्च 23 की प्रातः बेला में अपनी देह को त्याग कर महाप्रयाण कर लिया। नूतन नववर्ष के बाद पहले दिन गुरुवार को वे हम सबको जैन दर्शन का शाश्वत सत्य बताते हुये आत्म दर्शन की महायात्रा में चले गये। जब से खबर मिली है सोच रहा हूँ क्या लिखूँ कहा से प्रारंभ करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा फिर भी मैं कुछ बातें कम शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश कर अपने लेखकीय उत्तरदायित्व को पूर्ण करने का प्रयास कर रहा हूँ-

- जन्म- 3 मई 1949 तीर्थ क्षेत्र वारंग कर्नाटक
- जन्मनाम- रत्न वर्मा
- श्रावक श्रेष्ठ श्रीमती कांते श्रीचंद्रराज के घर शुभ नक्षत्र, शुभ बेला में जन्म।
- धार्मिक संस्कार हेतु हुमचा मठ में अध्ययन हेतु प्रवेश।
- श्रवणबेलगोला तीर्थ के भट्टारक जी पूज्य श्री भट्टाकलंक जी को अपने उत्तराधिकारी की आवश्यकता।
- अनेकों कुण्डलियों में रत्न वर्मा के प्रतिजगा विश्वास।
- 12 दिसम्बर 1969 में भट्टारक दीक्षा।
- 19 अप्रैल 1970 को वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर जन्म कल्याणक अवसर पर श्रवणबेलगोला श्री क्षेत्र के उत्तराधिकारा के रूप में पट्टभिषेक।
- आर्थिक रूप से अति विपन्न श्रवणबेलगोला तीर्थ को समुन्नत बनाने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी मात्र 20 वर्ष की उम्र में।
- तीर्थ पर आर्थिक बैलेंस नहीं, सुविधायें नहीं ऐसे अवसर पर 20 वर्षीय युवा पर आई अनेकों जिम्मेदारियाँ।
- पहले अध्ययन करने का निर्णय देश के श्रेष्ठ विद्वानों, आचार्यों के साथ जैनदर्शन का अध्ययन।
- जैन धर्म के ज्ञाता बने 1976 में सिंगापुर की यात्रा कर धर्म प्रभावना।

अमेरिका, वर्मा, अफ्रीका, इंग्लैंड, थाईलैंड में धर्म प्रभावना।

- लौकिक पढ़ाई में अव्वल मैसूर विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में मास्टर ऑफ आर्ट।

- कन्नड़ के साथ भाषा हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी व हिन्दी में साहित्य विशारद, संस्कृत साहित्य में विशारद।

- जन मंगल कलश प्रवर्तन व भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण कल्याणक में अपना उल्लेखनीय योगदान।

- आचार्य श्री विद्यानंद जी के सान्निध्य से आयोजनों की रूपरेखा में योगदान।

- गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा के एक हजार वर्ष पूर्व1981 में ।

- महामस्तकाभिषेक के साथ भगवान की प्रतिमा सहस्त्राब्दी महोत्सव का अयोजन।

- अभूतपूर्व प्रतिमा का महामहोत्सव व 1981 में सहस्त्राब्दी महोत्सव 20वीं सदी का अनुपम आयोजन बनाया।

- सम्पूर्ण विश्व में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की प्रभावना व अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में चर्चा के साथ विश्व भर से आये दर्शनार्थी।

- 1981 के सफल आयोजन की ऐसी छाप बनी कि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रिरा गांधी ने कर्मयोगी की उपाधि से सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया।

- सम्पूर्ण देश ऐसी अद्भुत धर्म प्रभावना हुई कि देश के ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में भगवान बाहुबली की प्रतिमायें स्थापित होना प्रारंभ हुईं।

- 1988 में इंग्लैंड के शहर लेस्टर में भगवान बाहुबली की प्रतिमा का पंचकल्याण पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन में हुआ।

- 1981 के महोत्सव में 149 संतों का सान्निध्य।

- 1981 से 1992 तक श्रवणबेलगोला व आसपास 20 से अधिक शिक्षण संस्थाएँ जिनमें विद्यालय, महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग, नर्सिंग कॉलेज आदि का निर्माण व सफल संचालन।

1993 में 12 वर्षीय महामस्तकाभिषेक हेतु, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी को आमंत्रण।

1993 में गोम्मटेश के महामस्तकाभिषेक में 250 से अधिक पिच्छी धारी स्वामी जी के वात्सल्य आमंत्रण पर पहुँचे।

- प्राकृत भाषा को बढ़ावा देने के लिये राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्रवणबेलगोला की स्थापना।

कन्नड़ ग्रंथों, प्राकृत ग्रंथों का अनुवाद धवला-जय धवला ग्रंथों का अनुवाद कराकर जिनवाणी की अनुपम सेवा।

- बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के माध्यम से प्राकृत भाषा को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प।

श्रवणबेलगोला में यात्री सुविधाओं का विस्तार।

भारत सरकार व कर्नाटक सरकार से।

हर संभव मदद हेतु कार्य योजना।

- 2006 में पुनः स्वयं के निर्देशन में तीसरे महामस्तकाभिषेक का आयोजन।

आयोजन में संतों की निरंतर बढ़ती उपस्थिती पहुँचे लगभग 300 से अधिक पिच्छी धारी साधु।

आयोजन पूर्व श्रवणबेलगोला को आदर्श ग्राम बनाकर खुले में शौच से मुक्त करने के साथ ग्राम का चहुँमुखी विकास कराया।

- गोम्मटेश बाहुबली बाल चिकित्सालय का निर्माण आर.के.मार्बल परिवार की ओर से।

- मोबाईल त्याग के साथ आदर्श चर्या का अनुपम उदाहरण व स्वकल्याण की जागरूकता के प्रति सचेत।

जन-जन तक स्वास्थ्य सुविधा हेतु मोबाईल अस्पताल।

- कर्नाटक के जन-जन में बाहुबली भगवान के प्रति समर्पण का भाव जगाकर अहिंसा धर्म की प्रभावना।

- गोम्मटेश भगवान बाहुबली की प्रतिमा की सुरक्षा के लिये आस-अपास के पांच किलोमीटर एरिया में खनन ब्लास्टिंग कार्य पर रोक लगाने में सफलता।

श्रवणबेलगोला पहुंचने वाले साधु संतों का अभूतपूर्व स्वागत के साथ आगवानी व अनुपम विनम्रता भाव।

- बड़े छोटे, सभी विद्वानों के प्रति अनुपम वात्सल्य के साथ उनका यथायोग्य सम्मान मेरे विचार से केवल श्रवणबेलगोल के स्वामी जी ही करते रहे।

- 2018 का महामस्तकाभिषेक अन्तर्राष्ट्रीय जगत के लिये मिसाल।

- अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में जैनदर्शन दिगम्बरत्व व गोम्मटेश के प्रति आदर भाव।

- गोम्मटेश के संदेश अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति, ध्यान से सिद्धि को जन-जन तक पहुंचाने के सफल कर्मयोद्धा।

- महामस्तकाभिषेक हेतु बेंगलौर से श्रवणबेलगोला रेलवे लाईन का शुभारंभ कराया।

- 2018 के महामस्तकाभिषेक में रिकार्ड तोड़ 35 आचार्य के साथ लगभग 400 पिच्छी धारी संतों का सान्निध्य का अनुपम उदाहरण।

स्वामी जी का स्वप्न श्रवणबेलगोला में प्राकृत विश्वविद्यालय का काम प्रारंभ हुआ।

श्रवणबेलगोल के रत्न के रूप में कर्नाटक सरकार ने भगवान महावीर शांति पुरुस्कार व दस लाख की राशि से सम्मान।

2018 में महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्षा के रूप में श्राविका शिरोमणि श्रीमती सरिता एम.के.जैन चेन्नई का मनोनयन, इतिहास में पहली बार किसी महिला को यह दायित्व सौपा।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तं गोम्मटेशं पणमामि णिच्चं के साथ स्वामी जी को महान व्यक्तित्व बताया।

परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज जिन्होंने लगातार तीन बार महामस्तकाभिषेक में सान्निध्य प्रदान किया उनके प्रति कहते हैं कि आयोजन की सफलता उनके नाम जुड़ने से ही हो जाती है उनका निश्छल भाव उन्हें गोम्मटेश भगवान बाहुबली के दर्शन कराता रहा और सम्पूर्ण जगत को दिगम्बरत्व का दिग्दर्शन कराता रहा है, ऐसे व्यक्तित्व से जो धर्म प्रभावना हुई है वह अतुलनीय हैं ।

ऐसे अभूतपर्व व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में यह विनयांजलि सादर समर्पित है। विगत 20 वर्ष से अनेकों बार उनका सान्निध्य आशीर्वाद मेरे सम्पूर्ण परिवार को प्राप्त हुआ। मेरे आदर्श सम्पूर्ण समाज की धरोहर जिनके आगे सारी उपमाएँ व्यर्थ है। केवल स्वामी जी नाम उल्लेख से सम्पूर्ण भारतवर्ष में केवल परमपूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी महास्वामी का नाम उभरकर सामने आता है। ऐसे पूज्य स्वामी जी का महाप्रयाण कर जाना एक युग का अवसान हैं।

भगवान गोम्मटेश्वर से प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही मुक्तिवधु का वरण करें।

चलो देखें यात्रा

नेमगिरी-जिंतूर-अतिशय क्षेत्र

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर 3 मंदिर है। नेमगिरि एवं चंद्रागिरि पर मंदिर एवं 7 गुफायें चक्रव्युहाकार है । तीन नम्बर में भगवान शांतिनाथ, चौथी गुफा में मूलनायक भगवान नेमिनाथ की सवा छः फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा एवं पांचवी गुफा में पार्श्वनाथ की 9 टन वजनी 5 फुट प्रतिमा पाषाण के एक जरा से टुकड़े पर टिकी हुई (अंतरिक्ष में)। क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर एवं रमणीक है। पहले इस क्षेत्र को जैनापुर के नाम से जानते थे।

जिंतूर शहर में पहले 14 मंदिर थे अब दो है। साहू मंदिर एवं महावीर दिगम्बर मंदिर। साहू मंदिर के बाहर धर्मशाला है। इन मंदिरों में अनेकों प्राचीन प्रतिमायें है एवं इनकी संख्या लगभग 1000 है।

मार्गदर्शन: क्षेत्र जिंतूर नगर से 4 किमी. पर्वत पर है। रोड़ क्षेत्र पर खत्म होता है। रेलवे स्टेशन परभणी 46 किमी. एवं अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपूर जैन-100 किमी. शिरड शाहपुर - 55 किमी. नवागढ़- 50 किमी. लोनार-100 किमी. आसगांव-70 किमी. औंधानागनाथ- 43 किमी. हिंगोली-50 किमी.।

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षे नेमगिरी संस्थान जिंतूर पो. जिंतूर जि. परभणी (महाराष्ट्र) 431500।

प्रबंधक- श्री बंशीलाल गोरे मो. 9766720520, 7262861008

अविनाश कलमकर- 8329747387

सुविधायें- क्षेत्र पर सुविधायुक्त 14 कमरे, सामान्य 16 कमरे तथा हॉल 3 है। भोजन सशुल्क है। तलहटी में नई धर्मशाला है।

नया निर्माण: नया कार्यालय कीत्रि स्तम्भ, पूजन हॉल, स्वाध्याय, कक्ष का निर्माण हो चुका है। नई धर्मशाला निर्माणाधीन है।

विशेष: भारतवर्ष में इस प्रकार के विशाल गुफा मंदिर कहीं नहीं है। क्षेत्र हिल स्टेशन जैसा रमणीक है।

प्रसिद्ध पर्यटक स्थल लोणार लेक सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध हैं। जो आकाश से ग्रह टूटने से बनी है। 1800 मीटर चौड़ी एवं 170 मीटर गहरी है। जिंतूर से 100 किमी।

आगम दर्शन

पात्र केसरी स्तोत्र

पात्र केसरी स्तोत्र का दूसरा नाम 'जिनेन्द्र गुण संस्तुति' भी है। समन्तभद्र के स्तोत्रों के समान यह स्तोत्र भी न्यायशास्त्र का ग्रंथ है। भ्रमवश कतिपय आलोचको ने विद्यानन्द और पात्रकेसरी को एक व्यक्ति समझ लिया था। अतः पात्रकेसरी स्तोत्र विद्यानन्द के नाम से प्रकाशित है।

प्रस्तुत स्तोत्र में 50 पद्य है। अर्हन्त भगवान की सयोगकेवली अवस्था का बहुत ही गवेषणापूर्व वर्णन प्रस्तुत किया है।

वीतरागता का विस्तृत वर्णन करते हुये पात्र स्वामी ने कहा है।

हे भगवान ! आपके गुणों की जो थोड़ी भी स्तुति करता है। उसके लिये वह स्तुति समस्त कार्यों में आने वाले विघ्नों के विध्वंस का कारण बनती है अथवा समस्त कर्मों के नाश करने में सक्षम है। इस निश्चय से प्रेरित होकर में अत्यन्त आदरपूर्वक नयगर्भित स्फुट अर्थवाली स्तुति को करता हूँ।

इस प्रतिज्ञावाक्य के अनन्तर आराध्यदेव की स्तुति प्रारंभ की है। वीतराग ज्ञान और संयम का विवेचन कई प्रकार से किया है। वीतरागी का शासन परस्पर विरोधरहित और सभी प्राणियो के लिये हितसाधक होता है। अर्हन्त परमेष्ठि, उच्चकोटि के तत्वचिन्तक एवं स्याद्वाद नयगर्भित उपदेश देने वाले हैं । अतएव जिसने वीतराग की शरण प्राप्त कर ली है। उसे रागादिजन्य वेदना व्याप्त नहीं करती। राग, द्वेष और मोह ही संसार में भय उत्पन्न करने वाले हैं, जिसने उक्त विकारों को नष्ट कर दिया है। वही त्रिभुवनाधिपति होता है। समस्त आरम्भ और परिग्रह के बन्धन से मुक्त होने के कारण वीतरागी अर्हन्त में ही आप्तता रहती है। एकान्तवाद से दुष्ट चित्त वाले व्यक्ति आपके आनन्त्य गुणों की थाह नहीं पा सकते हैं। सर्वज्ञसिद्धि के साथ सग्रन्थता और कवलाहार का निरसन भी किया गया है। रचना बड़ी ही भावपूर्ण और प्रौढ़ है।

सुदेश विचार

✻ ब्र. सुदेश ✻

1. **प्रार्थना से हमें बचाने का कोई ऊपर वाला (भगवान-देवता) न आये पर प्रार्थना से हमारी आत्मशक्ति जाग जाती है जिससे स्वस्थ हुआ हमारा मन हमें '' भयमुक्त'' करता है।**
2. **धरती पर उपजे जो पेड़-पौधे, मिट्टी, जीव-जन्तु, पर्यावरण जल-वायु को क्षति नहीं पहुँचाते उन साधुओं, ज्ञानियों, धर्मों की जय हो।**
3. **राग-द्वेष आदि विकारों से दूर होता वीतराग-पथिक एक दिन अरिहंत, सर्वज्ञ-केवली-हितोपदेशी होकर अंततः सदा के लिये अनंत सुखी ''सिद्धभगवान'' हो जाता है।**
4. **आपका धर्म आपका अधर्म तो आप ही हैं । सुख-दुख, शान्ति-अशान्ति, आशा-निराशा आदि सब '' आपके भीतर से ही तो उपजते है।''**
5. **जिस बरगद की शीतल छाया में हम सुख चैन आदि पाते हैं, उसके इन गुणों को पता हमें उसके उखड़ जाने के बाद ही क्यों चलता है।**

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मार्च 2023
कहीं चूक न जाऊँ

प्रथम-

खेल हमारा जीवन साथी
जैसे कोई दीपक बाती
खेल की महिमा हर दम गाऊँ
लक्ष्य में कहीं चूक न जाऊँ

रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

सदा जीवन लक्ष्य बनाओ
हर विकास नव राह बनाओ
लगन निष्ठ बन बढ़ता जाऊँ
अपना खेल कहीं चूक न जाऊँ

अंशिका जैन, पटना बिहार

तृतीय-

गोल गेंद अरू पृथ्वी गोल
सूरज चंदा देखो गोल
लुढक पुढक पर अंक बनाऊँ
प्रतियोगी कहीं चूक न जाऊँ

मनोज जैन, सांवरमति गुजरात

वर्ग पहेली क्र. 280
फरवरी 2023 के विजेता

प्रथम : अभिषेक जैन, गांधीनगर गुजरात
द्वितीय : इन्दु बड़जात्या, बाकानेर (म.प्र.)
तृतीय : अर्चना जैन, बरायठा

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ह् ण् आ अ ल् अ र् ष् ह
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

छह खण्ड की लक्ष्मी का मुख भले ही देख ले पर उससे क्या लाभ है।

योषितां भूषणं लज्जा श्लाघ्यं नान्यद्विभूषणम्।
इति स्पष्टयितुं वैषा सर्वचेष्टा स्थिता हिया॥

स्त्रियों के लिये लज्जा ही प्रशंसनीय आभूषण है अन्य आभूषण नहीं यह स्पष्ट करने के लिये ही मानो उसकी समस्त चेष्टाएँ लज्जा से सहित हो गई थी।

चन्द्रोदयोन्वयाम्भोधेः कुलस्य तिलकायितः।
प्रादुर्भावस्तनूजस्य न प्रतोषाय कस्य वा॥

चन्द्रोदय से कुमुद विकसित जो वंशरूपी समुद्र को वृद्धिंगत करने के लिये चन्द्रोदय के समान है अथवा कुल को अलंकृत करने के लिये तिलक के समान है ऐसा पुत्र का प्रादुर्भाव किसके संतोष के लिये नहीं होता।

तेन तेजस्विना राजा सदाभाद् भास्करेण वा।
दिवसो विरजास्तादृक तनूजः कुलभूषणम्॥

राजा उस तेजस्वी पुत्र से ऐसा सुशोभित होता था जैसा कि धूलिरहित दिन सूर्य से सुशोभित होता है। यथार्थ में ऐसा पुत्र ही कुल का आभूषण होता है।

विधीवेंध न चेदग्निं स्थापयेद्रक्षितु दिशम।
स्वयोनिदाहिना कोऽपि कुचित केनापि रक्षितः॥

विधाता अवश्य ही बुद्धि हीन है क्योंकि यदि वह बुद्धिहीन नहीं होता तो आग्नेय दिशा की रक्षा के लिये अग्नि को क्यों नियुक्त करता ? भला जो अपने जन्मदाता को जलाने वाला है उससे भी क्या कहीं किसी की रक्षा हुई हैं।

केरियर

फोटोग्राफी में रोजगार के अवसर

फोटोग्राफर के लिये अलग क्षेत्रों में रोजगार के अवसर है। स्वतंत्र रूप से कार्य करके वे एक साथ अनेक पत्र-पत्रिकाओं व विज्ञापन एजेंसी से जुड़ सकते हैं। किसी विज्ञापन एजेंसी में अथवा समाचार पत्र में नौकरी कर सकते हैं।

वेतनमान- स्वतंत्र रूप से काम करने वाले अच्छे फोटोग्राफर 5000 से 10000 रूपये प्रतिदिन कमा लेते हैं।

शिक्षा संस्थान- कुछ गिने-चुने मान्यता प्राप्त संस्थान फोटोग्राफी का शिक्षण देते हैं।

1. इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफी काउंसिल नई दिल्ली
2. क्वे विजुअल्स बंगलौर

फोटोग्राफी में डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम-

1. एक वर्ष का सर्टिफिकेट कोर्स- डिपार्टमेंट ऑफ फोटोग्राफी इलाहबाद विश्वविद्यालय इलाहबाद
2. डिप्लोमा कोर्स 1 वर्ष- भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) और भी कई संस्थान देश में स्थित हैं।

फोटोग्राफी में डिग्री कोर्स (3 वर्ष)-

1. उत्कल विश्वविद्यालय बी.जे.बी. कॉलेज, भुवनेश्वर उड़ीसा
2. पूना विश्वविद्यालय फर्गूसन कॉलेज, पूना

फोटोग्रफी से सम्बंधित अन्य कैरियर-

शिक्षण, निर्देशन, विज्ञापन, कार्टुन, कला, फैशन, टेलीविजन, फिल्म, रेडियो आदि।

फोटोग्राफी सिखाने के संस्थान-

1- जे.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ अप्लाइड आर्ट्स
2- डॉ. डी.एन.रोड़ फोर्ट, मुम्बई- 400001

देश में फोटोग्राफी सिखाने के कई अन्य संस्थान भी है। साथ ही विदेशा में भी कई संस्थान है जहाँ फोटोग्राफी सिखाई जाती है।

■ 1 फरवरी

- वित्त वर्ष 2023-24 का बजट वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने पेश किया।

- धनवाद में आशीर्वाद टॉवर में आग लगने से 14 लोगों मौत हुई 14 गंभीर झुलसे।

- फतेहपुरः अवैध हथियार बनाने वाली फैक्ट्री पर पुलिस ने छापामारी की दो गिरफ्तार हुये।

■ 2 फरवरी

- खैबर प्रांत में पुलिस सड़क पर उतरी पाकिस्तानी सेना घिरी।

- यूक्रेनः क्रामटोस्क शहर पर रूस ने 3 मिसाइल दागी 3 लोगों की मौत हुई।

- केरल का पत्रकार अहमद कप्पन 28 माह बाद रिहा हुआ।

■ 3 फरवरी

- काँग्रेस के सांसद परनीत कौर को पार्टी विरोधी गतिविधियाँ के कारण पार्टी से निलम्बित किया।

- जम्मू कश्मीर के कुलग्राम में जैश ए मोहम्मद का मॉडयूल का भंडाफोड़ हुआ 6 आतंकी सहयोगी को गिरफ्तार किया गया।

- अमेरिका के आसमान पर चीनी गुब्बारा मड़राया एजेंसियाँ अलर्ड हुई चीन ने खोजी गुब्बारा भटक जाने पर खेद जताया।

■ 4 फरवरी

- जय राम वाणी गायिका का निधन हुआ वे 77 वर्ष की थी उन्होंने 1000 से अधिक गीत गाये।

- जम्मूः डोड़ा जिले के एक गांव के कई घरों में दरारें पड़ी 3 घर गिरे 18 खतरे में 100 लोग हटाये गये।

- चिली के जंगलों में 150 स्थानों पर आग लगी 13 लोगों की मौत हुई।

■ 5 फरवरी

- पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ का निधन हुआ वे 79 वर्षीय एमाइलॉडिसिल पीड़ित थे।

- नेपाली समुदाय पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के विरोध में सिक्किम डेमोक्रोटिक फ्रंट ने सिक्किमबंद का आह्वान किया तोड़ फोड़ हुई 13 गिरफ्तार किये गये।

- अमेरिका ने मिसाइल से चीनी गुब्बारा मार गिराया।

■ 6 फरवरी

- तुर्की- सीरिया में 7.8 की तीव्रता से भूकम्प आया 2300 जानें गई 8 हजार लोग घायल हुये।

- ग्रीस की एथेंस में बर्फ तूफान आया बाजार स्कूल बंद रहे। यातायात जनजीवन प्रभावित रहा।

- इंजरायली सेना ने फिलिस्तानीयों को गोली मारी।

■ 7 फरवरी

- तुर्की और सीरिया में भूकम्प से मरने वालों की संख्या 5 हजार के पार पहुँची

16000 घायल हुये।

- छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में दो नक्सली गिरफ्तार हुये।

- कांग्रेस नेता बाबासाहेब थेरात ने विधायक दल नेता का पद छोड़ा।

■ 8 फरवरी

- बी.एस.एफ के जवानों ने पाक का ड्रोन मार गिराया।

- पटनाः मगध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति राजेन्द्र प्रसाद भ्रष्टाचार मामले में जेल पहुँचे।

- गाजियाबादः जिले में कवि नगर थाना के अंतर्गत आने वाली अदालत में तेंदुआ घुसा 6 लोगों को घायल किया।

■ 9 फरवरी

- आस्ट्रेलिया ने चीनी कम्पनी से निर्मित निगरानी कैमरे को हटाने का फैसला लिया।

- श्रीनगरः जिले में सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के एक गुप्त ठिकाने से 4 एके सहित पुंछ में भारी विस्फोट सामग्री बरामद की।

- आंध्रप्रदेश के काकीनाड़ा में तेल फेक्ट्री में टैंक की सफाई करते समय दम घुटने में 7 कर्मचारी मृत पाये गये।

■ 10 फरवरी

- जयपुरः राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पुराना बजट पढ़ दिया। बजट लीक होने के मुद्दे पर विधानसभा सदन में हंगामा हुआ।

- राज्यसभा की कारवाई रिकार्ड कर रहे काँग्रेसी सांसद सजानी अशोक राव पाटिल को सभापति ने निलंबित किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने गूगल की एक याचिका खारिज कर दी जिसमें 19 जनवरी के आदेश में संशोधन की मांग की गई थी।

■ 11 फरवरी

- पाकिस्तान के नानकाना साहब में भीड़ ने ईशनिंदा के आरोपी के थाने बाहर निकालकर जिंदा जलाया।

-नागपुरः भारत ने आस्ट्रेलिया पहला टेस्ट मैच 132 रन से जीता।

- फरीदाबादः ऑटो ड्रायवर ब्रजराज को पीट-पीट कर मार डाला कार चालक विवेक पर मामला दर्ज हुआ।

■ 12 फरवरी

- सुप्रीम कोर्ट के निवृत्तमान न्यायाधीश अब्दुलनजीर आंध्रप्रदेश के और गुलाबचंद कटारिया असम के रमेश वैस, महाराष्ट्र के राज्यपाल नियुक्त हुये।

- मौलाना अरशद मदनी ने ओम और अल्लाह के एक कहा वे रामलीला मैदान में जमीयत उलेमा ए हिन्द को संबोधित कर रहे थे।

- देवघर (झारखंड) बदमाशों से मुठभेड़ दो सुरक्षाकर्मी शहीद हुये सुधाकर झा की सुरक्षा में लगे गार्ड पर बदमाश पप्पू सिंह ने हमला किया।

■ 13 फरवरी

- नाशिकः लासलगांव रेलवे स्टेशन का पास ओवर हेडवायर जांच गाड़ी चार गैंगमेनों को कुचला उनकी स्थल पर मौत हुई।

-अमेरिका ने चौथी बार उड़ रही संदिग्ध वस्तु को गिराया।

- बेंगलुरुः एशिया का सबसे एयर शो हुआ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा ये शो हमारी आत्मनिर्भरता है।

■ 14 फरवरी

- केन्द्रीय मंत्री नित्यानंद राय को महाशिवरात्री को गोली मारने की धमकी देने वाला माधव झां गिरफ्तार हुआ।

- केन्द्रीय गृहमंत्री अमितशाह ने हरियाणा पुलिस की आसाधारण सेवा के लिये राष्ट्रपति निशान प्रदान किया।

- वेलिंग्टनः न्यूजीलैंड मेंग्रेब्रियल चक्रवात से बाढ़ और विनाश के बाद आपात काल की घोषणा हुई।

■ 15 फरवरी

- फिजी में 12वीं तक हिंदी को अनिवार्य करने की घोषणा की गई राष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दी दिल की भाषा है।

- कनाड़ा के मिसि सागास्थित राममंदिर की दीवार पर भारत विरोधी नारे लिखे गये।

- अब्दुल्ला आजन की विधायकी को अयोग्य घोषित किया गया।

■ 16 फरवरी

- पटनाः गुलजार स्टेशन के पास अतिक्रमण विरोधी मुहिम में हिंसक झड़प हुई एक दुकानदार ने आत्मदाह की कोशिश की।

- उ.प्र. के पूर्व मंत्री धर्मसिंह सैनी पर रिश्वत का आरोप लगा।

- गोरखपुरः सेल्फी के चक्कर में यज्ञ के दौरान बिदक गये हाथी से मची भगदड़ में 3 लोगों की मौत हुई।

■ 17 फरवरी

- चीन के अरबपति बैंकर बाओ रहस्यमय ढंग से लापता हुये जिंगपिंग सरकार द्वारा अगवा करने की आशंका।

- यूक्रेन में युद्ध के लिये फंडिंग कर रहे रूसी अफसर ने आत्महत्या की।

- बी सी सी के क्रिकेट टीम सिलेक्टर चेतन शर्मा ने त्याग पत्र दिया।

■ 18 फरवरी

- अरूणाचल प्रदेश में छात्रों द्वारा बंद का आह्वानन पेपर लीक होने के कारण किया गया परीक्षाएँ टली।

महाराष्ट्र के नये राज्यपद की शपथ रमेश बैस ने ली।

- संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रूचिरा कंबोज को सामाजिक विकास का 62वें सत्र का अध्यक्ष चुना गया।

■ 19 फरवरी

- इंदौर धार बड़वानी में भूकम्प 3.0 तीव्रता नापी गई।

- द. प. दिल्ली के बाबा हरिदास नगर में एक भूत भगवाने के नाम पर तांत्रिक के द्वारा नाबालिग के साथ दुराचार का पर्दाफाश हुआ।

- नागालैंड विधानसभा चुनाव में शराब आपूर्ती रोकने के लिये महिलाओं 100 जांच चौकियाँ बनाई।

■ 20 फरवरी

- सालेकसाः छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र सीमा स्थित बोर तलाब की चौकी पर नकस्ली हमले में दो जवान शहीद हुये।

- सुप्रीम कोर्ट ने पुरुष महिला के शादी की उम्र समान रखने वाली याचिका खारिज की।

- अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडोन यूक्रेन की राजधानी कीव पहुँच 8 करोड़ डॉलर अतिरिक्त सहायता की घोषणा की।

■ 21 फरवरी

- जम्मू-कश्मीर में अतिक्रमण विरोधी अभियान का पहला चरण पूरा हुआ। 1 लाख करोड़ की पूर्व मंत्री विधायकों जि.वि. परिषद के अध्यक्षों से छुड़ाई।

- तुर्की के काहरा मेनमारस में भूकम्प आया 8 लोग मरे।

- हत्या के मामले में बिहार के पूर्व मंत्री रवीन्द्रनाथ मिश्र को एक अदालत ने उम्र कैद की सजा सुनाई।

■ 22 फरवरी

- पाक के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ और खुफिया एजेंसी आई एस आई प्रमुख नदीम अंजुम काबुल में मिले।

- दिगम्बर समाज की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने अंतरीक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर की ताला खोलने का अंतिम आदेश दिया।

- भोजपुरी लोक गायिका नेहा राठौर पर पुलिस नोटिस जारी किया। इन्होंने कानपुर देहात कांड पर गाना गया।

■ 23 फरवरी

- अमृतसरः पंजाब में खालिस्थान समर्थकों ने अजनाला थाने पर हमला किया।

- पद्मश्री दर्शना झवेरी को संगीत नाटक अकादमी फैलो शिप से सम्मानित किया।

- कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी एस यदुरप्पा ने राजनीति सन्यास की घोषणा विधानसभा में की।

■ 24 फरवरी

- रायपुरः काँग्रेस का 85वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ।

- पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा सिंह पाटिल के पति देवीसिंह का निधन हुआ वे 89 साल के थे। एवं अमरावती प्रथम महापौर रहे।

- काँग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ विवादित बयान पर बिना शर्त माफी मांगी।

■ 25 फरवरी

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से जर्मनी के चांसलर ओलाफ शुज्ल मिलने दिल्ली आये आतंकवाद जंग रोकने का संयुक्त आहवान किया।

- छत्तीसगए के सुकमा में नक्सलियों से मुठभेड़ में जिला रिजर्वगार्ड के 3 जवान शहीद हुये।

-बेकाबू ट्रक ने कोल महाकुम्भ में भाग लेकर लौट रही तीन बसों को टक्कर मारी 14 लोगों की मौत हुई 60 घायल हुये।

■ 26 फरवरी

- दिल्ली आबकारी घोटाले के आरोप में सीबीआई ने उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार किया।

- पुलवामाः पत्नी के साथ बाजार जा रहे पं. संजय शर्मा की आतंकी हमले में हत्या हुई।

-बाईवासा (झारखंड) विस्फोटक सामग्री सहित 7 माओवादी गिरफ्तार हुये।

■ 27 फरवरी

- सोमालिया की राजधानी मोगादिशु के अफ्रीकी संघ का हैलीकाप्टर दुर्घटना ग्रस्त हुआ 3 लोगों की मृत्यु हुई।

-इटली के दक्षिण पश्चिम तट पर 30 से अधिक अनियमित प्रवासी मृत मिले 50 को बचा लिया गया।

- कुख्यात अपराधी प्रसाद पुजारी को चीन मे गिरफ्तार किया गया।

■ 28 फरवरी

- भ्रष्टाचार के आरोप के चलते दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया मंत्री सत्येन्द्र जैन ने इस्तीफा दिया।

- पुलवामा के पं. संजय शर्मा के हत्यारे आतंकियो से सुरक्षाबल की मुठभेड आतंकी ढेर 55 राष्ट्रीय रायफल्स का जवान शहीद हुआ।

- रिबर क्रूज गंगा विलास ने 3200 कि.मी. का सफर पूरा किया 27 नदियों 50 पर्यटक स्थलों 50 दिन में सफर पूरा किया।

इसे भी जानिये

जाने पुरुस्कार की अहमियत

पुरुस्कार सम्मान	पुरुस्कार प्रदान करने वाले	पुरुस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
श्रम रत्न श्रम भूषण श्रम वीर आदि	श्रम मंत्रालय भारत सरकार सरकार	श्रमिको को प्रदान किये जाने वाला देश का सर्वोच्च श्रम पुरुस्कार		20,000 से 50,000
राजीव गांधी पर्यावरण पुरुस्कार		स्वच्छ प्रौद्योगिकियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान		
राजीव गांधी मानव सेवा पुरूस्कार		मंद बुद्धि बच्चो के लिये कार्य		1 लाख
अहिल्या पुरुस्कार		सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान		1 लाख
इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरुस्कार		पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान	1987	1 लाख
इंदिरा प्रियर्दशनी पुरुस्कार	वन मंत्रालय भारत सरकार	वनलगाने एवं धरती भूमि के विकास में योगदान	1986	50,000
व्यास सम्मान	के.के. बिड़ला फाउण्डेशन	साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु		2.5 लाख
ग्रियर्सन पुरुस्कार	केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय	हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अहिन्दी भाषी को		

दिशा बोध

योग्यता

1. जो लोग अपने कर्तव्य को जानते हैं और अपनी योग्यता बढ़ाना चाहते हैं, उनकी दृष्टि में सभी सत्कृत्य कर्तव्य स्वरूप ही है।
2. योग्य लोगों के आचरण की सुंदरता ही वास्तविक सुंदरता है, शारीरिक सुंदरता उसमें कुछ भी अभिवृद्धि नहीं करती।
3. सार्वजनिक प्रेम, सलज्जता का भाव, सबके प्रति सद् व्यवहार दूसरें के दोषों को ढाँकना और सत्यप्रियता – ये पाँच भाव शुभाचरणरूपी भवन के आधार स्तम्भ है।
4. सन्त लोगों का धर्म है अहिंसा; परन्तु योग्य पुरूषों का धर्म है परनिन्दा से परहेज करना।
5. नम्रता बलवानों की शक्ति है और वह बैरियों का सामना करने के लिए सद्गृहस्थ को कवच का काम भी देती है।
6. योग्यता की कसौटी क्या है ? यही कि दूसरों में जो बड़प्पन और श्रेष्ठता है, उसको स्वीकार कर लिया जाय; फिर चाहे व श्रेष्ठता ऐसे ही लोगों में क्यों न हो, जो कि तुमसे अन्य बातों में हीन हों ।
7. योग्य पुरूष की योग्यता तब किस काम की, जबकि वह अपने को क्षति पहुँचाने वालों के साथ भी सद्व्यवहार नहीं करता।
8. निर्धनता मनुष्य के लिए अपमान का कारण नहीं हो सकती, यदि उसके पास वह सम्पत्ति विद्यमान हो, जिसे लोग सदाचार कहते हैं।
9. जो लोग सन्मार्ग से कभी विचलित नहीं होते, चाहे प्रलयकाल में सब कुछ बदलकर इधर का उधर हो जाय; पर वे योग्यतारूपी समुद्र की सीमा मेंही रहेंगे।
10. निस्सन्देह स्वयं धरती भी मनुष्य जीवन के बोझ को न संभाल सकेगी, जब सुयोग्य व्यक्ति अपना स्तर को छोड़कर पतित हो जावें।

कहानी

दिगम्बरत्व का वैभव

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

वैभव आज सो करके उठा था। उसने आसमान में देखा कि बादलों में सूरज छुपा हुआ था और मोबाईल में उसके अलार्म बज चुका था । अलार्म में उसके एक गाना बज रहा था।

''नदियों के पार चले-चले रे धारा,
सूरज चले-चले रे तारा,
तुझको चलना होगा-तुझको चलना होगा।''

वह अपनी इस बात के लिये कह रहा था कि हमें चलना होगा, सूरज को देखकर के वैभव उठा और उसने अपने मुंह पर हाथ फेरते हुये देखा सचमुच में मुझे चलना होगा और कहां चलना होगा।

क्योंकि आज 1 जुलाई हो चुकी थी और उसे पता था कि 1 जुलाई को परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का चातुर्मास के लिये विहार शिरपुर में हो चुका है। जब शिरपुर में विहार हो चुका है तो वह भी सतर्क था लेकिन अब नागपुर से उसे शिरपुर जाने की एक प्रक्रिया अपनानी थी तो अपनी गाड़ी पर बैठ करके आगे बढ़ने की कोशिश की, जब आगे बढ़ रहा था तो मोबाई पर कॉल पर कॉल आ रहा था। कोई पूछ रहा था भैया अभी आपके पंडाल में कितनी कमी है ? कोई कह रहा था भैया आज परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी साबरखेड़ा से आगे निकल गये हैं, तो किसी ने बताया कि अभी अमरावती पार करने वाले हैं । तो वैभव इन सभी बातों को सुन रहा था उसने पूरे अपने चातुर्मास की व्यवस्था के लिये टेंडर ले लिया था, तो वैभव के सामने यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी क्योंकि 27 चौके बनाने थे और 40 कमरे बनाने थे और साथ ही पंडाल का भी निर्माण करना था । वैभव इन सभी कार्यों को करने के लिये कमर कस चुका था। धीरे-धीरे वैभव का यह कार्य भी संपन्न हो गया और 9 जुलाई को परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी जब शिरपुर में आगवानी के लिये प्रवेश कर रहे थे, तब वैभव के सामने बहुत बड़ी चुनौती थी उसे इस चुनौती को संपर्क करके अपनी सारी

जिम्मेदारी को अच्छे से निभाकर कार्यों को पूर्ण किया। पदाधिकारी गण सब खुश थे। जब 4 महीनों का चातुर्मास व्यतीत होने को था तो वैभव को एक कॉल आया और उधर से एक आदमी कह रहा था कि वैभव जी आपका पंडाल का काम बहुत अचछा है और हम आपसे अपने पंचकल्याण का कार्य करवाना चाहते हैं। तो वैभव ने पूछा आप कौन बोल रहे हैं तो कॉल पर जो आदमी था उसने बोला मैं श्वेताम्बर संस्थान का मैनेजर बात कर रहा हूँ और हमारे महाराज साहब आपको मिलने के लिये बुला रहे हैं।

वैभव को यह बात सुन बहुत ही खुशी हुई और वह मन में सोच रहा था मेरे किये हुये काम की तारीफ और सराहना की जा रही है वहीं दूसरी ओर नया काम भी मिल रहा है। अगले ही दिन वैभव अपने संपूर्ण तैयारी के साथ बैग लेकर श्वेतांबर संस्थान में मैनेजर से मिलने चला गया तो मैनेजर ने कहा कि हम बात नहीं करेंगे। महाराज साहब ही आपसे बात करेंगे। वैभव महाराज जी साहब के पास गये महाराज साहब बोले अच्छा आप ही वैभव जी हैं ? एफ आई आर महाराज जी ने पूछा वैभव जी आप अपने काम का तारिका बतायें कि कैसे काम करेंगे आप। तो वैभव ने कहा आप तो काम और जिम्मेदारी देंगे वह काम हम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पूरा करेंगे। महाराज साहब जी ने कहा हमारे काम में एक नयापन लाना पड़ेगा, हमें बहुत अच्छी सजावट चाहिये, बिजली भी चाहिये, पानी की व्यवस्था 150 टेंट लगायेंगे और सारी व्यवस्था आपको करनी होगी।

फिर वैभव ने कहा जैसा आप कहेंगे ठीक उसी प्रकार से हम सारे कार्यों को पूरा करेंगे।

फिर महाराज जी ने कहां यह सभी कार्यों को पूरा करने के लिये वैभव आपका क्या अनुमान रहेगा तो वैभव ने कहा मुझे 8 दिनों का समय दीजिये फिर मैं जो भी अनुमान होगा आपको दिखा देंगे। वैभव ने महाराज जी का सम्मान और अभिवादन करके चला गया। आठ दिन भी हो चुके थे वैभव को एक कॉल आता है जिस समय वैभव नागपुर में था वह वैभव कॉल रिसीव किया कॉल प्रति जो आदमी था वह श्वेतांबर संस्थान का मैनेजर था। मैनेजर ने वैभव से पूछा आप कहाँ हो वैभव ने बताया हम तो अभी नागपुर में हैं, तो मैनेजर ने पूछा आप सिरपुर कब आ रहे हो तो वैभव ने कहा मैं 8 दिन बाद सिरपुर आउंगा मैनेजर ने कहा 8 दिन तो बहुत देर हो जायेगी अभी कार्यक्रम के भी दिन करीब है। हमारा कार्यक्रम 26 जनवरी से लेकर5 फरवरी तक का रहेगा आपको ही इस कार्यक्रम के लिये पूरा कार्य करना है हमारे महाराज साहब का कहना है कि हम वैभव से ही पूरा कार्य करवायेंगे। तो वैभव ने कहा यह तो बहुत बड़ी खुशी की बात है मेरे लिये बहुत ही सौभाग्य की बात है जो महाराज साहब के द्वारा यह अवसर दिया जा रहा है इस अवसर का हम पूर्ण लाभ लेंगे। मुझे एक खुशी इस बात की है कि हमारा काम चातुर्मास का देख काम करके सिरपुर में नया काम मिल रहा है मैं इस खुशी के लिये अपनी धरोहर मानूंगा और महाराज जी और इस संस्था के द्वारा दी गई आत्मीयता है वह मेरी बहुत बड़ी संपत्ति होगी। वैभव आठ

दिन बाद पुनः लगभग 27 अक्टूबर को महाराज साहब के पास पहुंच गया और उनके पास सारा अनुमान (इस्टीमेट) लाकर रख दिया और महाराज जी ने अनुमान (इस्टीमेट) देखा और बोला वैभव जी आपने तो बहुत ही अच्छा अनुमान बनाया है लेकिन आपके पैसे 75 लाख ज्यादा हो रहे हैं। वैभव ने कहा आप जो भी पैसे देंगे हम प्रसाद के रूप में ग्रहण करेंगे और उसमें हम किसी प्रकार का कुछ नहीं कहेंगे। महाराज जी ने 50 लाख का प्रस्ताव दिया, वैभव ने कहा 50 लाख बहुत कम हो जायेंगे आप हम पर भी कृपा करने आखिरकर 70 लाख का अनुमान (इस्टीमेट) ठीक हुआ। लिख-पड़ी के लिये वैभव ने कहा आप कागजी दस्तवेज स्टाम्प बना लें मैं उसमें साइन कर दूंगा। जब वैभव उठने लगा वहां से जाने के लिये तभी महाराज साहब ने कहा देखो हम दिगंबर नहीं है श्वेतांबर है हमारा दिगंबरों से स्तर बहुत ऊँचा है और हम लोगों के लिये एक अलग ही प्रकार का कार्य करना होगा। तो वैभव ने कहा जी महाराज जी आपका पोशाक ही बताता रहा है कि आप श्वेतांबर हो और रही बात कार्य कि तो आप जैसा बोल रहे हो वैसा ही कार्य संपन्न करूंगा और कोई शिकायत का मौका भी नहीं दूंगा।

वैभव की बात सुनकर फिर महाराज जी ने कहा की देखो वैभव ऐसा हमें दिगंबर जैसा सड़ियल काम नहीं चाहिये क्योंकि हम लोग श्वेतांबर हैं हम सड़ियल कम पसंद नहीं करते और हमारा स्तर भारत में बहुत ऊंचा है हमारे पास अमेरिका, रूस, लंदन, इंग्लैंड सभी जगह से श्रावकगण और भाविकगण आने वाले हैं और वहां से आने वाले सभी भावकों पूरी सुविधा मिलेगी।

वैभव ने कहा चाहे अमेरिका से आये इंग्लैंड से आये या कही से भी आये हमारे कार्यों में और व्यवस्था में कोई शिकायत नहीं मिलेगी। महाराज जी ने वैभव की बातों पर एस्टीमेट से सहमत होकर कान्ट्रैक्ट दस्तवेज पर हस्ताक्षर करने की बात कही तो वैभव ने कहा हम आ करके करेंगे। उसके बाद वैभव महाराज जी का सम्मान और अभिवादन करते हुये नागपुर चला गया। वैभव को एक बात जो महाराज जी ने बोला कि हमारा दिगम्बरों से स्तर बहुत बड़ा है यह बात बार-बार सोच रहा था कि वह अपने दिगम्बरों से बड़ा स्तर का है इसका अर्थ क्या है ?

जब वैभव नागपुर पहुंचा तो वहां पर मुनि श्री योगसागर जी महाराज का चातुर्मास चल रहा था, वैभव ने मुनि श्री योगसागर जी महाराज का दर्शन किये उसके बाद मुनिश्री सौम्यसागर जी का दर्शन किये और दर्शन करने मुनिश्री निस्सिमसागर जी का दर्शन किये, शाश्वतसागर जी के दर्शन किये।

शाश्वतसागर जी के दर्शन के बाद वैभव ने उनसे कहा महाराज जी से मुझे एक बात बहुत खटक रही है।

तो महाराज जी ने पूछा की क्या बात है बात बताओ तो वैभव ने कहा मुझे शिरपुर में चातुर्मास के लिये सारा काम मिला। हमारे लिये सबसे बड़ी खुशी और आपके आशीर्वाद की बात यह है कि मुझे चार चारों तरफ से लोगों ने हमारे कामों की बहुत सराहना की और इस चातुर्मास का काम देखकर

श्वेतांबरो ने भी हमें एक कम सौंपा है कि उनके होने वाले पंचकल्याण के कार्य को हम 70 लाख में कर रहे हैं। यह बात तो सुनकार शाश्वतसागर जी ने कहा वैभव यह बात तो बहुत अच्छा है तुम्हारे लिये। वैभव ने फिर कहा महाराज जी मुझे एक छोटी सी बात बहुत मेरे दिल में खट रही है। तब शाश्वतसागर जी ने कहे वैभव ऐसा क्या बात है तो तुम्हारे दिल में खटक रही है तुम तो मेरे प्यारे शिष्य हो। तो वैभव ने कहा महाराज जी इस बात का समाधान आप कर सकते हैं और आप किसी से चर्चा नहीं करेंगे तो शाश्व सागर जी ने कहे ठीक है वैभव किसी से चर्चा नहीं करेंगे परंतु बात क्या है? बताओ।

तो वैभव ने कहा महाराज जी बात यह है कि जब हमारा श्वेतांबर महाराज जी से कार्यक्रमों की सूची और इस्टिमेड तय हो गया तब उनकी एक बात कहीं कि हमारा कार्य काम बहुत ही अच्छे से करना हमारा लेबल बहुत बड़ा है और हम लोग दिगम्बरों जैसा नहीं है। और यह बात मुझे समझ में नही आ रहा है कि दिगंबर और श्वेतांबर के बीच में अंतर क्या है?

मुनि शाश्वतसागर जी ने सारी बात सुन लेने के बाद कहां वैभव हमारे पास एक किताब राखी है तुम इस किताब को पढ़ो इस किताब का नाम भद्रबाहु चरित्र है जो महाराज जी ने वैभव को दिये पढ़ने के उसके लिये बाद वैभव ने किताब लिया और महाराज जी को नमोस्तु बोल करके चला गया।

वैभव ने गाड़ी में बैठे बैठे किताब को पढ़ना शुरु किया और जब घर पहुंचा तो एक पूरी रात में वैभव में किताब पढ़ा लिया। उस किताब में यह लिखा था कि एक रत्न कृति जी का भी उसमें लिखा था और रेदूकी उपग्रहण सभा सांविक भी कहानी थी इस्तेमाल कहानी थी, कहानी का सार उसके दिमाग में घुस गया कि 12 साल पहले का एक चिंतन भी ध्यान में आ गया कभी किसी ने कुछ कहा था की चंद्रगुप्त मौर्य के समय में आचार्य भद्रबाहु स्वामी हुये हैं यद्यपि वैभव कभी इतिहास का विद्यार्थी तो नहीं रहा परन्तु कभी-कभी विद्यार्थी के रूप में इतिहास का ज्ञान आवश्यक रहा। वैभव के सामने एक सबसे बड़ी बात यह थी कि इतिहास जो उसने देखा कि चंद्रगुपत मौर्य अखंड भारत के एक मंडलीक का राजा हुये हैं, मुकुटबद्ध राजा हुये हैं उनके बाद अखंड भारत का राजा कोई नहीं हुआ, उसी समय आचार्य भद्रबाहु भी हुये हैं यह बात जब वैभव ने भद्रबाहुत किताब में इनकी कहानी पढ़ी तो वैभव को यह बात याद आ गई की कभी मैंने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में देखा था जो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखी थी। उसको भी याद करने लगा कि चंद्रुप्त मौर्य की समाधि श्रवणबेलगोला में हुई है और श्रवणबेलगोला में समाधि का उनका उल्लेख हैं कि अन्तिम समय श्रवणबेलगोला में कई इतिहासकारों ने श्रवणबेलगोला में स्वीकारा हैं। तब वैभव को समझ में आया कि सच क्या हैं तो वैभव ने पूरी किताबो को पढ़ने के बुरे इस्तेमाल में यह ज्ञात हुआ कि भद्रबाहु आचार्य वे और उनकी समाधि श्रवणबेलगोला के चंदगिरि गुफा में हुई।

किताब पढ़ने के बाद उसे यह कहानी विशेष रूप से याद हो गई और उसे यह ज्ञात हुआ की जब 12 वर्षा का अकाल पड़ा था तो

उस समय चंद्रगुप्त मौर्य के साथ में भद्रबाहुत स्वामी दक्षिण भारत के लिये निकल पड़े थे क्योंकि यह बात उन्हें पता लग गई थी 12वर्ष का भीषण अकाल पड़ेगा और इस भीषण अकाल में कोई भी धर्म से च्युत हो सकता है इसलिये उन्होंने अपने सभी शिष्यों को यह आज्ञा दिये कि कोई भी उत्तर भारत में नहीं रूकेगा परंतु बहुत सारे श्रेष्ठी आये और उन्हों ने कई साधु से अनुरोध किया और आचार्य भद्रबाहुत जी से भी आग्रह किया की कोई ना कोई शिष्य यहां छोड़ जाये अन्यथा उत्तर भारत धर्म से विहीन हो जायेगा। क्योंकि पंचमकाल है ये। परन्तु भद्रबाहु स्वामी ने किसी भी शिष्य को आज्ञा नहीं दी पर उनकी आज्ञा के बिना कई शिष्य उत्तर भारत में रूक गये और परिणाम यह हुआ कि जब भीषण अकाल पड़ा तो श्रेष्ठियों का धन, अन्न सब कुछ था परंतु वह अन्य कर्मों में तब काम नहीं आया जब मुनि महाराज आहार के लिये निकालने लगे तो उस समय खैरकर की जनता खड़ी हो जाती थी, कोई रोता था तो कोई चिल्लाता था कोई भी मांगता था तो उस समय अंतराय कर देते थे और ऐसा देखकर के यह तय किया गया कि अब दिन में आहार के लिये ना आकर साधु रात में आहार के लिये आयेंगे। जब रात में जाने लगे तो एक श्रेष्ठि की पुत्रवधु का गर्भपात हो गया तब यह तय किया गया कि साधु कोई ना कोई कपड़े अवश्य लेंगे तब साधुओ ने कपड़े स्वीकार किये कपड़े स्वीकार करके भोजन ला करके और आहार करने लगे और अपना अध्ययन का कार्य करने लगे और धीरे-धीरे उन मुनियों ने कपड़ों को स्वीकार कर लिया और वह कपड़ों को स्वीकार करके श्वेतांबर साधु बन गये।

12 वर्ष के बीत जाने के बाद पुनः लौटकर आचार्य भद्रबाहु जी नहीं आये क्योंकि उनकी समाधि श्रवणबेलगोला में हो गई थी। और वह आये तो विशाखाचार्य जी के साथ पूरा संघ आया। जब विशाखाचार्य जी उत्तर भारत में आये तो जिन्होंने कपड़े धारण कर लिये उनके अंदर भी यह बात अदा हो गई हमें कपड़े उतारकर पुनः दिगंबर बन जाना चाहिये परंतु सब साधु दिगंबर नहीं बने, कुछ बन गये और और कुछ ने कपड़ों को धारण ही करते रहे और श्वेतांबरी बने रहे, उस समय से ही यह श्वेतांबर मत का प्रारंभ हो गया।

वैभव किताब को पढ़ चुका था तो ऐसा लगा यह बात तो सच है। वैभव को एक कहानी और याद आ गई क्योंकि वह कहानी किसी किताब में पढ़ी थी पाटलिपुत्र में एक सहस्त्र मल का नाम का राजा रहते हैं और वही पर एक शिवभूति नाम का एक युवा रहता था, वह रात में देर से अपने घर जाया करता था तो एक दिन उसकी पत्नी ने अपनी सांस से शिकायत की सास ने कहा नहीं आप जब वह आये तो सो जाना और उससे कहना कि वह मेरे से मिलकर भीतर घर में प्रवेश करे। सास जागती रही और शिवभूति आया तो उससे यह कह दिया तुम इतनी रात को कहां रहते हो हमारे घर में आपके लिये कोई जगह नही है चले जाओ। वह चला गया और एक उपाश्रय में जाकर सो गया और सुबह होने के बाद माँ की डांट से विरक्ति हुई, उदासी हुई और उसमें मन की उदासीन से प्रभावित होकर के गुरु से

कहा हमें दीक्षा दे दो और गुरु ने दया करके दीक्षा दे दी और वह श्वेतांबर साधु बन गया।

इसके बाद वह वापस पाटलिपुत्र में आया तो सहस्रमल जी ने शिवभूति का सम्मान रत्न कंबल देकर के किया। रतन कम्बल लेकर के वह खुश हो गया। लेकिन उनके गुरु ने उसकी काटकर के और रजोहूरनी बना दी।

रजोहूरनी बनाने से इस्तेमाल से बहुत दुख हुआ और उसमें अपने गुरुओं से कहा कि वह ऐसा क्यों किया तो उनके स्थिरकल्पी मुनियों ने बताया की ये पहले साधु दिगंबर रहते थे नाग्नरूप में साधना करते थे लेकिन काल की विपदाओं को देखकर के, वीसंगतियों को देखकर और साधु अब कपड़े में रहने लगे। उसने कहा कि हम क्यों नहीं दिगंबर रह सकते हैं और शिवभूति ने दिगंबर पंथ चलाया।

यह कहानी श्वेताम्बरों के ग्रंथों में मिलती है और इस कहानी से इसके लिये यह कहा जा सकता है अक्षरोना कहते हैं। इस बात को जब वैभव ने देखा तो वैभव को बड़ा दुख हुआ, वैभव ने सोचा कि मैं अपने वैभव को क्यों न समझूं।

वैभव ने दिगंबरत्व की उस भद्रचरित्र पुस्तक को पढ़कर दिगंबर के लिये लगा हमें सचमुच में यह एक बहुत बड़ी चुनौती हैं, वैभव ने गाड़ी में उस किताब को पुनः उल्टा पलटा ओर उसने मोबाईल उठाया और शिरपुर के श्वेतांबर संस्था के मैनेजर के लिये व्हाट्सएप पर मैसेज कर दिया आप मुझे क्षमा करें मैं आपका कार्य नही कर पाऊंगा। जब यह बात उसके मैसेज में डाली तो वहां से रिप्लाई आया क्यों क्या हो गया ? आपको महाराज जी ने कार्य बहुत अच्छी तरह से सौंपा है आपको करना ही चाहिये। वैभव ने कहा की बस में इतना ही कहूंगा कि मेरे स्वाभिमान गवाह नहीं दे रहा है कि मैं इस कार्य को करूं, जब मैनेजर ने यह मैसेज पढ़ा तो वैभव से कहा आप कॉलिंग पर बात करें फिर मैनेजर से कॉलिंग पे बात हुई तो वैभव ने कहा महाराज जी ने एक बात कही थी कि दिगंबर से हमारा स्तर बहुत ऊंचा है इसलिये मैं यह कहना चाहता हूं कि स्तर भले ही ऊंचा हो परंतु हमें यह स्वाभिमान के खिलाफ बात लग रही है इसलिये मैं क्षमा चाहता हूँ मैं आपका कार्य नहीं कर पाऊंगा।

मैनेजर ने कहा देखो आपको 70 लाख का काम मिल रहा है और इस काम को आप छोड़िये मत। तो वैभव ने कहा की 70 लाख का क्या, 70 करोड़ का भी काम रहेगा तो भी मैं यह स्वीकार नहीं करूंगा। क्योंकि मेरे स्वाभिमान पर चोट है। हमें भी अपनी दिगंबरत्व का वैभव की याद है कि दिगंबरत्व की वैभव श्रवणबेलगोला के मुनि बाहुबलि भगवान जो कि दिगंबर है, भद्रबाहु भी दिगंबर आचार्य जी भी दिगंबर और इन सबका वैभव देखकर के मैं एक बात कह सकता हूं कि मैं भी दिगंबर के मेरे पिताजी का भी नाम भी दिगंबर दास है मेरे दादाजी ने अपने बेटे को नाम दिया और मेरे पिताजी ने मेरा नाम वैभव दिया इसलिये मैं दिगम्बरत्व के वैभव को सुरक्षित रखने का कार्य करूंगा और मैं आपका कार्य को अपने हाथ में नहीं लूंगा।

हमारे गौरव

गणेशप्रसाद जी महाराज

निर्भिक दृढ़निश्चयी शिक्षा के प्रचारक-प्रसारक एवं कुरीतियों के नाशक थे पूज्य गणेशकीर्ति जी महाराज। इनका जन्म हंसेरा में असाटी वैश्य परिवार में विक्रम संवत् 1931 की अश्विन कृष्ण चतुर्थी को हुआ था। पिताजी का नाम श्री हीरालाल जी था। आपका नाम गणेशप्रसाद रखा गया।

आपने सं. 1946 में हिन्दी मिडिल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। फिर दो भाइयों के वियोग से शिक्षा प्राप्त न कर सके।

गणेश प्रसाद गुरुसेवा को अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। जब गणेश प्रसाद जी दस वर्ष के थे तब उन्हें जैन मंदिर के चबूतरे पर प्रवचन सुनने का अवसर मिला। उस प्रवचन से इतने प्रभावित हुये की रात्रि भोजन त्याग कर जैनधर्म अंगीकार कर लिया।

विक्रम संवत् 1949 को 19 वर्षीय होने पर मलहरा ग्राम की सत्कुलीन कन्या को अनिच्छापूर्वक अपनी जीवन संगिनी बना लिया। जीविका के लिये विद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे।

मन में तीव्र ज्ञानपिपासा थी। अतः अध्यापन कार्य को तिलांजलि दे। संवत् 1950 में सिमरा ग्राम पहुँचे।

विद्वत्ता और संयम की साधना से वे पूज्य संत बन गये। संयत की साधना ने संवत् 1970 में उन्हें बड़े पंडित जी से संत वर्णी जी बना दिया। वर्णी जी ने 2004 में क्षुल्लक दीक्षा ली। विक्रम संवत 2002 से 2009 तक बुंदेलखंड में भ्रमण किया। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से सैकड़ों पाठशालाएं विद्यालय और महाविद्यालय खुलें।

आपके द्वारा जैन विद्वत् परम्परा को जीवित रखने के उद्देश्य से स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना गंगाघाट बनारस में की गयी जहाँ आचार्य विद्यासागर जी के गुरु ज्ञानसागर जी ने भी अध्ययन किया।

विनोबा भावे जी ने वर्णी जी को अपना अग्रज माना और उनके चरण स्पर्श किये। पूज्य वर्णी जी निःस्पृही, पारखी व गुणग्राही थे। विरोधी भी उनके आगे नतमस्तक हुये।

31 सितम्बर 1961 को यम संल्लेखना ली और सभी प्रकार के आहार-पानी का त्याग कर दिया। 15 सितम्बर की रात्रि को 1.30 पर भौतिक शरीर को त्याग दिया।

उनके अभाव में जैन समाज का सूर्य ही डूब गया।

भगवान को जानने का प्रयास सर्वश्रेष्ठ है

✻ आचार्य अतिवीर मुनिराज ✻

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' की परंपरा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का 17वां मंगल चातुर्मास 2022 हरियाणा की धर्मनगरी रेवाड़ी स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नसिया जी में धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ। सारगर्भित मंगल प्रवचन श्रृंखला में भक्तों को सम्बोधित करते हुये पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि आज का जीवन केवल लालच के आधार पर टिका हुआ है। जहाँ कुछ लालच है वहीं हमारा रूझान है। हमारे पास जो है उससे हम संतुष्ट नहीं है परन्तु हमें और कुछ भी चाहिये, यही लालच आज मानव जीवन को बर्बाद करने में लगा है। वर्तमान और भविष्य के फासले को मिलाने की पुरजोर ताकत हम लगा देते हैं। लौकिक जीवन में तो लालच की पराकाष्टा देखने मिलती ही है परन्तु वर्तमान में भगवान को पाने के लिये भी प्रलोभन और लालच की बुनियाद खड़ी करनी पड़ती है।

लालच से भरा हुआ चित अशांत ही रहता है। अशांत चित का भगवान से सम्बंध जुड़ ही नहीं सकता। जीवन में हर वस्तु लालच के पीछे भागने से शायद मिल सकती हैं पर भगवत-प्राप्ति के लिये दौड़ना मूर्खता है। दौड़ना उसके लिये पड़ता है जो हमसे भिन्न है परन्तु ईश्वर तो सदैव हमारे साथ है। एक इंच का भी फैसला होता तो हम उसके लिये थोड़ा दौड़ लेते। उसे खोजने कहाँ जायेंगे ? जिसे खोया हो उसे ही खोल सकते हैं। जो अपने पास ही हो उसे खोजने निकलेंगे तो हर हाल में भटकेंगे ही। भगवान को पाने के लिये हम नित नयी क्रियाएं करते हैं । पूजा करेंगे, प्रार्थना करेंगे, जप करेंगे, तप करेंगे- ये सब प्रयत्न हैं भगवान को पाने के लिये। परन्तु जो हमारे पास ही है, हमारा ही है, उसे पाना क्या है ? **भगवान को पाना नहीं, उसे मात्र जानना है।** एक पल के लिये भी यदि हम अपनी बाहर की यात्रा को विराम दे देंगे तो चित का आवागमन रूक जायेगा।

भीतर विद्यमान चैतन्य आत्मा ही तो भगवान है अंतरंग में उतरने के लिये किसी लोभ की, किसी लालच की, किसी दौड़ की, किसी खोज की, किसी उपाय की अथवा किसी प्रयास की आवश्यकता ही नहीं है। उसके लिये मात्र क्रिया-शून्यता चाहिये। सभी प्रकार के प्रयासों को, लोभ, लालच, दौड़, खोज आदि को विराम देकर केवल झांकना है अपने भीतर। जब बाहर की यात्रा रुक जायेगी तो अंदर की यात्रा स्वयं ही क्रियान्वित हो जायेगी। मोक्षमार्ग पर बढ़ने के लिये सर्वप्रथम सम्यक्दर्शन की प्राप्ति अनिवार्य है। सम्यक्दर्शन के अभाव में सभी मेहनत निष्फल है। आचार्य श्री की ओजस्वी वाणी को श्रवण कर ज्ञानपिपा सुजन तृप्त हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री के पावन सान्निध्य में दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर श्री तीस चौबीसी महामंडल विधान का भव्य आयोजन आगामी 31 अगस्त से 9 सितम्बर तक किया जा रहा है।

पत्र और पत्रकार समाज को उज्जवल बनाते हैं: आचार्य श्री प्रज्ञासागर

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

जैन संग्रहालय में ऐतिहासिक धरोहर देख भाव-विभोर हुये पत्रकार-संपादक

उज्जैन- तपोभूमि उज्जैन में जैन पत्रकार महासंघ रजिस्टर्ड के दो दिवसीय राष्ट्रीय पत्रकार सम्मेलन के प्रथम दिन पत्रकारों को संबोधित करते हुये तपोभूमि प्रणेता परम पूज्य आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज ने कहा कि पत्रकार लेखनी के पुजारी होते हैं । पत्रकार की कलम लोगों के कदम बढ़ाने का काम करती है। पत्र और पत्रकार समाज को उज्जवल बनाते हैं, लेखनी में वह दम है कि मुर्दा में भी जान फूंक दी जाती है। स्वतंत्रता की लड़ाई भी अखबार के माध्यम से ही जीती गई थी। पत्रकारों का दायित्व है कि समाज के गिरते हुये संस्कार, बिगड़ती हुई मानसिकता, मंदिर से दूर होती युवा पीढ़ी को फिर से झंकृत करना है, यह पत्रकारों का दायित्व है। पत्रकार समाज में नई जान फूंक सकते हैं। आज वर्तमान संदर्भ में पत्रकारों का समाज देश और धर्म के प्रति दायित्व और अधिक बढ़ गया है। प्रत्येक पत्रकार को अपने कर्त्तव्यों का निर्वाहन करना चाहिये।

इस अवसर पर देश के विभिन्न स्थानों से आये जैन संपादकों, पत्रकारों ने अपना-अपना परिचय दिया। इस अवसर पर राजेन्द्र महावीर सनावद, हंसमुख गांधी इंदौर, रमेश जी तिजारिया जयपुर, उदयभान जी जैन जयपुर, डॉ. सुनील संचय ललितपुर, मनीष विद्यार्थी शाहगढ़, प्रकाश जैन शाहगढ़, महेन्द्र बैराठी जयपुर, दिलीप जैन जयपुर, अखिलेश जैन अजमेर, आर.के. जैन कोटा, सराफ ललितपुर, अनिल शास्त्री सागर, राजाबाबू गोधा, अभिषेक लोहारिया रामगंज मंडी, राजेश जैन बीना, आदेश सेठ गढ़ाकोटा, ममता जैन मुंबई, राकेश सोनी इंदौर, संजय बड़जात्या कामां, राकेश चपल्मन कोटा, दीपक कुनकरे, सुशीला सालगिया इंदौर, अमित डूंगरपुर आदि बड़ी संख्या में पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।

संचालन संयोजक राजेन्द्र महावीर सनावद ने किया। अध्यक्षता रमेश तिजारिया जयपुर अध्यक्ष ने की। उक्त जानकारी महामंत्री उदयभान जैन जयपुर, संयोजक डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने प्रदान की । समिति के पंकज जैन उज्जैन, सचिन कासलीवाल, अश्विनी कासलीवाल, तिरेश पतंगया आदि ने स्वागत किया।

प्राचीन मूर्तिकला से रूबरू हुये पत्रकार महासंघ के सदस्यः दोपहर में दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय जयसिंहपुरा, उज्जैन का सभी पत्रकारों ने गहन अवलोकन किया। इस संग्रहालय को देखकर पत्रकारों ने कहा कि यह संग्रहालय मध्यप्रदेश में जैन मूर्ति निर्माण परंपरा व क्षेत्र में जैनधर्म के व्यापक प्रचार प्रसार व प्रभावना की गाथा कहता है। संग्रहालय की निर्माण व्यवस्था, साज सज्जा व केटलॉग बहुत ही व्यवस्थित हैं । इस दौरान पत्रकारों लाइटिंग शो भी दिखाया गया। पत्रकारों ने विभिन्न शैलियों की अति प्राचीन मूर्तियों को देखकर कहा कि यह ऐतिहासिक धरोहर

हैं जो हमारी संस्कृति की प्राचीनता के स्पष्ट प्रमाण हैं । संग्रहालय में संग्रहित लगभग 560 प्राचीन मूर्तियों, अवशेषों से पत्रकार रूबरू हुये।

पत्रकारों पहुँचने पर दिगम्बर जैन मालवा प्रान्तिक सभा व संग्रहालय समिति के टी.के.वैद, प्रदीप झांझरी, देवेन्द्र जैन, ललित बड़जात्या, सिद्ध प्रकाश जैन, जम्बू धवल, तेज कुमार शाह, जितेन्द्र शाह, अशोक जैन ने तिलक, माला व संग्रहालय की पुस्तक भेंटकर सम्मानित किया।

इसके बाद सभी पत्रकार बस के द्वारा सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के दर्शन अवलोकन के लिये गये। जहाँ पर अध्यक्ष अमित कासलीवाल ने सभी का स्वागत किया।

रविवार को विविध आयोजनों के साथ होगा समापनः जैन पत्रकार महासंघ के तृतीय राष्ट्रीय अधिवेश में दूसरे दिन तपोभूमि उज्जैन में प्रातः बेला में अभिषेक पूजन होगा, प्रातः 9 बजे साधरण सभा होगी, उसके बाद 10.15 बजे से विशेष। व्याख्यान सभा होगी जिसमें पंकज मुकाती का विशेष व्याख्यान होगा, 12 बजे से उज्जैन सिद्धक्षेत्र डाक्यूमेंट्री दिखाई जायेगी, दोपहर 2 बजे समापन सत्र प्रदीप जैन सदस्य प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की अध्यक्षता में होगा। मुख्य अतिथि पारस जैन पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश सरकार होंगे। इस दौरान तीन विशिष्ट पत्रकारों को समारोह पूर्वक सम्मानित किया जायेगा। विशेष अतिथि कमलेश कासलीवाल होंगे।

कविता

स्वाबलम्बन के प्रशंसक

संस्कार फीचर्स

मन हो शुद्ध, वचन हो शुद्ध
तन हो शुद्ध, भोजन शुद्ध
वस्त्र हो शुद्ध,
यही कह चुके महावीर बुद्ध

सत्य अहिंसा
धर्म की देव भी करते सदा प्रशंसा
भारत माटी की तासरी है
यही हर दिल में
तीर्थंकर देशना से करूणा की गंगाबही
अतः भारत तीर्थ महि

सदा हम बने
अहिंसक स्वाबलम्बन के प्रशंसक

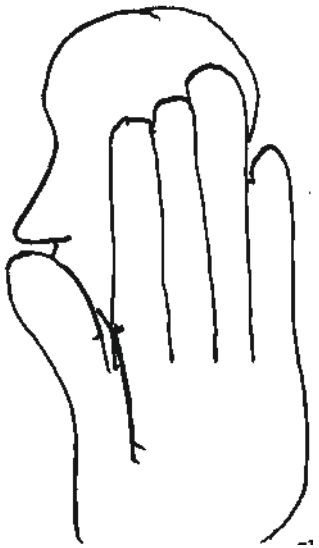

सत्यं ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्

✻ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, मनुज ✻

उत्तम सत्य आत्मा का एक गुण है। जैसे किसी पर बनावटी आवरण पड़ा हो और वह हट जाये तो वास्तविक तस्वीर निकल आती है, वही सत्य है। जिसमें कोई मिलावट न हो, बनावटीपन न हो, कोई लाग-लपेट न हो वह सत्य है। ऋषि-मुनियों ने कहा है- **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यमप्रियम्।** सत्य बोलो पर प्रिय बोलो, ऐसा सत्य भी मत बोलो जो अप्रिय हो अर्थात् जिससे किसी प्राणी का घात होता हो, प्राणी ही हिंसा होती हो ऐसा सत्य भी नहीं बोलना चाहिये।

इस सम्बंध में एक उदाहरण आता है- एक राजकुमार को ज्ञात था कि अमुक संत मन की बात जान लेते हैं। वह उन्हें झूठा साबित करने के लिये एक चिड़िया लेकर भरी सभा में उनके सामने गया। पूछता है यह चिड़िया जीवित है या मृत ? वह जीवित चिड़ियां के गले पर हाथ का अंगूठा लगये था, सोच कर गया था यदि उन्हों ने बोला जीवित है तो अंगूठा से गला दबाकर मार संत को झूठा साबित कर देगा। और मृत बोला तो जीवित तो है ही। सन्त सारी बात समझ गये। उन्होंने राजकुमार के प्रश्न के उत्तर में कहा- तुम यह मृत चिड़िया हाथ में लिये हुये हो। राजकुमार ने तुरंत मुठ्ठी खोल कर चिड़िया उड़ा दी और कहा इन संत को कुछ ज्ञात नहीं हो पाता ये झूठे हैं, देखो थोड़ी सी बात भी नहीं बता सके, इनके विषय में व्यर्थ कहा जाता है कि ये मन की बात जानकर सच बता देते हैं। संत ने कहा- राजकुमार मैं तुम्हारे मन की सारी बात जान गया था, यदि में उसे जीवित बता देता तो तुम उसे मार देते। मेरे एक झूठ से यदि उस जीव की जान की रक्षा हो गई तो यह झूठ भी सत्य की श्रेणी में आता है। इसीलिये कहा है कि सत्य बोलें किन्तु प्रिय बोलें।

जैनदर्शन में सत्य का अर्थ मात्र ज्यों का त्यों बोलने का नाम सत्य नहीं है, बल्कि हित-मित-प्रिय वचन बोलने से है। हितकारी वचन यानि जिसमें जीव मात्र की भलाई हौ, कहने का अभिप्राय ये है कि जिन वचनों से यदि किसी जीव का अहित होता हो तो वे वचन सत्य होते हुये भी असत्य ही है। अर्थात् कड़वे वचन, तीखे वचन, व्यंग्य परक वचन, परनिंदा, पीड़ाकारक वचन सत्य होते हुये भी असत्य ही माने गये हैं। मित अर्थात सीमित, संक्षिप्त, कम, सार रूप वचन बोलो। अनर्गल बचना लाप से बचो। प्रिय वचन यानि जो सुनने में भी अच्छे लगे, ऐसे वचन ही सत्य वचन है। हित,मित और प्रिय वचन बोलने की ही शास्त्र अनुमति देते हैं। हित अर्थात् अपने और दूसरों के हितकारी वचन मित अर्थात् सीमित, अल्प केवल जितनी आवश्यकता हो उतने वचन बोलना और प्रिय के लिये तो कहा है- कटुक-कठोर- निंद्य नहिं वयन उचारै। हमारा राष्ट्रीय वाक्य है- सत्यमेव जयते सत्य की हमेशा विजय होती है, सत्य कभी न कभी उजागर हो ही जाता है। सत्य के विषय में कहा जाता है- **दाबी-दूबी न रहै, दबै लपेटी आग।** रूई में आग लगी हो तो उसे रूई से ही कितना भी लपेट कर ढंक दिया जाये, धीरे-धीरे सुलगते सुलगते वह विकराल रूप लेकर सामने आ ही जाती है। एक सत्य को झकने के लिये व्यक्ति को अनेकों झूठ बोलना पड़ते हैं और जो एक बार सत्य बोल देता है, वह निश्चित रहता है। हमें नित्य व्यवहार में भी यथा संभव सत्य बोलने का प्रयत्न करना चाहिये।

विस्मृत इतिहास का उद्घाटन

✻ ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' ✻

जैन संस्कृति विभिन्न श्रमणों , शासकों, मन्त्रियों, श्रेष्ठियों, सामन्तों एवं श्रावक श्राविकाओं के विलक्षण तथा अद्भुत कर्त्तव्यों से विख्यात है। जैनधर्म कभी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय विशेष के बन्धन में नही बंधा है, इसके उन्नयन में विश्व के ख्याति प्राप्त व्यक्तियों का समावेश है।

जैन तीर्थंकरों में क्षत्रियों, राजाओं, महाराजाओं, युवराजों के द्वारा तीर्थ प्रवर्तन किया गया है । जैनधर्म में प्रत्येक तीर्थंकर के काल में चक्रवर्ती, कामदेव, बलभद्र, नारायण आदि महापुरुषों का सद्भाव होता है। चक्रवर्ती का नियोग है चक्ररत्न उत्पन्न होते ही उसे षटखण्ड की दिग्विजय हेतु अक्षौहणी सेना के साथ दिग्विजय के लिये जाना होता है, षटखण्ड पर शासन के काल में सम्पूर्ण विश्व में जिनशासन के मंदिरों , मूर्तियों, कलाशिल्पों, एवं चित्रावलियों का सतत् निर्माण होता है। यही कारण है सम्पूर्ण विश्व में जहाँ भी उत्खनन होता है वहाँ जैन मंदिर, मूर्तियाँ एवं कलाशिल्प प्राप्त होते हैं।

हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाव से धर्माचरण में हीनता एवं अवनति परिलक्षित होने के बावजूद भी सम्राट अशोक, बिम्बसार, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, कलचुरि व प्रतिहार शासकों की वंश परम्परा में जैन धर्म क्रमशः वृद्धि को प्राप्त हुआ है। चन्देल शासन काल में जैन धर्म का उन्नयन चर्मोत्कर्ष पर था। नन्नुक से मदनवर्मन तक संरक्षण, संवर्धन, एवं सृजन का क्रम अनवरत चलता रहा।

चन्देलों के प्रथम स्वतंत्र शासक यशोवर्मन ने चन्देल साम्राज्य का चहुँओर विस्तार किया। आपको 'कलिंगराजाधिपति' का गौरव प्राप्त हुआ। आपकी सामग्री महारानी पुष्पा अत्यन्त धार्मिक श्री आपकी प्रेरणा से महाराजा यशोवर्मन में जैनधर्म को स्वीकार ही नहीं किया अपितु गोल्लाचार्य के रूप में नन्दिसंघ के आचार्य वीरनन्दि से दीक्षा लेकर आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त किया।

उस ऐतिहासिक तथ्य को श्रवणबेलगोला में महानवमी मण्डप, आदिनाथ मंदिर एवं शान्तला के मण्डप से प्राप्त शिलालेखों से मैंने ब्र. जयकुमार 'निशांत' एवं ब्र. डी. राकेश सागर ने अन्वेषित किया। जिसकी पुष्टी डॉ. यशवन्त मलैया, कालोराडो स्टेट युनिवर्सिटी, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, डॉ. भागचंद्र भागेन्दु सांस्कृतिक सचिव म.प्र. शासन, डॉ. गिरिराज कुमार राष्ट्रीय सचिव, रॉक आर्ट सोशायटी ऑफ इंडिया, डॉ. के.पी. त्रिपाटी, श्री हरिविष्णु अवस्थी टीकमगढ़, डॉ. भागचन्द्र 'भास्कर' नागपुर द्वारा की गयी है।

चन्देल शासन यशोवर्मन के इन तथ्यों को इतिहास, सांस्कृतिक, धार्मिक, पुरातात्त्विक एवं अभिलेखीय संदर्भों तथा ग्रंथों के आलोक में आंदोलन ब्र. सुनील सांधेलिया सहायक महाप्रबन्धक (बी.एस.एन.एल) जबलपुर द्वारा 616 पृष्ठ के विशाल कथानक में संजोया है। जिसमें जेजाकभुक्ति वर्तमान बुन्देलखंड के अधिपति यशोवर्मन (गोल्लाचार्य) के काल की राज्य व्यवस्था, शिक्षानीति, दण्डनीति, साम्राज्य विस्तार, समृद्धि की कल्याणकारी योजनाएँ

यथा सभी धर्मों के मंदिर निर्माण द्वारा धार्मिक सद्भावना, तालाब, बावड़ी, कूप निर्माण से समृद्धि एवं खुशहाली, किला, गढ़ी, भवन निर्माण से संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा एवं खानपान का वर्णन किया है।

यशोवर्मन का जीवनवृत्त सप्रमाण संदर्भों के साथ लिपिबद्ध किया गया है, जिसमें उनके व्यक्तित्व, कार्यक्षमता, युद्ध कौशल, बाहुबल, राज्य संचालन नीतिपूर्ण दण्ड व्यवस्था, गुप्तचर व्यवस्था, प्रजावत्सलता, धार्मिक सद्भावना सामाजिक, राजनैतिक एवं पारिवारिक समस्याओं का त्वरित समाधान, राजनैतिक पारिवारिक षडयंत्रों के दुष्प्रभाव से बचाव, जैनधर्म एवं जैनगुरुओं प्रति अगाध श्रद्धा, निष्ठा एवं समर्पण, परिवार एवं राज्य से निलिप्तता, व्रतों के प्रति दृढ़ संकल्प, मुनि दीक्षा, प्रभावशाली आचार्य परम्परा का विशद विवेचन रोचक संदर्भों के साथ विवेचित किया है।

इस ऐतिहासिक कार्य में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, मुनि श्री अभयसागरजी महाराज, मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज का मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा ही इसके लेखन का संबल बना।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी, आचार्य श्री सुनीलसागर जी, आचार्य श्री विशुद्धसागरजी, आचार्य श्री सौरभसागर जी, निर्यापकमुनि श्री सुधासागर जी ने आशीर्वाद देते हुये कहा, ब्र. सुनील भैया ने इस कृति के द्वारा, पुरातत्व, इतिहास संस्कृति एवं परम्परा का संरक्षण करते हुये विस्मृत तथ्य को उद्घाटित करने का महान कार्य किया है।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ने जहाँ श्रवणबेलगोला में आचार्य भद्रबाहु से दीक्षा लेकर आत्मकल्याण किया है वही चंदेल शासक गोल्लदेश के अधिपति यशोवर्मन ने नंदि संघ के आचार्य वीरनंदि से श्रवणबेलगोला में ही दीक्षा लेकर गोल्लाचार्य के रूप में अतिशय प्रभावना कर इतिहास, साहित्य, अध्यात्म, संस्कृति एवं धर्म का उन्नयन किया है।

अंत में इस विस्मृत तथ्य का उद्घाटित करके इतिहास के एक और कीर्तिमान को स्थापित किया गया है, जो जैनधर्म के गौरव को वृद्धिंगत करेगा।

हाईकू

आचार्य श्री विद्यासागर जी

गिनती नहीं
आम में मौर आयी
फल कितने

मध्यरात्रि में
विभीषण आ मिला
राम-राम थे

राजा प्रजा का
वैसा पोषण करे
मूल वृक्ष का

धुन के पक्के
सिद्धात के पक्के हों
न हो उचक्के

कविता

कुंथुनाथ स्तुति (भुजंगप्रयास छन्द)

✻ रचयिता: निर्यापक श्रमण मुनिश्री योगसागरजी ✻

प्रभो कुन्थुनाथा करूणा निधी हैं।
अहिंसा तुम्हारी इसे धारते हैं ॥
अहो भाग्य मेरा इसे धारता हूँ।
महामोक्ष गामी अतिशीघ्र होवूं॥

प्रभो दर्शपाना महाभाग्य शाली।
अनेकों भवों की झरे पाप सारी॥
करो भक्ति अर्चा भले पुण्यकारी।
कलीकाल में तो यही कार्यकारी॥

नहीं जान पाया प्रभो धर्म को मैं।
किया धर्म जो भी बड़ा पाप ही में॥
उषा की प्रभाती हुई है निजी में।
किसी कीन चिन्ता रहूं मैं निजी में॥

त्रिलोकी जनों को सुभाषित वाणी।
अनेकान्त स्याद्वाद सर्वज्ञ वाणी॥
अनेकों कुलिंगी महो को जिहाये।
सभी विश्व प्राणी महासौख्य पाये॥

नहीं जानते हैं दुखी क्यों बने हैं।
सभी मिथ्यात्व से ही घिरे हुये हैं॥
अहंकार त्यागे निरंकार ध्यायें।
इसी मार्ग से ही तभी मुक्ति पायें॥

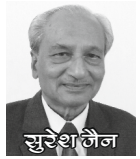

क्रमांक-25 वरिष्ठ नागरिक

हमेशा खुश कैसे रहें

बुजुर्गों को सदा खुश रहना चाहिये ताकि हर तरफ का सारा माहौल खुशी से भरा नजर आये।

✻ पहले तो अनावश्यक नम्बरों की तरफ ध्यान मत दीजिये, जैसेकी आयु, भार, लम्बाई इत्यादि
✻ हमेशा खुश दिल मित्रों को साथ रखिये चिड़चिड़े व्यक्ति आपको गिराते ही हैं।
✻ हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहिये कम्प्यूटर, शिल्पकारी एवं बागबानी के बारे में ज्यादा सीखिये।
✻ अपने दिमाग को खाली मत बैठने दीजिये, क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है और शैतान का नाम अलजिमर है।
✻ छोटी छोटी बातों का आनंद लीजिये।
✻ अकसर लम्बी और जोरदार हंसी हंसिए! तब तक हंसे जब तक आप की सांस न फूल जाए।
✻ यदि आप का कोई मित्र है जो कि आपको बहुत हंसाता है, उसके साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताइये।

कभी कभी आंसू भी आते हैं - संसार की कुछ घटनाओं के कारण कभी-कभी आंसू भी आते हैं । विशेष तौर पर पारिवारिक कारणों से, शोक मनाईये और आगे बढ़िये, हमारी पूरी जिन्दगी में केवल एक व्यक्ति है जो हमारे साथ सदा रहता है और वह व्यक्ति है आप स्वयं! जब तक आप जिन्दा हैं, जिन्दगी को भरपूर जिये। जिसे आप प्यार करते हैं उसे ही अपने इर्द गिर्द रहने दीजिये। वह आपका परिवार हो सकता है, पालतू पशु, जिन चीजों को आप संभाल कर रखना चाहते हैं, संगीत, पौधों, अपनी प्रिय रूचिया हॉबी इत्यादि।

अपनी सेहत पर विचार कीजिये- यदि आप की सेहत ठीक है तब ही आप खुश रह सकते हैं। यदि आपकी सेहत अच्छी है उसे सुरक्षित रखिये। अगर अस्थिर है तो उसे सुधारियें। अगर यह आपके द्वारा सुधार करने के बाद भी अस्थिर है तो इसके लिये सहायता लीजिए।

नीचे लिखी बातें कभी भी काम आ सकती हैं -

✻ जीवन में आने वाली हर चुनौती स्वीकार करें।
✻ अपनी पंसद की चीजों के लिये खर्चा करें।

- आप कितना भी बुरा नाचते हों, फिर भी नाचिये, जिस खुशी को दूसरे महसूस करते हैं, आप भी उस खुशी को महसूस कीजिये।
- फोटो के लिये पागलों जैसे पोज दीजिये, बिल्कुल छोटे बच्चे बन जायें।
- हर पल को खुशी से जीने को ही जिंदगी कहते हैं।
- जो मिला है उसी के साथ खुश रहो।
- काम में खुश रहो, आराम में खुश रहो।
- आज पनीर नहीं तो दाल में खुश रहो।
- आज गाड़ी नहीं तो पैदल में खुश रहो।
- जिसे देख नहीं सकते उसकी आबाज-याद में खुश रहो।
- बीता हुआ कल ला चुका है, उसकी मीठी याद में ही खुश रहो।
- आने वाले कल जा पता नहीं, इंतजार में ही खुश रहो।
- हंसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश रहो।
- जिंदगी है छोटी हर हाल में खुश रहो।
- जिन लोगों से प्यार करते हैं, जब भी मौका मिले इन विचारों को उनके साथ अवश्य सांझा कीजिये ?
- अपने आप को किसी से कम मत समझें।
- अपने आप की किसी से तुलना मत करे।
- कोई आपकी उपयोगिता कम नहीं कर सकता।
- कोई आपकी अहमियत कम नहीं कर सकता।

कविता

अपनी ही हो ये विश्व धरा

डॉ. निर्मल शास्त्री

भेद भाव से रहित रहें हम, भेद करें न अपनों से ।
धर्म जाति का भेद नहीं हो, मानव में मानवता से ॥
जिस देश में नर रहते मिलकर, वह देश सदा उन्नति करता।
प्राणी रक्षा युत जीवन चलता, भाव सदा अपने पन का रहता।
भेद मिटा हम एक बने, नेक बने जीवन हमारा ।
मिल जुल रहना सीखे, अपनी ही हो ये विश्व धरा ॥

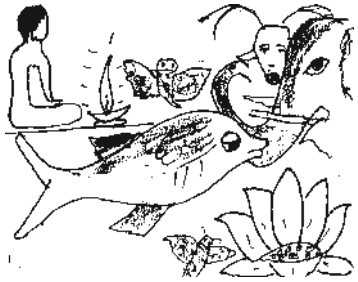

अपने लिवर (यकृत) को जानें व बीमारियों से बचने के उपाय

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

विश्व लिवर दिवस 19 अप्रैल को मनाया जाता है जिसका उद्देश्य मनुष्यों को इसके प्रति जागृत करने का होता है। लिवर, यकृत, जिगर या कलेजा जो पेट ऊपरी दायें भाग में पसलियों के अंदर होता है। इसके पास ही डायफ्रॉम होता है जो सीना और पेट को अलग करता है। लिवर मानव शरीर का सबसे बड़ा अंग है जो त्वचा के बाद दूसरा सबसे बड़ा भाग है। औसतन शरीर वाले व्यक्ति में त्वचा 10.886 ग्राम, लिवर 1.560 ग्राम होता है जो पुरुषों की तुलना में महिलाओं में 10-15% छोटा होता है। यह दो मुख्य भागों में बाई तथा दाई लोब में विभक्त होता है व इसकी ऊपरी सतह उभरी रहती है तथा दाई निछली सतह अनियमित होती है व आड़ी दरार होती है।

लीवर 500 से ज्यादा अलग-अलग तरह के कार्य करता है जिसमें प्रमुख कार्य:-

1. लिवर शरीर में सबसे बड़ा रासायनिक कारखाने की तरह कार्य करता है, पेट और आंतों से निकलने वाला सारा रक्त लिवर से होकर गुजरता है किसी भी समय लिवर में कुल रक्त का 10% होता है, और यह प्रति मिनट 1400 एम.एल. रक्त को पम्प करता है व रक्त में अधिकांश रासायनिक स्तरों को नियंत्रित करता है।
2. लिवर एक बैटरी की तरह कार्य करता है इसमें शर्करा या कार्बोहाईड्रेट संग्रहित होता है और जब भी शरीर को ऊर्जा लिवर में जमा न हो तो रक्त में शर्करा का स्तर गिर जाता है। और व्यक्ति कोमा में जा सकता है जिसे यह बचाता है। यह वसा और प्रोट्रीन को संसाधित करने में मदद करता है उन्हें प्रयोग करने योग्य ऊर्जा में परिवर्तित करता है।
3. लिवर शरीर के मेटाबोलिजम कायाँ को करते हैं इसमें कई प्रकार के एंजाइम्स होते हैं जो भोजन को पचाने में मदद करते है। लिवर पोषक तत्वों को हृदय और शरीर के हर हिस्से तक पहुँचाता है। पाचन क्रिया के दौरान शरीर में अमोनिया गैस बनती है जिसे लिवर यूरिया में बदलकर पेशाब के साथ बाहर निकलता है। लिवर में पित्त के कुछ तत्व लवण जो चिकनाई को कार्बेनिक एसिड तथा पानी के अंतिम पदार्थों को तोड़ देता है।
4. लिवर खून जमाने वाले प्रोथ्रोमबिन (Prothrombin) तथा फाइब्रिनोजेन (Fibrinogen) को बनाता है जो किसी दुर्घटना आदि में चोट लगने की स्थिति में अत्याधिक रक्त स्त्राव को रोकता है।
5. यह हार्मोन विनियमन द्वारा इंसुलिन जैसे हार्मोन के उत्पादन और संतुलन में मदद करता है।
6. लिवर विषाक्त पदार्थो जैसे हानिकारक व नशीली दवाईयों व शराब के दुष्प्रभावों को नष्ट करता है व शरीर से बाहर निकालता है।
7. यह शरीर के तापमान को बनाये रखता है।

8. लिवर आहारनली में सोखे गये तथा शरीर के अन्य किसी स्थान पर सुरक्षित रखे गये पोषक तत्वों को उत्तकों के लिये सुधारता है एवं व्यर्थ व विषैले पदार्थों को पित्त तथा मूत्र द्वारा निष्काशित होने के योग्य बनाता है।

लिवर में गड़बड़ी होने के लक्षण :- 1.भूख न लगना, भोजन करने के बाद लिवर वाले हिस्से में दर्द होना, भोजन न पचना।

2. वजन कम होना, पेट में मरोड रहना, गैस बनकर डंकारे आना, मुंह से गंदी बदबू आना, स्वाद बिगड़ना, सफेद रंग का मल होना, बार-बार मलेरिया, टाइफाइड व ज्वर होना।

3. शरीर पीला पड़ना व खुजली होना, त्वचा पर सफेद धब्बे, गहरे रंग की पेशाब।

4. थकान भरी आँखे और नीचे काले धब्बे होना, आँखों का सफेद भाग पीला नजर आना, चोट लगने पर घाव जल्दी ठीक नहीं होना आदि।

लिवर के प्रमुख रोग- लिवर में सूजन, सिरोसिस, नक्रोसिस, पीलिया, लिवरशोथ, लिवर का प्रदाह, शिशु लिवर (Infantile Liver) पित्ताशय और पित्त बाहनी का कैंसर आदि

सावधानियाँ- 1. जीवन शैली में बदलाव- सेहतमंद आहार- फाइवर युक्त भोजन, फल व सब्जियाँ में हरी सब्जियाँ, पत्तेदार सब्जियाँ, खट्टे फल, नियमित रूप से घूमना, व्यायाम योग, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना।

2. **वजन नियंत्रण-** शुगर वाली चीजें नहीं खाना, मिठाईयों का सेवन नहीं करना, नमक की सीमित उपयोग, वसायुक्त आहार, मलाईयुक्त दूध, आईस्क्रीम , फास्टफूड, ठंडे पेय, डिब्बा बंद भोजन परहेज करना, शराब और अल्कोहिक पदार्थों का निषेध, सब्जी में मसाला का उपयोग नहीं करें व घी तेल व तली वस्तुओं का प्रयोग कम से कम करें।

3. **घरेलु उपचार-** हल्दी का दूध लिवर से विषाक्त पदार्थ बाहर निकालने में सहायक हैं व कॉफी का सेवन रोग फैलने की तीव्रता का रोकने में सहायक होता है। छाछ में हींग का बगार देकर जीरा, काली मिर्च व नमक मिलाकर भोजन के बाद पीने से फायदा होता है।

4. हेपेटाइटिस रोग नियंत्रण हेतु वैक्सीन लगवाना।

विशेष ध्यान रखें :- 1. मोटापे से 10-15 प्रतिशत तक लिवर रोग की संभावना बड़ जाती है। 2. शराब पीने वालों को लिवर रोग का खतरा दुगना ज्यादा होता है। 3. पुराना मलेरिया, ज्वर ठीक हो जाने के बाद भी लिवर रोग बना रहता है।

लिवर अति विशिष्ट गुणों से युक्त सबसे महत्वपूर्ण शारीरिक गतिविधियों के संचालन में योगदान देता है। यह एक मात्र अंग है जो पुनः निर्माण कर सकता है, यही कारण है कि कोई भी अन्य व्यक्ति अपने लिवर का एक हिस्सा देकर टांसप्लॉट द्वारा जिंदगी बचा सकता है। हमें इसकी सुरक्षा का ध्यान रखकर निरोगी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज से आराम मिल जाता है।

हास्य तरंग

1. वकील-अभियुक्त से 10 सितम्बर की रात्रि 7.00 बजे आप क्या कर रहे थे अभियुक्त- पत्नी के हाथ से बनाया भोजन कर रहा था। वकील- उसी रात को 8 बजे क्या कर रहे थे। अभियुक्त- जी पेट दर्द से तड़फ रहा था। वकील- बिलकुल झूठ बोल रहे हो ? तुमने ही खून किया है। अभियुक्त- कभी मेरी पत्नी के हाथ से बना भोजन खाकर देखो तो मालूम पड़ जायेगा।

2. पत्नी-पति से तुम झूठ बोलना कब बंद करोगे ? पति- लेकिन मैंने झूठ कब बोला? पत्नी-अच्छा आज सुबह बच्चों से कह रहे थे कि तुम किसी से नहीं डरते।

3. मरीज- डॉक्टर साहब मुझे सीने में तेज दर्द हो रहा है । डॉक्टर-आपका कार्डियोग्राम लेना होगा। मरीज- डॉक्टर साहब मेरे पास इतने रूपये अभी नहीं है। डॉ. आप हमारे परिचित हो बाद में दे देना। कार्डियोग्राम देखकर आप भारी काम नहीं कर सकते हो ? हाँ- हल्का काम कर सकते हो। कुछ दिन बाद मरीज डॉक्टर को रूपये देने आया डॉक्टर ने पूंछा क्या करते हो। मरीज- पहले में ताला तोड़कर चोरी करता था अब जेब काटता हूँ।

4. एक व्यक्ति दूसरे से माफ करने में ऊँचा सुनता हूँ। आप मुझसे एक घंटे से लगातार बात कर रहे हैं और मैं आपकी बात सुन नही सकता। दूसरा जोर से बोलते हुये माफ करना आपको गलत फहमी हुई मैं बात नहीं कह रहा था बल्कि चिंगम खा रहा था।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ कददू तोड़ो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- 15-20 संख्या के दो दलों में से एक पूर्व खेल की तरह हाथ में हाथ डालकर मजबूत गोला बनाकर बैठेंगे। यह कददू की बेल हुई। सीटी बजने पर निश्चित किये गये। समय (एक डेढ़ मिनिट) में दूसरे दल वाले इसमें से जितने कददू तोड़ लेंगे। उनके उतने कददू अंक हो जायेगे। अब यही काम दूसरे दल वाले करेंगे। जो दल अधिक अंक प्राप्त करेगा। वह विजयी होगा।

✻ दीवार तोड़ो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- पूर्व खेल की तरह दोनो दल हाथ में हाथ डालकर दीवार बनायेंगे। दोनों की पीठ आपस में मिली रहेगी। सीटी बजने पर दोनों दल एक-दूसरे को धकेलने का प्रयास करेंगे। जो दीवार तीन मीटर दूरी तक खिसक जायेगी। वह दल पराजित होगा।

✻ राम, राजा, रावण

खिलाड़ियों की संख्या- 8-10

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- दो दल शिक्षक की ओर मुँह करके पास-पास खड़े होंगे। दोनों का नाम क्रमशः राम और राजा रहेगा। शिक्षक द्वारा राम कहने पर राम दल वाले खिलाड़ी लगभग 20मीटर दूर (या कोई पेड़ दीवार आदि) तक दौड़ेंगे तथा राजा दल उन्हें पकड़ेगा। जो पकड़े वे बाहर हो जायेंगे। राजा कहने पर इसका विपरीत कार्य होगा। रावण कहने पर सब अपने स्थान पर तुरन्त बैठेंगे तथा राकेश, राजेश, राधेश्याम आदि कोई शब्द बोलने पर सब मूर्तिवत खड़े रहेंगे। जो इसमें गलती करेगा। वह बाहर हो जायेगा। जिस दल के सब स्वयंसेवक बाहर हो जायेंगे। वह पराजित होगा।

बाल कहानी

मास्कया लिपिस्टिक

सुबह के 10 बज रहे थे मित्र संघ के कार्यकर्त्ता कोरोना से अपने नगर को बचाने के लिये कार्य कर रहे थे पुलिस उनके साथ में थी आलोक उन सबका नेतृत्व कर रहा था आलोक की मित्र मंडली सारे नगर में प्रवेश होने वाली गाड़ियों को रोक कर उन्हें माक्स लगाने की प्रेरणा दे रहे थे नगर के संभ्रान्त परिवार की एक गाड़ी ने हार्न बजाया। आलोक के मित्रों ने उसे रोका गाड़ी का फाटक खोलकर एक बहन बाहर निकली जिसका नाम रश्मि था। रश्मि थोड़ी सी मेकप पसन्द थी वह सदैव परफ्यूम लिपिस्टिक आदि को लगाकर रखती थी रश्मि अपने परिवार के साथ एक शादी में जा रही थी आलोक ने देखा कि पूरी गाड़ी में सभी लोग मास्क लगायें हैं सिर्फ रश्मि मास्क नहीं लगाये थी। रश्मि और आलोक कभी क्लासमेट रहे थे रश्मि आलोक के सादगी से रहने का भाषण सदैव सुनती रही थी आलोक ने जैसे ही रश्मि से मास्क लगाने को कहा तो वह चिढ़ गयी और बोली।

आलोक अपनी नेतागिरि हर जगह नहीं दिखाया करे और मेरे सामने तो खासतौर से नहीं मालूम नहीं कि मैं शादी में जा रही हूँ। और अगर तेरा ये मास्क लगा लूंगी तो फिर मैं जो ये लिपिस्टिक लगाये हुये हूँ वो कैसे दिखेगा। आलोक ने कहा रश्मि तुम नहीं सुधर सकती हो तुम्हें सिर्फ दिखावा करना ही पसन्द है परन्तु ये दिखावे का समय नहीं है सुरक्षा का समय है इस समय अगर नहीं बची और कोरोना हो गया तो बहुत परेशान हो जाओगी। कोरोना की दूसरी लहर चल रही है जरूरी क्या है लिपिस्टक दिखाना या मास्क से जीवन बचाना फैसला तुम्हें करना है जाओ, रश्मि शादी में चली गई दो दिन बाद लौटकर आई आलोक को पता लगा रश्मि का स्वास्थ्य ठीक नहीं है शादी के कार्यक्रम से लौटने के बाद बी.एम.सी सागर में भर्ती है उसे कोरोना पॉजीटिव हो गया है। आलोक का मन बार-बार कह रहा था कि कब रश्मि मिले और कह दें कि रश्मि तुम्हारा गलत फैसला दिखाने की चाहत ने जिन्दगी मौत के मुहाने पर तुम्हे खड़ा कर दिया है।

संस्कार गीत

ज्ञान के सागर विद्यासागर

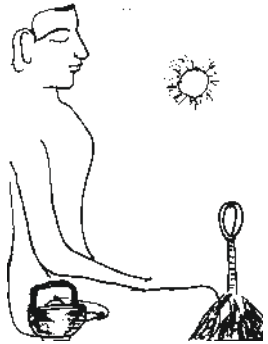

जिनके तन पर आभषूण न प्रकृति रूप से सुन्दर हैं
समता मूरत गुरु विरागी धारें भेष दिगम्बर हैं

1.
इस कलियुग में मुनि साधना
समिति महाव्रत जो पाले
अट्ठाईस गुण मूल से
धर समता मम अद्य टाले
इनके दर्शन से पथ मिलता
ये तो मुनि दिगम्बर हैं

2.
तत्त्व ज्ञान सद्बोध प्रकाशक
सम्यक् दृष्टि साधक हैं
आगम चर्या से अनुबंधित
नहीं किसी को बाधक हैं
ज्ञानध्यान मय सहज साधन
सच्चे गुरु दिगम्बर हैं

3.
ज्ञान के सागर विद्यासागर
कठिन तपस्या धारी हैं
आतम अनुभूति के रसिया
वीतराग अविकारी हैं
सदा रचा इतिहास इन्होंने
शिवपथ राही दिगम्बर हैं

बाल कविता

बारह भावना जो जी भाता

बारह भावना जो भी भाता
वैरागी सच्चा बन जाता
अनित्य और अशरण संसार
एकत्व भिन्नत्व अशुचितनकार
आस्रव संवर निर्जर लोक
दुर्लभ बोधि धर्म हर शोक
भावना द्वादश जग दुखहारी
बने जीव निज समताधारी
सामायिक में मन लग जाता
द्वादश अनुप्रेक्षा जो भाता

समाचार

समाधिमरण

हातोद इंदौर (म.प्र.)- आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका विचेतनमती माताजी का समाधिमरण हातोद ग्राम में 15 मार्च 2023 को प्रातः 7. 28 मिनट पर हुआ।

सम्मेदशिखर-आचार्य श्री मेरूभूषण महाराज जी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर मधुवन झारखंड में 17 मार्च 2023 को 9.45 मिनट पर उपाध्याय विप्रणतसागर महाराज सहित कई महाराजों के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

मुनिश्री विमलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कार्यक्रम सम्पन्न

उदयनगर- इंदौर में दिनांक 8 फरवरी से 15 फरवरी 2023 तक 512 मंडली सिद्धचक्र महामंडल विधान निःशुल्क सम्पन्न हुआ।

नसिया जी- इंदौर में 24 फरवरी से 4 मार्च 2023 तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान तथा 8 मार्च से 14 मार्च 2023 तक कुमेड़ी में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुई।

स्मृति नगर- 18 मार्च से 26 मार्च 2023 तक 72 समवशरण महामंडल विधान 19 मार्च को भगवान बाहुबली स्वामी का गोम्मटगिरि महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ।

रजत दीक्षा दिवस

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में वृषभसागर आदि 23 मुनिराजों का रजत (25वाँ) दीक्षा दिवस 22 अप्रैल 2023 शनिवार को आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री विमलसागर जी महाराज, मुनिश्री अनंतसागरजी महाराज, मुनिश्री धर्मसागरजी महाराज, मुनिश्री भावसागर महाराज के सान्निध्य में मनाया जायेगा । दिनांक 23 अप्रैल रविवार को संस्कार सागर के रजत 25वें वर्ष पर अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन किया जायेगा जिसका विषय होगा संस्कार सागर अवदान मूल्यांकन।

डॉ. अखिल बंसल राष्ट्रीय गौरव पुरुस्कार से सम्मानित

जयपुर- समन्वय वाणी पाक्षिक का विगत 42 वर्षों से निरंतर संपादन व प्रकाशन कर पत्रकारिता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करते हुये विगत कुछ वर्षों से अस्थाई समूह व आशा इंटरनेशनल के माध्यम से साहित्यिक गतिविधियों एवं मानव सेवा व जीव दया के क्षेत्र में अलख जगाने वाले डॉक्टर अखिल बंसल अब किसी परिचय के मोहताज नहीं है। आपकी अनेक मौलिक व संपादित कृतियों ने आपका मान बढ़ाया है । समय-समय पर आपको पत्रकारिता साहित्य व समाज सेवा के लिये अनेक पुरुस्कार प्राप्त हो चुके हैं । जिनमें बुंदेलखंड साहित्य व संस्कृति परिषद के मंच से दैनिक भास्कर के सौजन्य से तत्कालीन राज्यपाल महामहिम आनंदीबेन पटेल द्वारा आपकी कृति क्रांतिवीर मर्दनसिंह के लिये छत्रसाल राष्ट्रीय पुरुस्कार, उम्मीद रत्न सम्मान वं 1 लाख 11 हजार की राशि से कुंदकुंद भारती दिल्ली द्वारा प्रदत्त आचार्य विद्यानंद पुरुस्कार सम्मिलित हैं ।

डॉ. अल्पना शुभि मारौरा का सम्मान

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के करकमलों से डॉ. शुभि मारौरा को (T.M.U.) के विशाल सभागार में सम्मानित किया गया, डॉ. शुभि मारौरा ने तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभाग से आर्यिका विशुद्धमति जी टीकाओं का अनुशीलन एवं योगदान नामक विषय पर (P.H.D.) की उपाधी अर्जित की है।

डॉ. शुभि मारौरा पं. सुरेश जैन मारौरा की पुत्रवधु है वह पंचबालयति मंदिर की विद्यासागर पाठशाला की संचालिका है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहती है, श्रुत सिद्धांत शोधपीठ एवं संस्कार सागर परिवार आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

बटन दबाऊंगा अमावस्या को

जब हमारा मार्बल का काम तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था। तब हमने एक नई मशीन मंगवायी यह मशीन बहुत आधुनिक थी । मशीन को लगाने में ही 4-5 महीने लग गये थे। इंजीनियरों ने जब हरी झंडी दे दी। यह मशीन चालू कर सकते हो, उसी दिन हम मशीन को दिखाने बाबा श्री को ले गये। बाबा ने मशीन के एक-एक हिस्से को सब बारीकों से देखा, जब वे देखकर के फेक्ट्री से बाहर निकलने लगे तो हमसे बोले बेटा यह मशीन कबसे काम करना शुरु करेगी।

मैंने कहा बाबा मशीन सोमवार से काम करनास शुरु करेगी और आप सोमवार को बटन दबायेंगे। बस मशीन काम करना शुरु कर देगी। बाबा ने मुझसे कहा बेटा अशोक अभी सोमवार के चार दिन बाकी है। चार दिन तक मशीन बन्द रहेगी। मेरे विचार से तो कल ही मशीन का कटन दब जाना चाहिये। मैने बाबा से विनम्र शब्दों में कहा कि बाबा कल तो अमावस्या है । अमावस्या को कैसे कटन दबेगा, तो बाबा ने कहा अमावस्या से अच्छी कोई तिथि नहीं होती बेटा अमावस्या तिथि और वार यदि खराब होते तो भगवान महावीर स्वामी अमावस्या को मोक्ष क्यो जाते ? और अमावस्या को दीपावली क्यों पड़ती । और सब लोग दीपक जलाकर अमावस्या के अंधेरे को क्यो भगाते। इसलिये बेटा अशोक अपन तो बटन कल अमावस्या को ही दबायेंगे । बाबा ने मशीन का बटन अमावस्या को ही दबाया।

इसलिये अगर पुण्य का उदय होता है। तो सब मुर्हुत ठीक हो जाते है। और यदि पाप का उदय हो तो अच्छे-अच्छे मुर्हुत असफल हो जाते हैं। बाबा के इस कथन में मुझे दम लगी।

अशोक पाटनी, आर.के.मार्बल

वर्ग पहेली 282

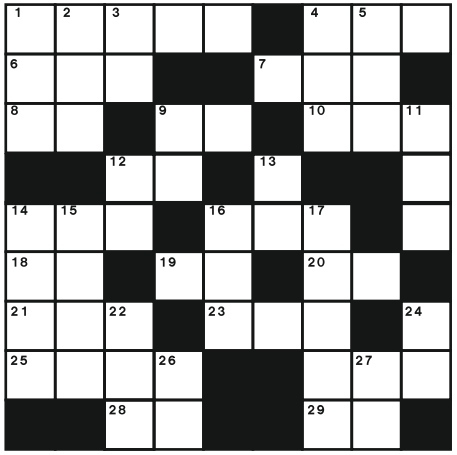

बाये से दाये

1. निर्यापक श्रमण योगसागर जी का पूर्वनाम -5
6. काम, श्री कृष्ण जी का एक नाम -3
7. एक ऋतु, पतझड़ -3
8 क्रिकेट की दौड़, -2
9. चित्त, अंतः करण -2
10. समझदारी का संक्षेप -3
12. चरण, पग -2
14. नगर -3
16. बैठने की स्थिति -3
18. आपदा, आपत्ति -2
19. सब्जी, शाकपत्र -2
20. जीत, विजय -2
21. पानी का एक स्त्रोत -3
23. मकर, घड़ियाल -3
25. बारीक महीन कपड़ा -4
27. बांधने का पर्यायवाची -3
28. एक अभिप्राय, श्रुतज्ञान का अंश -2
29. गरीब, दुखी -2

ऊपर से नीचे

1. देव का नाम, जो कभी न मरे -3
2. पुत्र, आनंद -3
3. शरीर, काया -2
4. 23वें जैन तीर्थंकर, पत्थर जो लोहे को सोना बनाये -3
5. लय, ताल -3
11. ऊपर से नीचे गिरने वाली जलधारा -3
13. स्वाद, जिव्हा इन्द्रिय का विषय -2
14. औस की बूंद -4
15. जहर विष -4
16. शास्त्र श्रुत -3
17. दृष्टिरोध -5
20. रमने का भाव -4
24. मतस्य मछली -2
26. ताल रिदम गाने की गीत -2
27. रकम, रूपया, पैसा -2

वर्ग पहेली 281 का हल

1 सु	2 रे	श	3 म	4 लै	या		5 दि	6 व्य
7 ग	त		8 त	ला		9 सु	न	य
म		10 दा	ल		11 प	र		
	12 श	रा	ब		र		13 ज	14 ग
15 स	त			16 श	म		17 ह	र
म		18 श	ब	री		19 त	र	ल
20 य	म	क		21 र	22 ह	म		
23 सा	ग		24 गा		ल		25 का	26 ल
र		27 न	य	न		28 सु	म	न

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

हम बच्चे भोले-भाले

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

आशीर्वाद

रजत मुनि दीक्षा दिवस समारोह

संस्कार सागर
रजत वर्ष समारोह

सान्निध्य

परम पूज्य मुनि श्री विमलसागर जी महाराज | परम पूज्य मुनि श्री अनंतसागर जी महाराज | परम पूज्य मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज | परम पूज्य मुनि श्री भावसागर जी महाराज

दिनांक: 21 से 23 अप्रैल 2023
स्थान : श्री दिगम्बर पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इंदौर

संस्कार सागर
25 वर्ष

कार्यक्रम

दिनांक : 22 अप्रैल, शनिवार

प्रातः 6 बजे- अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, गुणानुवाद सभा, महाराज जी के संस्मरण
दोप. 3 बजे- शंका समाधान, तत्वचर्चा, ✻ सांय 6 बजे- आचार्य भक्ति, भक्तामर अनुष्ठान, आरती भजन

दिनांक : 23 अप्रैल, रविवार

प्रातः 6 बजे- अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, आचार्य छत्तीसी विधान, महाराज जी के प्रवचन, अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन
दोप. 3 बजे- अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन, विषय- संस्कार सागर अवदान मूल्यांकन

https://youtube.com/@sanskarsagarsamooh4694
https://www.facebook.com/profile.php?id=100063807803080&mibextid=ZbWKwL

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/03/2023, पोस्टिंग दिनांक : 03/04/2023